बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन 100

सत्र: 2024-25

(कक्षा - 10)

हिन्दी

पढ़ेगा राजस्थान

बढ़ेगा राजस्थान

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट
डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम
QR CODE स्कैन करें

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

Scanned with OKEN Scanner

संयोजक कार्यालय - संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन - 100 मार्गदर्शक

बजरंग लाल

संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चूरू संभाग, चूरू

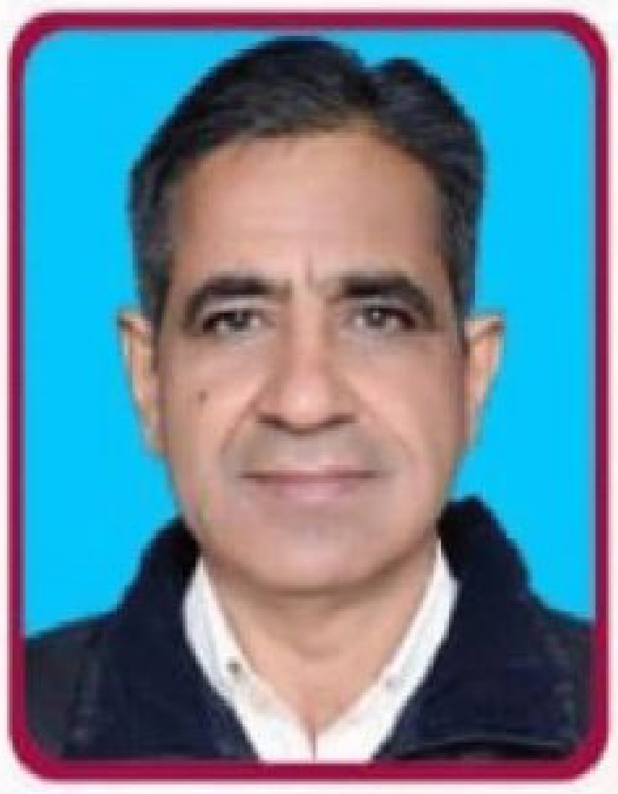

महेन्द्र सिंह बड़सरा

संभागीय कॉडिनेटर, शेखावाटी मिशन 100
संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

संकलनकर्त्ता टीम : हिन्दी

रामावतार भदाला

तकनीकी सहयोगी शेखावाटी मिशन 100

मन्नाराम मिडल

रा. उ. मा. वि. -सामी
धोद (सीकर)

सरोज धायल

पीएम श्री रा. उ. मा. वि.
खाटूश्यामजी (सीकर)

नवनीत कुमार शर्मा

राउप्रावि, कंवरपुरा
(सीकर)

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न–पत्र की योजना 2024–2025

कक्षा – **10**
विषय – हिन्दी
अवधि –3 घण्टे 15 मिनट पूर्णांक–80

1. उद्देश्य हेतु अंकभार–

क्र.सं.	उद्देश्य	अंकभार	प्रतिशत
1.	ज्ञान	18	22.5
2.	अवबोध	31	38.75
3.	ज्ञानोपयोग	14	17.5
4.	कौशल	12	15.0
5.	विश्लेषण	5	6.25
	योग	80	100

2. प्रश्नों के प्रकारवार अंकभार–

क्र.सं.	प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रतिप्रश्न	कुल अंक	प्रतिशत (अंको का)	प्रतिशत (प्रश्नों का)	संभावित समय
1.	वस्तु निष्ठ	15		15	18.75	28.30	25
2.	रिक्त स्थान	04		04	0.5	7.14	10
3.	अतिलघुत्तरात्मक	20		20	2.5	37.73	50
4.	लघुत्तरात्मक	07		14	17.5	13.30	40
5.	दीर्घउत्तरीय	3		09	11.25	5.66	40
6.	निबंधात्मक	4		18	22.5	7.54	30
	योग	53		80			195 मिनट

विकल्प योजना : खण्ड 'स' एवं 'द' मेंहैं

3. विषय वस्तु का अंकभार–

क्र.सं.	विषय वस्तु	अंकभार	प्रतिशत
1	क्षितिज गद्य	18	22.5
2	क्षितिज पद्य	15	18.75
3	कृतिका	11	13.75
4	व्यवहारिक व्याकरण	10	12.5
5	रचना–पत्र	4	5.0
6	निबंध	6	7.5
7	विज्ञापन	4	5.0
8	अपठित गद्य	6	7.5
9	अपठित पद्य	6	7.5

नोट :– कवि/लेखक परिचय के 3 अंक क्षितिज गद्य जोड़कर गणना की गई हैं।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न–पत्र ब्ल्यूप्रिन्ट 2024–2025

कक्षा –10 विषय :–हिन्दी समय 3 घण्टे 15 मिनट पूर्णांक– 80

क्र.सं.	उद्देश्य इकाई/उपइकाई	ज्ञान						अवबोध						ज्ञानोपयोग						कौशल						विश्लेषण						योग
		बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुउत्तरात्मक	लघुउत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबंधात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुउत्तरात्मक	लघुउत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबंधात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुउत्तरात्मक	लघुउत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबंधात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुउत्तरात्मक	लघुउत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबंधात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुउत्तरात्मक	लघुउत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबंधात्मक	
1	क्षितिज गद्य					3(1)		1(4)		1(4)							2(2)	1(-)						1(1)						1(-)		18(12)
2	क्षितिज पद्य							1(4)		1(4)							2(2)	1(-)						1(1)						1(-)		15(11)
3	कृतिका						1(-)	1(3)									2(2)								2(1)						1(-)	11(6)
4	व्यवहारिक व्याकरण	1(4)	1(4)		2(1)																											10(9)
5	रचना–पत्र						1(-)																		2(1)						1(-)	4(1)
6	निबंध						1(-)																		4(1)						1(-)	6(1)
7	विज्ञापन						2(-)																		2(1)							4(1)
8	अपठित गद्य									1(6)																						6(6)
9	अपठित पद्य									1(6)																						6(6)
	क्षितिज गद्य																															
	योग	4(4)	4(4)		2(1)	3(1)	5(-)	11(11)		20(20)							12(6)	2(-)						2(2)	10(4)					2(-)	3(-)	
	सर्वयोग	18(10)						31(31)						14(6)						12(6)						5(-)						80(53)

विकल्पों की योजना :– खण्ड 'स' एवं 'द' में प्रत्येक में एक आंतरिक विकल्प है नोट:–कोष्ठक के बाहर की संख्या 'अंकों' की तथा अंदर की संख्या 'प्रश्नों' के द्योतक है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

माध्यमिक परीक्षा, 2025

Secondary Examination, 2025

नमूना प्रश्न–पत्र

Model Paper

विषय – हिन्दी

Sub : Hindi

कक्षा – 10वीं

Class: 10^{th}

समय : 03 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड है, उनके उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

BSER

Scanned with OKEN Scanner

'खण्ड – अ'

प्र.1) निम्नलिखित बहुविकल्पात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए:– (1X15=15

i) निम्नलिखित संज्ञा शब्दों में व्यक्तिवाचक संज्ञा का उदाहरण है –

अ) मित्रता ब) लड़का
स) पर्वत द) हिमालय

ii) 'मानसिक' शब्द में प्रत्यय है ?

अ) ईक ब) इक
स) सिक द) क

iii) निम्नलिखित शब्दों में से यण संधि का उदाहण है –

अ) महर्षि ब) नायक
स) सदैव द) स्वच्छ

iv) 'शताब्दी' शब्द में समास का प्रकार है –

अ) द्विगु समास ब) द्वन्द्व
स) तत्पुरूष समास द) कर्मधारय समास

v) 'नेताजी का चश्मा' पाठ में नेताजी की मूर्ति बनाने वाला था –

अ) मास्टर हीरा लाल ब) मास्टर मोती लाल
स) मास्टर नंद लाल द) मास्टर मदन लाल

vi) 'झूठा सच' नामक उपन्यास के लेखक हैं –

अ) यशपाल ब) रामवृक्ष बेनीपुरी
स) मन्नू भण्डारी द) यतीन्द्र मिश्र

vii) मन्नू भण्डारी के साहित्य का दायरा बढ़ाने में सर्वाधिक योगदान रहा –

अ) उनके पिता का ब) डॉ. अम्बा लाल का
स) शीला अग्रवाल का द) राजेन्द्र वर्मा का

viii) 'शहनाई' किस प्रकार का वाद्य यंत्र है –

अ) तत् वाद्य ब) अवनद्ध वाद्य
स) घनवाद्य द) सुषिर वाद्य

ix) वात्सल्य के श्रेष्ठ कवि हैं –

अ) तुलसी ब) सूरदास
स) रहीम द) देव

Scanned with OKEN Scanner

x) "नाथ संभु धनु भंजनिहारा/होइहि कोउ एक दास तुम्हरा" ।।

उपर्युक्त काव्य पंक्ति किसकी ओर संकेत करती है –

अ) राम ब) लक्ष्मण

स) भरत द) शत्रुघ्न

xi) 'कामायनी' के रचयिता हैं –

अ) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ब) नागार्जुन

स) मंगलेश डबराल द) जयशंकर प्रसाद

xii) 'यह दंतुरित मुस्कान' कविता का केन्द्रीय पात्र है –

अ) स्वयं लेखक ब) माता

स) बच्चा द) वृद्ध

xiii) 'माता का अँचल' पाठ में लेखक के पिता लेखक को किस नाम से पुकारते थे–

अ) भोलानाथ ब) शिवनाथ

स) गोरखनाथ द) दरिद्र नारायण

xiv) साना–साना हाथ जोड़ि पाठ में यात्रा से लौटते समय जितेन ने किनके 'फुट प्रिंट' की जानकारी दी –

अ) गुरू गोविन्द सिंह ब) गुरूनानक

स) गुरू अंगद द) गुरू रामदास

xv) हिरोशिमा की घटना पर आधारित पाठ का नाम है –

अ) परमाणु ब) मैं कैसे लिखता हूँ?

स) मैने क्यों लिखा? द) मैं क्यों लिखता हूँ?

प्र.2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए – **(I से iv)** **(1x4= 4)**

(i) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता या लेखक (स्वयं) अपने लिए करता है उसे ....सर्वनाम कहते हैं।

(ii) 'इस गेंद को मत फैंको' वाक्य में ....विशेषण हैं।

(iii) ऐसे शब्द जिनके रूप में लिंग, वचन, काल आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता ....कहलाते हैं।

(iv) 'संयोग' शब्द में ....उपसर्ग हैं।

BSER

Scanned with OKEN Scanner

प्र.3) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए । (1 से VI) (1X6 =6)

किसी आती हुई आपदा की भावना या दुःख के कारण के साक्षात्कार से जो एक प्रकार का आवेग पूर्ण अथवा स्तंभकारक मनोविकार होता है उसी को भय कहते हैं। क्रोध दुःख के कारण पर प्रभाव डालने के लिए आकुल करता है और भय उसकी पहुँच से बाहर होने के लिए। क्रोध दुःख के कारण के स्परूप बोध के बिना नहीं होता। यदि दुःख का कारण चेतन होगा और ये समझा जायेगा कि उसने जानबूझकर दुःख पहुंचाया है तभी क्रोध होगा। पर भय के लिए कारण का निर्दिष्ट होना जरूरी नहीं, इतना भर मालूम होना चाहिए कि दुःख या हानि पहुंचेगी।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ii) भय को परिभाषित कीजिए

(iii) दुःख के कारण पर प्रभाव डालने के लिए कौन आकुल करता है

(iv) गद्यांश मे से 'विपत्ति' शब्द का पर्यायवाची शब्द ढूंढकर लिखिए?

(v) क्रोध कब प्रकट होता है ?

(vi) भय के लिए क्या जरूरी नहीं ?

प्र.4) निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए ? (1 से VI) (1X6 =6)

<u>मैं जग–जीवन का भार लिए फिरता हूँ,</u>
<u>फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,</u>
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।

मैं स्नेह–सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ii) उपर्युक्त पद्यांश में रेखांकित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए

(iii) काव्यांश में कवि किसका पान करता है ?

(iv) जग किसको पूछता है ?

Scanned with OKEN Scanner

(v) उपर्युक्त पद्यांश की मूल संवेदना लिखिए ?

(vi) कवि किसका गान करता है ?

'खण्ड – ब'

निम्नलिखित लघुत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए–

प्र.5) 'संगीत' को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिन्दा रखा।'' उपर्युक्त कथन किसके संदर्भ में व क्यों कहा गया हैं ? 2

प्र.6) हमारी संस्कृति पर मनीषियों का क्या प्रभाव पड़ा पठित पाठ के आधार पर लिखिए। 2

प्र.7) संगतकार का गायन में योगदान लिखिए। 2

प्र.8) आत्मकथ्य कविता का मूल भाव लिखिए। 2

प्र.9) ''मैडम यह मैदानी नहीं पहाड़ी इलाका है। यहाँ कोई भी आपको चिकना वर्बीला नहीं मिलेगा।'' उपर्युक्त वाक्य किसने ? क्यों कहा ? 2

प्र.10) 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर ग्रामीण जीवन में बच्चों के जीवन में खेलों का महत्त्व लिखिए। 2

प्र.11) 'आँखे मूंदना' मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए। 2

'खण्ड – स'

प्र.12) निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –(i से iv) (1x4=4)

गाड़ी छूट रही थी सैकण्ड क्लास के एक छोटे डिब्बें को खाली समझकर जरा दौड़कर उसमें चढ़ गए। अनुमान के प्रतिकूल डिब्बा निर्जन नहीं था। एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे। सामने दो ताजे चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे डिब्बे में हमारें सहसा कूद जाने से सज्जन की आँखों में एकान्त चिन्तन में विघ्न का असन्तोष दिखाई दिया सोचा हो सकता है यह भी कहानी के लिए सूझ की चिन्ता में हो या खीरे जैसी अपदार्थ वस्तु का शोक करते देखे जाने के संकोच में हो।

(i) उपर्युक्त गद्यांश में कहाँ का दृश्य प्रस्तुत किया गया है?

(ii) लेखक ने डिब्बे को लेकर क्या अनुमान लगाया था ?

(iii) डिब्बे में बैठे सज्जन की आँखों में असन्तोष क्यों दिखाई दिया?

(iv) डिब्बे की बर्थ पर कौन बैठा हुआ था।

Scanned with OKEN Scanner

<u>अथवा</u>

बालगोबिन भगत की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा। इकलौता बेटा था वह! कुछ सुस्त और बोदा सा था किन्तु इसी कारण बालगोविन्द भगत उसे और भी मानते उनकी समझ में ऐसे आदमियों पर ज्यादा नजर रखनी चाहिए ये प्यार के ज्यादा हकदार होते हैं। पतोहू बड़ी ही सुभग और सुशील मिली थी। घर की पूरी प्रबन्धिका बनकर भगत को बहुत कुछ दुनियादारी से निवृत कर दिया। उनका बेटा बीमार है इसकी खबर रखने की लोगों का कहाँ फुर्सत! किन्तु मौत तो सबका ध्यान खींच कर ही रहती हैं।

(i) बालगोबिन भगत की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष कब देखा गया ?

(ii) बालगोबिन भगत अपने बेटे के प्रति अधिक लगाव क्यों रखते थे।

(iii) भगत की पतोहू की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

(iv) किस खबर ने लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा।

प्र.13) निम्नलिखित पठित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (i से iv) (1X4=4)

बिहसि लखनु बोले मृदुबानी। अहो मुनिसु महा भट मानी ।।

पुनि. पुनि मोहि दिखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।

इहाँ कुम्हड्बतिया कोउ नाहि। जे तर्जनी देखि मरि जाही ।।

देखि कुठारू सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमान ।।

भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहउ सहौं रिस रोकी।।

सुर महिसुर हरिजन अरू गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।।

(i) काव्यांश में कवि ने 'महाभट' किसे कहा हैं ?

(ii) 'इहा कुम्हड़बतिया कोउ नाहि से क्या आशय है?

(iii) रघुकुल में किन पर अपनी वीरता नहीं दिखाई जाती ?

(iv) उपर्युक्त काव्यांश में किन–किन के मध्य संवाद है ?

<u>अथवा</u>

फसल क्या है ?

और तो कुछ नहीं है वह

नदियों के पानी का जादू है वह

हाथों के स्पर्श की महिमा है

Scanned with OKEN Scanner

भूरी–काली संदली मिट्‌टी का गुण धर्म है

रूपान्तर है सूरज की किरणों का

सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का

(i) कवि के अनुसर फसल क्या है ?

(ii) उपर्युक्त काव्यांश में किन मानवीय मूल्यों की ओर संकेत किया गया है?

(iii) फसल किसका रूपान्तर है ?

(iv) फसल को किसका संकोच बताया गया है।

प्र.14) 'नही साब! वो लँगड़ा क्या जायेगा फौज में। पागल है पागल!' (3)

पान वालें के द्वारा कही पंक्ति में कैप्टन के प्रति पान वाले की क्या सोच रही होगी कल्पना के आधार पर लिखिए। (उत्तर सीमा : 60–80 शब्द)

अथवा

"हम भाई बहिनों का सारा लगाव माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका।" आपके अनुसार मन्नू भण्डारी की माँ उनके लिए आदर्श क्यों नहीं बन सकी ?

प्र.15) संगतकार कविता के माध्यम से कवि ने समाज निर्माण में किन लोगों के योगदान को दर्शाया है ? (उत्तर सीमा : 60–80 शब्द) (3)

अथवा

उद्धव गोपियों के कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम को समझने में असमर्थ क्यों रहे ?

प्र.16) कवि नागार्जुन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में लिखिए। (3)

अथवा

रामवृक्ष बेनीपुरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में लिखिए।

BSER

Scanned with OKEN Scanner

'खण्ड – द'

प्र.17) "दुर्घटना से देर भली, सावधानी से मौत टली" सिक्किम यात्रा के दौरान लेखिका को यह चेतावनी किस स्थान पर लिखी मिली उस मार्ग में आने वाली कठिनाईयों को अपने शब्दों में लिखिए। (शब्द सीमा 80–100 शब्द) **(4)**

अथवा

"मै क्यों लिखता हूँ ?" पाठ के आधार पर अज्ञेय द्वारा लिखने के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

प्र.18) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए :– (6)

(1) **भारत में षड़ ऋतुओं का प्रभाव**

(i) प्रस्तावना

(ii) षड़ ऋतुएँ

(ii) फसलों का उत्पादन

(iv) मानव जीवन पर प्रभाव

(v) उपसंहार

(2) **विद्यार्थी जीवनः भावी जीवन का आधार**

(i) प्रस्तावना

(ii) विद्यार्थी जीवन के गुण

(ii) भावी जीवन की तैयारी

(iv) भावी जीवन में विद्यार्थी की भूमिका

(v) उपसंहार

(3) **राजस्थान की ऐतिहासिक धरोहर**

(i) प्रस्तावना

(ii) धरोहर के प्रकार

(ii) ऐतिहासिक धरोहरों की विशेषताएँ

(iv) पर्यटन क्षेत्र में योगदान

(v) उपसंहार

BSER

Scanned with OKEN Scanner

(4) **यदि मैं प्रधानाचार्य होता**

(i) प्रस्तावना

(ii) प्रधानाचार्य के कर्तव्य

(ii) विद्यालय प्रबंधन में योगदान

(iv) विद्यार्थी, अभिभावक, कर्मचारियों से व्यवहार

(v) उपसंहार

प्र.19) स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रेनगढ़ का मनीष मानकर प्रधानाचार्य महोदय को खेल सप्ताह आयोजनार्थ एक प्रार्थना पत्र लिखिए। (4)

<u>अथवा</u>

स्वयं को यशवर्धन मानते हुए अपने पिताजी को एक पत्र लिखिए जिसमें आपकी बोर्ड परीक्षा तैयारी एवं समय प्रबंधन के बारे में बताया गया हो।

प्र.20) नगर पालिका उधमगढ़ की ओर से स्वच्छता जागरूकता हेतु एक विज्ञापन लिखिए। (4)

<u>अथवा</u>

ग्रीष्मावकाश में स्काउट्स एवं गाइड द्वारा कौशल विकास शिविर में बनाई गई सामग्री की प्रदर्शनी देखने हेतु एक विज्ञापन लिखिए।

BSER

Scanned with OKEN Scanner

हिन्दी अनिवार्य

कक्षा -10

पद्य-खण्ड (क्षितिज)

सूरदास

जन्म - सन् 1478

जन्म स्थान- एकमत के अनुसार मथुरा के निकट रूनकता/ रेणु का, दूसरे मत के अनुसार - दिल्ली के पास सीही

गुरू - वल्लभाचार्य

☞ विट्ठलनाथ (गुरुपुत्र) द्वारा स्थापित अष्टछाप के सर्वप्रिय कवि

निवास - मथुरा और वृंदावन के बीच गऊघाट

☞ श्रीनाथजी के मंदिर में भजन कीर्तन।

प्रसिद्ध ग्रंथ या रचनाएँ - सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर-सारावली।

प्रिय रस - वात्सल्य और श्रृंगार रस के साथ भक्ति वात्सल्य के सम्राट

भाषा- ब्रज

निधन - सन् 1583 पारसौली में

☞ प्रारम्भ में दास्य तत्पश्चात् सख्य भाव की भक्ति।

☞ हिन्दी साहित्य में 'भ्रमरगीत' की परम्परा के वास्तविक प्रवर्त्तक पाठ्यक्रम में संकलित चारों पद 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत' से ही लिए गए है।

☞ 'भ्रमरगीत' सुरदास जी की प्रसिद्ध रचना 'सूरसागर' का ही दशम स्कंध है।

☞ भक्तिकाल के सगुण भक्तिधारा के कृष्णभक्ति कवि

☞ हिन्दी साहित्य के चमकते सूर्य की उपमा - 'सूर सूर तुलसी शशि'

☞ 'पुष्टिमार्ग को जहाज जात है-' पंक्ति सूरदास के लिए विट्ठलनाथ ने कहीं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः-

1. गोपियों ने किसके बहाने उद्धव पर व्यंग्य किया?

(क) भ्रमर (ख) कौआ
(ग) कबूतर (घ) कोयल (क)

2. गोपियों को छोड़कर श्री कृष्ण कहाँ चले गऐ थे?

(क) ब्रज (ख) वृंदावन
(ग) मथुरा (घ) बरसाना (ग)

3. 'मधुकर' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(क) कृष्ण (ख) उद्धव
(ग) सूरदास (घ) गोपी (ख)

4. गोपियों ने उद्धव की योग-साधना को किसकी उपमा दी?

(क) गाजर की (ख) कड़वी ककड़ी की
(ग) कड़वा नीम की (घ) कड़वा करेला की(ख)

5. 'पुरइनि' शब्द से तात्पर्य है-

(क) भंवरा (ख) कमल
(ग) चमेली (घ) गुलाब (ख)

6. गोपियों का मन रात-दिन, सोते-जागते किसके नाम की रट लगाता है?

(क) कुन्जा (ख) अक्रूट
(ग) सुभ्रद्र (घ) कृष्ण (घ)

7. 'व्याधि' शब्द का तात्पर्य है-

(क) शारीरिक कष्ट (ख) मानसिक कष्ट
(ग) आध्यात्मिक कष्ट (घ) भौतिक कष्ट (क)

8. गोपियों ने अपनी तुलना किससे की है?

(क) तेल की गगरी से (ख) कड़वी ककड़ी से
(ग) हारिल पक्षी से (घ) प्रेम रूपी नदी से(ग)

Scanned with OKEN Scanner

9. गोपियों ने कृष्ण को सच्चे प्रेमी के स्थान पर और क्या उपमा दी।

(क) अपधूत (ख) निर्दयी क्रूर

(ग) कुटिल राजनीतिज्ञ (घ) कोई नहीं (ग)

10. सूरदास के पदों में किस रस का प्रयोग हुआ है?

(क) वीर रस (ख) संयोग श्रृंगार

(ग) वियोग (विप्रलम्भ) श्रृंगार (घ) उक्त सभी (ग)

लघुत्तरात्मक प्रश्न-

1. 'उधौ, तुम हौ अति बड़भागी' गोपियों ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- क्योंकि ऊधो प्रेम-बंधन से सर्वथा उसी प्रकार मुक्त रहे हैं जिस प्रकार कमल जल में रहकर भी जल से प्रभावित नहीं होता उद्धव के प्रेमहीन होने पर व्यंग्यात्मक रुप में गोपियों ने उसे भाग्यशाली कहा है।

2. गोपियों ने अपने भोलेपन को कैसे व्यक्त किया ?

उत्तर- जिस प्रकार चींटी गुड़ में ही चिपक कर प्राण दे देती हैं, उसी प्रकार कृष्ण प्रेम में वे भी अनुरक्त होकर अपने प्राण त्याग देंगी परन्तु किसी योग जैसे अन्य का वरण नहीं करेंगी।

3. कृष्ण प्रेम रूपी हारिल की लकड़ी को गोपियों ने कैसे पकड़ा हुआ है?

उत्तर- जिस प्रकार हारिल पक्षी रात-दिन अपने पंजों में लकड़ी के टुकडों को थामे रहता है उसी प्रकार गोपियाँ भी मन-क्रम और वचनों से दृढ़ निश्चय करके कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम को अपने मन में बसाए रखती है।

4. 'मरजादा न लही' में किस मर्यादा के विषय में कहा गया है?

उत्तर- परस्पर विश्वास और पूर्ण समर्पण प्रेम की मर्यादा है। छल, कपट, चतुराई और दु:ख, प्रेम की मर्यादा को भंग कर देते है। श्रीकृष्ण ने भी वचन तोड़ने के साथ योग-संदेश भिजवा कर गोपियों के विश्वास को भंग किया। उक्त पंक्ति के माध्यम से इसी प्रेम मर्यादा के नष्ट होने की बात कही गई हैं। जबकि गोपियों ने वंश, परिवार की मर्यादा कृष्ण के लिए त्याग दी।

5. 'मन की मन ही माँझ रही'- गोपियों ने ऐसा क्यों कहाँ है?

उत्तर- गोपियों के अनुसार श्रीकृष्ण मधुरा से वापस आयेंगे और उनकी विरह - वेदना को सुनेंगे परन्तु इस उम्मीद के विपरीत श्रीकृष्ण स्वयं न आकर उध्दव के माध्यम से उन्हें ब्रहम ज्ञान (योग) संदेश भिजवा रहे थे। इस प्रकार गोपियों के मन की अभिलाषा मन में ही रह गई।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नः-

1. सूर की गोपियों के वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर- सूरदास के भ्रमरगीत से संकलित पदों में गोपियों के उद्धव के साथ जो संवाद हुए है, उनमें गोपियों ने अपनी सरल व भावपूर्ण प्रेम भक्ति की अभिव्यक्ति से उद्धव के ज्ञान योग को तुच्छ सिद्ध कर दिया। उद्धव को अपने निर्गुण योग पर बड़ा अभिमान था। गोपियाँ अपने ह्रदय की वेदना प्रकट करती हुई सगुण प्रेम का महत्व प्रकट करती है और उद्धव जैसे ज्ञानी और योगी को निरूत्तर कर देती है। योग साधना को कड़वी ककड़ी और व्याधि कहना तथा व्यंग्य में उद्धव को बड़भागी और कृष्ण को राजनीति शास्त्र का ज्ञाता कहना गोपियों के वाकचातुर्य को स्पष्ट करता है। गोपियों के तर्कों और शंकाओं का कोई समाधान उद्धव के पास नहीं होता। इससे गोपियों के एकनिष्ठ प्रेम के सामने उद्धव का सारा ज्ञान व नीतिज्ञता असहाय हो जाती हैं।

पठितांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर :-

हरी हैं राजनीति पढ़ि आए।

समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार अब पाए ।

इक अति चतुर हुते पहिलै ही, अब गुरु ग्रंथ पढाए।

बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-संदेस पठाए।

ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

अब अपने मन फेर पाइ हैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यों अनीति करे आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तो यह 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।''

1. हरि हैं राजनीति पढ़ि आए। गोपियाँ कृष्ण के किस रूप को व्यक्त कर रही है?

उत्तर- इस पद में गोपियाँ कृष्ण के राजनीतिज्ञों जैसी चाले चलने वाले रूप का वर्णन कर रही है, क्योंकि गोपियों को महसूस होने लगा है कि कृष्ण का मन उनके प्रेम से विरक्त हो गया है।

2. गोपियों के अनुसार अनीति क्या है?

उत्तर- प्रेम रीत को त्याग कर योग-साधना अपनाने का संदेश देना, पहले प्रेम करना और फिर बदल जाना ही अनीति है।

3. उक्त पद की काव्यगत विशेषता व गोपियों की विशेषता बताइए-

उत्तर- **काव्यगत विशेषता**- भाषा :- ब्रज, अलंकार- रूपक, रस - वियोग श्रृंगार एवं व्यंग्योक्ति का श्रेष्ठ का उदाहरण।

गोपियों की विशेषता - उक्त पद में गोपियों की वाग् विदग्धता एवं व्यवहार - कुशलता तथा चातुर्यपन प्रकट हुआ है।

4. पहले के भले लोगों का कैसा स्वभाव होता था ?

उत्तर- पहले के भले लोग दूसरों की भलाई के लिए सदा तत्पर रहते थे। और इस नेक काम के लिए वे स्वयं कष्ट सहने के लिए भी तैयार रहते थे।

पठितांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर :-

'हमारे हरि हारिल की लकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह - कान्ह जक री।
सुजत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करूई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकों लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं ले सौपौं, जिनके मन चकरी ॥

1. गोपियों ने कृष्ण को किराके समान कहा और क्यों?

उत्तर- गोपियों ने कृष्ण को हारिल की लकड़ी कहा है क्योंकि ' 'हारिल पक्षी की लकड़ी के प्रति और गोपियों की कृष्ण के प्रति दृढ़ता समान है।

2. उक्त पद में निहित काव्य सौंदर्य बताइये।

उत्तर- 'हमारे हरि हारिल' अनुप्रास अलंकार, पद में रूपक अलंकार, भाषा- ब्रजभाषा, रस - वियोग श्रृंगार, छन्द - गेय पद, शैली - मुक्त, गुण- माधुर्य, शब्द-शक्ति- लक्षणा । अन्य अनुप्रास शब्द करूई ककरी, नंदनंदन, सोबत - स्वप्न, पुनरुक्तिप्रकाश - कान्ह-कान्ह, रुपकातिशयोक्ति - सुतौ ब्याधि हमको ले आए।

3. गोपियों ने कैसे लोगों को योग संदेश देने की बात कही है?

उत्तर- जिनके मन चकरी (चलायमान) हुए रहते हैं, उनके लिए गोपियों ने ऐसा कहा है।

4. 'यह तो 'सूर' तिनहि लै सौंपो, जिनके मनचकरी' पंक्ति का आशय बताइये।

उत्तर- गोपियों ने उध्दव के योग संदेश को एक ऐसी बीमारी बताया है जिसके बारे में उन्होंने न कभी देखा और न ही अनुभव किया या सुना। ऐसे योग संदेश को गोपियों ने ऐसे लोगों को सुनाने की सलाह दी जिनके मन चंचल और अस्थिर होकर चकरी बने रहते है।

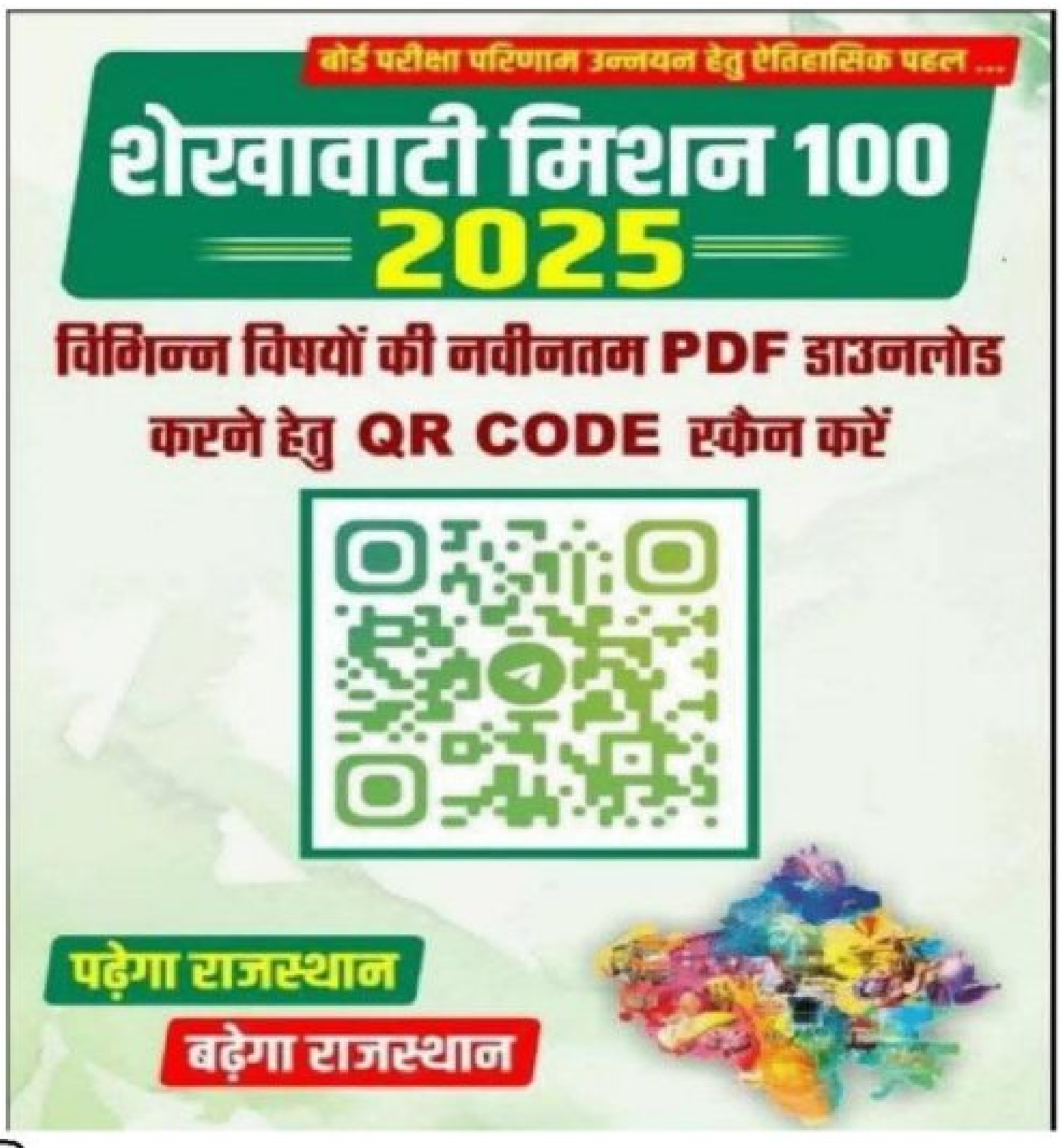

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

तुलसीदास

जन्म- 1532 ई

जन्म स्थान - राजापुर-गाँव बाँदा-जिला, उत्तर प्रदेश

☞ कुछ विद्वानों के अनुसार सुकर या सोरो क्षेत्र, जिला एटा

गुरू- नरहरिदास/नरहर्यानदं

माता-पिता- हुलसी-आत्माराम दुबे

पालन-पोषण- दासी चुनिया/मुनिया

जन्म समय- अभुक्त मूल नक्षत्र

बचपन का नाम - रामबोला,

पत्नी- रत्नावली

भाषा- अवधी, ब्रज

☞ सगुण मार्गी रामभक्त कवि, दास्य भाव की भक्ति।

प्रमुख रचनाएँ - रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्ण गीता वली, विनयपत्रिका, हनुमान-बाहुक , रामलला नहछू, पार्वती मंगल, जानकी मंगल आदि ।

परलोक गमन - सं.-1623 / वि.सं. 1680

☞ इसके संबंध में एक उक्ति प्रसिद्ध है-

'संवत सौलह सो असी, असी गंग के तीर
श्रावण शुक्ल सप्तमी तुलसी तज्यौ शरीर।'

रामचरितमानस के बालकाण्ड से राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः-

1. **'महाभट' शब्द से क्या तात्पर्य है?**
(क) महान लोग (ख) महान सैनिक
(ग) महान यौद्धा (घ) महाभारत (ग)

2. **'धनुही सम त्रिपुरारिधनु विदित संकल संसार' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?**
(क) उपमा (ख) मानवीकरण
(ग) रूपक (घ) अतिशयोक्ति (क)

वाचकशब्द - सा, सी, सम, सरिस, सदृश, इव, जिमि, लौ आदि।

3. **'अर्भक' शब्द से तात्पर्य है-**
(क) लड़का (ख) लड़की
(ग) शिशु (घ) मनुष्य (ग)

4. **निम्न में से 'ब्राह्मण' शब्द का पर्याय नहीं है-**
(क) महिदेवन्ह (ख) द्विज
(ग) विप्र (घ) नृप (द)

5. **'कौसिक, गाधिसूनु' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुए है?**
(क) विश्वामित्र (ख) राम
(ग) लक्ष्मण (घ) परशुराम (क)

6. **'घालकु' शब्द का अर्थ है-**
(क) मना करना (ख) नाश करने वाला
(ग) वाचाल (घ) परशुराम (ख)

7. **'अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी'- कथन किससे कहा?**
(क) भृगुकुल केतु ने भृगबंसमनि को
(ख) भृगुबंसमनि ने भानुबंसमति को
(ग) गाधिसूनु ने परशुराम को
(घ) लक्ष्मण ने परशुराम को (घ)

8. **लक्ष्मण के अनुसार रघुवंशी किन पर अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं करता।**
'हमरे कुल इन्ह पर न सुराई'- पंक्ति के आधार पर बताइये।
(क) सुर (ख) महिसुर
(ग) हरिजन और गाय (घ) उक्त सभी (घ)

9. **'नाथ संभुधनु भंजनिहारा' में 'नाथ' शब्द प्रयुक्त हुआ है?**
(क) राम के लिए (ख) जन के लिए
(ग) परशुराम के लिए (घ) विश्वामित्र के लिए (ग)

10. **परशुराम ने शिवधनुष तोड़ने वाले को किसके समान अपना शत्रु बताया है?**

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

(क) रावण (ख) क्षत्रिय
(ग) सहस्त्रबाहु (घ) महिषासुर (ग)

11. 'व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा' कथन किसका है?
(क) लक्ष्मण का (ख) परशुराम का
(ग) राम का (घ) कौसिक का (क)

12. 'रघुकल भानु' की संज्ञा किसे दी गई है?
(क) राम (ख) लक्ष्मण
(ग) विश्वामित्र (घ) परशुराम (क)

13. बालकों के गुण-दोषों की ओर ध्यान न देने की बात किसने कह थी?
(क) परशुराम (ख) राम
(ग) विश्वामित्र (घ) लक्ष्मण (ग)

14. भृगुकुल केतु/भृगुसुत/भृगबंस मुनि ने अनेक बार भूमि को क्षत्रियों से विहीन कर किसे प्रदान की?
(क) देवताओं को (ख) क्षत्रियों को
(ग) ब्राह्मणों को (घ) सभी को (ग)

15. परशुराम ने लक्ष्मण को कालवश क्यों बताया?
(क) लक्ष्मण पररशुराम को देखकर मुसकरा रहे थे।
(ख) वे शिव के धनुष को बाकी धनुषों के समान बता रहे थे।
(ग) वे शिव धनुष पर ममता का कारण पूछ रहे थे।
(घ) उक्त में से कोई नहीं (ख)

लघुत्तरात्मक प्रश्न-

1. 'गर्भन्ह के अर्भक दलन-पंक्ति के माध्यम से परशुराम जी किसकी क्या विशेषता बताना चाहते है?

उत्तर- परशुराम जी कहते है कि- मेरा यह भयंकर फरसा गर्भ में स्थित बच्चों को भी नष्ट कर देता है। मेरे फरसे से भयभीत क्षत्राणियों के गर्भ गिर जाते है।

2. परशुराम जी ने किन शब्दों में लक्ष्मण को फटकार लगाई ?

उत्तर- परशुराम जी ने कहा कि तुम अपने काल के वश होकर ये सब बोल रहे हो, तुम रघुवंश को कलंकित करने वाले चंद्र हो। तुम बिना किसी अंकुश के ये सब बातें कह रहे हो, पर मैं सत्य कहता हूँ तुम क्षण भर में ही कालकवलित हो जाओगे। यदि तुमने खुद पर नियंत्रण नहीं रखा तो शीघ्र ही प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा।

3. कुशल वीर पुरुष की लक्ष्मण ने क्या पहचान बताई है?

उत्तर- लक्ष्मण ने कहा कि शूरवीर शत्रु को रणभूमि में सामने देखकर अपने पराक्रम का परिचय दिया करते हैं, वे धैर्य नहीं खोते और मुँह से अपशब्द नहीं निकालते, अपने पराक्रम का वर्णन वे स्वयं कभी नहीं करते।

4. 'गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ ।।
उक्त पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

परशुराम की अहंकार युक्त बातें सुनकर विश्वामित्र मन ही मन हँसे और सोचने लगे कि मुनिजी को हरा ही हरा दिखाई दे रहा है। राम और लक्ष्मण को भी साधारण क्षत्रिय कुमार समझकर इन्हें परास्त करने का सपना देख रहे हैं। इन्हें पता नहीं कि ये दोनों कोई गन्ने से बनी खाँड़ नहीं हैं, जिन्हें वे सहज ही निगल जाएँगे। ये तो लोहे के चने है जिन्हें चबाना कोई खेल नहीं।

5. लक्ष्मण ने परशुरामजी के अब तक बचे रहने का क्या कारण बताया?

उत्तर- एक ब्राह्मण समझ कर अब तक नृपद्रोही भृगुवर को छोड़ रखा था और अब तक परशुराम जी किसी कुशल, योग्य यौद्धा से नहीं भिड़े हो, अपने घर में ही देवता बने बैठे हो, इस कारण कारण से अब तक बचे हुए है।

6. 'लखन उत्तर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु' - पंक्ति का अर्थ बताकर निहित अलंकार की पहचान कीजिए।

उत्तर- **अर्थ-** लक्ष्मण को परशुराम की बातों में दिये गये प्रत्युत्तर भृगुबर (परशुराम) के क्रोध रूपी अग्नि को भड़काने में आहुती का काम कर रहे थे ।

अलंकार - उपमा (सरिस-वाचक शब्द)

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नः-

1. राम-लक्ष्मण - परशुराम संवाद को संक्षेप में समझाइए ?

उत्तर- यह अंश 'रामचरित मानस' के 'बालकांड' से लिया गया है। सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिव-धनुष भंग के बाद मुनि परशुराम को जब यह समाचार मिला तो वे क्रोधित होकर वहाँ आते है। शिव-धनुष को खंडित देखकर वे आपे से बाहर हो जाते है। राम के विनय और विश्वामित्र के समझाने पर तथा राम की शक्ति की परीक्षा लेकर अंततः उनका गुस्सा शांत होता है। इस बीच राम लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो संवाद हुआ उस प्रसंग को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। परशुराम के क्रोध भरे वाक्यों का उत्तर लक्ष्मण व्यंग्य वचनों से देते हैं। इस प्रसंग की विशेषता है लक्ष्मण की वीर रस से सजी व्यंग्योक्तियाँ और व्यंजना शैली की सरस अभिव्यक्ति।

पठितांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर -

1. बिहसि लखन बोले मृदु बानी ।
अहो मुनीसु महाभट मानी ।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू।
चहत उड़ावन फूँकि पहारू ।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं।।
जे तरजनी देखि मरि जाहीं ।
देखि कुठारु सरासन बाना।
मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेऊ बिलोकी।
जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी ॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई।
हमरे कुल इन्ह पर न सुराई ॥
बधें पापु अपकीरति हारे।
मारतहू पा परिअ तुम्हारे।।
कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा।
व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।
जो विलोकि अनुचित कहेऊँ, छमहु महामुनि धीर ।
सुनि सरोष भृगुवंश मनि, बोले गिरा गंभीर ।।

1. उक्त पद की काव्यगत विशेषताएं बताइए एवं यह पद किनके मध्य वार्तालाप को व्यक्त करता है?

उत्तर- पद में भाषा- अवधी, गुण- ओज, अलंकार-उत्प्रेक्षा, उपमा एवं रूपक तथा अनुप्रास, रस- वीर, परशुराम के संदर्भ में रौद्र, छंद- चौपाई एवं दोहा

संवाद- बिहसि लखनु .... बान कुठारा - लक्ष्मण का एवं 'जो बिलोकि ..... गंभीर- परशुराम का संवाद है।

2. 'इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजली देखी मरि जाहीं;-

पक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- आशय यह है कि लक्ष्मण कहते है कि हम भी कोई कुम्हड़बतिया या छुई मुई के फूल नहीं है जो तर्जनी अंगली को देखकर ही भय से या लज्जा से कुम्हला जाएंगे अर्थात हम भी। रघुकुल के शूर वीरक्षत्रिय है जो क्रोध या गुस्से से, लाल-पीली आँखों से, अंगुली दिखाकर डराने या धमकी देने मात्र से डरने वाले नहीं है। हमें भी अपनी वीरता पर पूर्ण विश्वास है।

3. लक्ष्मण क्रोध रोककर परशुराम के कटुवचन को सहन करने का क्या कारण बताते है?

उत्तर- लक्ष्मण के अनुसार परशुराम की जनेऊ देखकर उन्होंने अपने क्रोध को रोक रखा है क्योंकि ब्राह्मण का वध करने से पाप और अपयश का भागी होना पड़ता है। ये इनके कुल की परम्परा के विरुद्ध भी है।

4. 'व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा' - पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लक्ष्मण परशुराम की वाणी को करोड़ों वज्रो के समान कठोर बताते हुए उनका अस्त्र शस्त्र धारण करना भी व्यर्थ बताते हैं। जिससे क्रोधित होकर परशुराम विश्वामित्र जी से क्षमा माँग कर जो भी अनहोनी घटित होगी उसका जिमोदार लक्ष्मण को ठहराते हैं

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

पठितांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर -

कहेउ लखन मुनिसील तुम्हारा।
को नहिं जानत विदित संसारा।।
माता पितहिं उरिन भये नीकें।
गुर रिनु रहा सोचु बड़ जी कें।।
सो जनु हमरेहिं माथे काढ़ा।
दिन चलि गये ब्याज बड़े बाढ़ा ।
अब आनिअ व्यवहरिआ बोली।
तुरंत देउँ मैं थैली खोली ।।
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा।
हाय-हाय सब सभा पुकारा ।।
भृगुबर परसु देखाबहु मोही।
बिप्र विचारि बचौं नृपद्रोही।
मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े।
द्विजदेवता घरहि के बाढे ।।
अनुचित कहि सबु लोगु पुकारे।
रघुपति सयनहि लखनु नेवारे ॥
लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु ।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु ।।

1. प्रस्तुत पद में किस पर किसने व्यंग्य किया तथा 'माता पितहि उरिन भये नीके'- पक्ति में निहित अलंकार बताइये।

उत्तर- प्रस्तुत पद में परशुराम की आत्मप्रशंसा और बड़बोलेपन का उत्तर लक्ष्मण अपने पैने व्यंग्य वचनों से दे रहे हैं। तथा 'माता-पिताह -' पक्ति में वक्रोक्ति अलंकार का प्रयोग हुआ है। साथ ही उक्त पद में अनुप्रास, रुपक, उपमा एवं पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार भी प्रयुक्त हुए है।

2. गुरुऋण से कौन मुक्त होना चाहता था तथा सभा में हाहाकार क्यों मच गया ?

उत्तर- गुरुऋण से परशुराम मुक्त होना चाहते थे और क्रोध में उन्होंने अपना फरसा उठा लिया था एवं लक्ष्मण के कटु वचन उनके क्रोधाग्नि में आहुति का काम कर रहे थे जिससे अनिष्ट घटना घटित होने की आशंका से सभा में हाहाकार मच गया।

3. शब्दों के अर्थ बताइए - (i) सुभट (ii) नृपद्रोही (iii) नेवारे (iv) कृसानु

उत्तर- (i) सुभट-रणकुशल यौद्धा (ii) नृपद्रोही = राजाओं (क्षत्रिओं, का विरोधी परशुराम) (iii) नेवारे = रोकना, मना करना (iv) कृसानु = अग्नि

4. परशुराम की क्रोधाग्नि को किसने किसके समान शांत किया ?

उत्तर- परशुराम की क्रोधाग्नि को शांत करने के लिए शीतल जल समान मधुर वाणी में श्रीराम बोलते है और ब्राह्मण का क्रोध शांत करते है।

शेखावाटी मिशन - 100

जयशंकर प्रसाद

जन्मः- 1889 वाराणसी में

अध्ययनः- क्वींस कॉलेज काशी में आठवीं तक

भाषा ज्ञानः- संस्कृत, हिंदी, फारसी, छायावाद के प्रवर्त्तक कवि / छायावाद के ब्रहमा

काव्य रचनाएँ :- चित्राधार, कानन-कुसुम, झरना, आँसू, लहर और कामायनी

नाटकः- अजातशत्रु, चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त और ध्रुवस्वामिनी

उपन्यासः- कंकाल, तितली और इरावती

कहानी संग्रहः- आकाशदीप, आँधी और इंद्रजाल

पुरस्कारः- मंगला प्रसाद पारितोषिक (कामायनी)

काव्यगत विशेषताएँः- कोमलता, माधुर्य, शक्ति, ओज, अतिशय काल्पनिकता, सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण, प्रकृति- प्रेम, देश-प्रेंम और शैली की लाक्षणिकता, इतिहास और दर्शन में संधि।

मृत्युः- सन् :- 1937

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः-

1. **जयशंकर प्रसाद की 'आत्मकथ्य' कविता किस समाचार - पत्र में प्रकाशित हुई?**

(क) चाँद (ख) सरस्वती

(ग) हंस (घ) बंगाल गजट (ग)

2. **'आत्मकथ्य' कविता की भाषा-शैली कैसी है?**

(क) वर्णनात्मक शैली (ख) विवेचनात्मक शैली

(ग) छायावादी शैली (घ) रिपोर्ताज शैली(ग)

3. **कवि ने स्वयं की तुलना किससे की है ?**

(क) थके पथिक से (ख) संन्यासी से

(ग) राजा से

(घ) अपने समकालीन किसी अन्य साहित्यकार से (क)

4. **स्मृति पाथेय से क्या आशय है?**

(क) रास्ते का भोजन (ख) स्मृति रूपी संबल

(ग) रास्ता (घ) जीवन की स्मृतियां (ख)

5. **'मुरझा कर गिर रही पत्तियाँ' क्या संदेश दे रही हैं?**

(क) मानव मूल्यों का

(ख) मानव जीवन की क्षणिकता का

(ग) आशाओं का

(घ) युद्ध का (क)

6. **प्रस्तुत कविता में 'कंथा' शब्द से क्या तात्पर्य है?**

(क) गुदड़ी (ख) रास्ता

(ग) रजाई (घ) धोखा (क)

7. **'मधुप' किसका पर्यायवाची है?**

(क) भौंरा (ख) कबूतर

(ग) कौआ (घ) कोयल (क)

8. **कवि आत्मकथा क्यों नहीं लिखना चाहते थे?**

(क) समय की कमी के कारण

(ख) रुचि न होने के कारण

(ग) जीवन में दुःख ही दुःख होने के कारण

(घ) मतभेद का भय सताने के कारण। (ग)

9. **प्रसादजी ने किसके आग्रह पर आत्मकथा के रूप में 'आत्मकथ्य' रचना तैयार की?**

(ग) कवियों के (ख) रिश्तेदारों के

(ग) मित्रों के (घ) शिक्षकों के (ग)

10. **कवि ने प्रिया के गालों की लालिमा की तुलना किसके साथ की है?**

(क) उषाकालीन लालिमा

(ख) सांयकालीन लालिमा

(ग) निशाकालीन लालिमा

(घ) उक्त में से कोई नहीं (क)

लघुत्तरात्मक प्रश्नः-

1. **'देखो, यह गागर रीती।' गागर रीती से कवि का क्या अभिप्राय है?**

उत्तर- गागर रीती से कवि का अभिप्राय है- खाली घड़ा अर्थात् उपलब्धियों से रहित एवं असफल जीवन /

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

खाली घड़े की तरह कवि का जीवन भी महत्त्वहीन है। उनके जीवन में ऐसी कोई विशेष उपलब्धि नहीं है, जिसे वह उनको कथा के माध्यम से बताए।

2. **'भोली' और 'सरलते' संबोधन 'आत्मकथ्य' कविता में किनके लिए प्रयुक्त हुआ है?**

उत्तर- 'भोली' आत्मकथा के लिए, सरलते कवि के हृदय की सरलता के लिए।

3. **'आत्मकथ्य' कविता की भाषा रस व्यंजना गुण एवं प्रकाशन वर्ष लिखिए?**

उत्तर- **भाषा-** खड़ी बोली

रसव्यंजना - वियोग श्रृंगार

गुण - प्रसाद

प्रकाशन वर्ष - 1932

4. **''सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की?'' कवि ने क्यों कहा?**

उत्तर- 'कंथा' का अर्थ 'गुदड़ी' है जो निर्धनता का प्रतीक है। अपने जीवन की कहानी को परत दर परत खोलने पर भी सुख के नहीं बल्कि संघर्ष के दिन ही देखने को मिलेगें। तो ऐसी कहानी का क्या गाऊँ ? अपने अतीत को पूरी तरह उधेड़ कर रखने से भी क्या फायदा?

5. **अपनी गाथा, के बारे में कवि ने क्या कहा और अंत में क्या निर्णय लिया ?**

उत्तर- कवि जब तक अपने अतीत में झाँककर नहीं देखता है तब तक अपने दु:खों को भुलाए हुए है। अत: उनकी गाथा सुसुप्तावस्था में थोड़ी देर मौन ही रहे, यही कवि चाहते है। अत: स्वयं के जीवन की कोई उपलब्धि न होने के कारण अपनी गाथा गाने के बजाय औरो की आत्मकथा सुनू।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. **'आत्मकथ्य' कविता का मूल भाव व्यक्त कीजिए?**

उत्तर- 'आत्मकथ्य' रचना छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है। इसमें कवि अपने भावों को अभिव्यक्त करते हैं। अपने इस नश्वर जीवन संसार में कठिनाइयों और परेशानियों के अलावा ऐसी कोई उपलब्धि नहीं जो बताई जा सके। जिससे किसी को कोई प्रेरणा मिल सके। फिर इस जीवन रुपी खाली गागर की क्या चर्चा की जाए? इससे कोई लाभ नहीं।

अपनी प्रिया के साथ कुछ क्षण सुखद एहसास के जरूर आये पर वे भी लम्बे समय तक स्थायी नहीं रह सके। हर बार सुख उनके करीब आकर उन्हें चिढ़ाकर फिर से दूर हो जाता है। अपनी प्रिया के सौदर्य में उसके गालों की लाली से उषा को भी ईर्ष्या होती हुई दिखाते हैं। परन्तु अब इन सब में किसी का कोई भला नहीं हो सकता। अत: कवि अंत में अपनी व्यथा कथा के लिए मौन रह कर सिर्फ दूसरों की कहानियाँ सुनने का निर्णय लेते हैं।

पठितांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर-

'उसकी स्मृति पाथेय बनी है, थके पथिक की पंथा की।
सीवन को उधेड, कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की ?
छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता में मौन रहूँ ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा ?
अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा ।

1. **स्मृति को पाथेय मानकर 'थके पथिक की पंथा' से कवि क्या स्पष्ट करना चाहते है?**

उत्तर- 'थके पथिक की पंथा' कवि ने स्वयं के लिए प्रयुक्त किया है। कवि अपने जीवन के कष्टों से थक चुके हैं। जीवन में उतार-चढ़ाव के साथ अनेक मौत और दाम्पत्य बिछोह को सहन किया है।

2. **'कंथा' शब्द किसका प्रतीक बनकर उभरा है?**

उत्तर- 'कंधा' शब्द का शाब्दिक अर्थ तो 'गुदड़ी' होता है जो निर्धनता का प्रतीक है। कवि का जीवन भी नगण्य है जिसमें महानता जैसा वे कुछ नहीं मानते ।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

3. कवि मौन रहकर दूसरों की कथा क्यों सुनना चाहते है?

उत्तर- कवि का जीवन निराशा, दु:ख व पीड़ा से ओतप्रोत है। कवि किसी महान उपलब्धि के प्राप्तकर्ता नहीं समझते स्वयं के जीवन को। अत: औरों को प्रेरणास्वरूप इनके जीवन की कोई महानता न होने के कारण कवि ने मौन रहना स्वीकार किया।

4. कवि प्रसाद स्वयं की जीवन कथा को सामान्य कहकर अपनी किस विशेषता को व्यक्त कर रहे है?

उत्तर- कवि अपने जीवन को सामान्य कहकर अपनी दुर्बलताओं व असफलताओं को सहज रूप से स्वीकार करते हुए अपने विनम्र, शालीन, अहंकारशून्य व सरल होने के भाव को महान व्यक्तित्व के रूप में उजागर करते हैं।

पठित्तांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर:-

''यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल - खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।।''

1. कवि अपनी आत्मकथा में किन बातों का उल्लेख नहीं करना चाहते हैं?

उत्तर- कवि अपनी आत्मकथा में स्वयं के सरल स्वभाव, स्वयं द्वारा की गई भूलों, दूसरों के छल-कपट व अपने प्रेम के उज्ज्वल क्षणों को अभिव्यक्त कर अन्य के साथ बाँटना नहीं चाहते।

2. कवि को कौनसा सुख नहीं मिला?

उत्तर- कवि ने जिस मधुर मिलन के सुख का स्वप्न जीवन के यौवन काल में देखा था, वह सुख प्राप्त होने से पूर्व ही मुस्करा कर भाग गया।

3. 'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि के अनुसार उनके जीवन में कुछ प्रेम की मधुर चांदनी सुख भरी रातें आयी जिनमें उन्होंने उज्ज्वल आनंद के क्षणों को जिया, उनका वर्णन कर वे उन पलों को सबसे बाँटना नहीं चाहते।

4. 'खिल-खिलाकर हँसते होने वाली बातों' का अर्थ स्पष्ट कीजिए

उत्तर- उक्त पंक्ति से कवि का आशय अपनी प्रेयसी के साथ व्यतीत किए प्रेम के सुमधुर क्षणों का स्मरण करना जो अब स्मृति मात्र है।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

जन्म - सन् 1899 में बंगाल के महिषादल में।

मूलतः:- गढ़कोला (जिला-उन्नाव), उत्तर प्रदेश।

औपचारिक शिक्षा -कक्षा नवीं तक महिषादल में ।

भाषा ज्ञान - संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी, हिंदी आदि।

☞ संगीत और दर्शनशास्त्र के भी अध्येता।

प्रभाव - रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद की विचारधारा का ।

☞ परिजनों के लगातार काल कवलित होने से जीवन दुख और संघर्षो से भरा था।

☞ साहित्यिक क्षेत्र में भी निरंतर संघर्ष ।

काव्य रचनाएं - अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता और नए पत्ते ।

अन्य विधाएँ- उपन्यास, कहानी, आलोचना और निबंध।

☞ 'वह तोड़ती पत्थर' एवं 'भिक्षुक' प्रसिद्ध कविता संग्रह।

प्रसिद्ध प्रासांगिक रचना- राम की शक्ति पूजा और तुलसीदास नये युग में प्रासांगिक रचना।

☞ पत्नी की स्मृति में 'जूही की कली' एवं पुत्री सरोज के असामयिक निधन पर उसकी स्मृति में 'सरोज स्मृति' रचना जो हिंदी का सर्वश्रेष्ठ शोकगीत माना गया।

☞ **संपूर्ण साहित्य** - निराला रचनावली के आठ खंडों में

☞ छायावाद के रूद्र या महेश।

☞ मुक्त छंद के प्रवर्तक जिसे आलोचकों ने 'खर छंद या 'केंचुआ छंद' कहकर पुकारा।

☞ शोषित (सर्वहारा) वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं शोषक (पूँजीपति) वर्ग के प्रति तीव्र आक्रोश का भाव।

☞ मतवाला के संपादक मण्डल में शामिल।

☞ छायावाद, प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद तीनों युग की रचनाएँ।

☞ **काव्य की विशेषताएँ**- दार्शनिकता, विद्रोह, क्रांति, प्रेम और प्रकृति का विराट और उदात चित्र।

मृत्यु - सन् 1961

वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

1. 'उत्साह' कविता में कौनसा रस प्रयुक्त हुआ है?
(अ) रौद्र रस (ब) भक्ति रस
(स) वीर रस (द) हास्य रस (स)

2. बादल किसका प्रतीक है?
(अ) उत्साह (ब) निराशा
(स) सफलता (द) क्रांति (द)

3. 'ललित ललित, घेर घेर' में कौनसा अलंकार है?
(अ) यमक (ब) श्लेष
(स) रूपक (द) पुनरूक्ति प्रकाश (द)

4. 'आँख हटाता हूँ तो, हट नहीं रही है।' पंक्ति में किसकी आभा हट नहीं रही है?
(अ) घर की (ब) संसार की
(स) नायिका की (द) फागुन की (द)

5. कवि ने बादलों की तुलना किसके घुंघराले बालों से की है?
(अ) योद्धा (ब) नायिका
(स) बालिका (द) शिशु (द)

6. 'पाट-पाट' शब्द का क्या तात्पर्य है-
(अ) जगह-जगह (ब) बाहर-भीतर
(स) घर-घर (द) कदम-कदम (अ)

7. 'अट नहीं रही है' कविता में कौनसा गुण है?
(अ) प्रसाद (ब) ओज
(स) माधुर्य (द) कोई नहीं (अ)

8. कवि ने बादल का मानवीकरण किस रूप में किया है?
(अ) बच्चे के रूप में (ब) घोड़े के रूप में
(स) बगुले के रूप में (द) उक्त सभी रूपों में (अ)

9. 'उड़ने को नभ में तुम पर-पर कर देते हो' - पंक्ति में निहित अलंकार बताइये-
(अ) उपमा (ब) यमक
(स) रूपक (द) श्लेष (ब)

10. निराला जी ने किस पत्रिका का संपादन किया?
(अ) समन्वय (ब) मतवाला
(स) समन्वय और मतवाला (द) कोई नहीं (स)

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

लघूत्तरात्मक प्रश्न :-

1. 'तप्त धरा, जल से फिर शीतल कर दो-बादल गरजो।'- पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- वर्षा ऋतु आने पर बादल अपने शीतल जल से धरती का ताप शान्त करता है। इसलिए कवि ने बादल से 'तप्त धरा' को शीतल करने की बात कही है। इसके अतिरिक्त 'तप्त धरा' से कवि का आशय अनेक प्रकार के कष्टों से दु:खी जनता भी है। बादल में नवजीवन प्रदान करने की क्षमता है। अत: कवि ने बादल से जगत के दु:खी प्राणियों को नव जीवन से भरने का भी अनुरोध किया है।

2. 'उत्साह' रचना का प्रकार, संबोधन संबोधित, शब्द का पयार्यवाची, रचनाकार, रचनाकार का पसंदीदा विषय व सुनाई देने वाला प्रमुख स्वर, प्रतीक कौनसा है?

उत्तर- रचना का प्रकार- एक आह्वान गीत, संबोधन- बादल को, बादल पर्याय- धाराधर, रचनाकार - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', निरालाजी का पसंदीदा विषय- बादल एवं बादल की गर्जना से सुनाई देने वाला स्वर- नवचेतना और सृजनात्मकता का है जो पौरुष व क्रांति का प्रतीक है।

3. 'घेर, घेर घोर गगन' कवि बादलों से ऐसा क्यों कहता है?

उत्तर- कवि बादलों से ऐसा इसलिए कह रहा है कि यह आकाश मानो धरती का संरक्षक है, इसलिए बादल आकाश में छाकर धरती की तपन दूर करने के लिए छाया कर दें और अपनी जल वर्षा से इसे शीतलता प्रदान करें। 'घ' वर्ण की आवृत्ति के कारण - अनुप्रास और 'घेर -घेर' में - पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

4. 'पाट-पाट शोभाश्री पट नहीं रही है।' का आशय बताइये ।

उत्तर- पंक्ति का आशय है कि सब जगह फागुन की प्राकृतिक सुन्दरता एवं मादकता, रंग-बिरंगे फूल-पत्तों के रूप में इस तरह छा गयी है कि वह मानो तन-मन में समा नहीं रही है और बरबस बाहर प्रकट हो रही है। 'पाट-पाट' शब्द में पुनरुक्तिप्रकाश व शोभा श्री:- रुपक एवं मानवीकरण तथा पुरी पंक्ति में अनुप्रास अलंकार दृष्टव्य है।

5. निराला की 'उत्साह' तथा 'अट नहीं रही है' कविताओं में किन ऋतुओं का वर्णन हुआ है ? इनका महत्व स्पष्ट करें। ?

उत्तर- निराला की 'उत्साह' कविता में- वर्षा ऋतु तथा 'अट नहीं रही है-' में फागुन महीने में आने वाली वसंत ऋतु का वर्णन हुआ है। दोनों ही ऋतुएँ मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण है, गर्मी की तेज धूप, लू और तपन के बाद आकाश में छाये बादल अत्यन्त सुन्दर और सुखदायक लगते हैं। उसी प्रकार सर्दी की ठिठुरन और गलन के उपरान्त वसंत का मादक सौंदर्य अत्यन्त आकर्षक होता है। इस प्रकार ये दोनों ही ऋतुएँ आकर्षक है और उपयोगी भी है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

1. 'उत्साह कविता में दिखाये गये बादल के क्रियाकलाप का उल्लेख कीजिए/ 'उत्साह' कविता का मूल प्रतिपाद्य या संदेश लिखिए। ?

उत्तर- गर्जना करता हुआ, घनघोर घटाओं के साथ उड़ता हुआ, काले घुँघराले बालों के समान बच्चों की कल्पना -सा, हृदय में बिजली की चमक सी आशा व उम्मीद जगाता, निराश मन को नवजीवन देता, वज्र रूपी दुखों को छिपाता, व्याकुल बैचेन मन एवं विश्व के भीषण तप्त गर्मी से संतप्त मनुष्य की आशा की किरण बन अज्ञात दिशा से शीतल जल वर्षा के माध्यम से धरती को एवं संपूर्ण सृष्टि को शीतलता प्रदान करता है। संसार को नवजीवन और नवीन प्रेरणा प्रदान करने में सामाजिक क्रान्ति का प्रतीक है। इसके माध्यम से जोश, पौरुष और क्रान्ति का संदेश मिलता है। यह विभिन्न अर्थों की ओर संकेत भी करता है:- पीड़ित- प्यासे जनों की प्यास बुझाने और सुखकारी शक्ति के रूप में - उत्साह और संघर्ष की भावना रखने वाले क्रांतिकारी पुरुष के रूप में - जल बरसाने वाली शक्ति के रूप में - समान को नवजीवन की प्रेरणा देने वाले कवि के रूप में।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

पठितांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर:-

'विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो -
बादल, गरजो!'

1. धरती के निवासी बेचैन क्यों हैं?

उत्तर- गर्मी की तपन के कारण सारी धरती के लोग व्याकुल तथा बेचैन (उदास) हो रहे हैं।

2. कवि बादलों से गरजने और बरसने के लिए क्यों अनुरोध कर रहे है?

उत्तर- कवि बादलों से तीव्रता के साथ गरजने और बरसने का अनुरोध कर रहे हैं क्योंकि गर्मी की बढ़ती हुई तपन से समस्त संसार के प्राणी व्याकुल व बेचैन हैं। जब जब बादल मूसलाधार वर्षा करेंगे तब ही पृथ्वी की उष्णता कम होगी और सांसारिक प्राणियों को राहत मिलेगी।

3. 'निदाघ' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके प्रतीकात्मक भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'निदाघ' शब्द का तात्पर्य भीषण गर्मी से है। कवि ने इसका प्रतीकात्मक भाव सांसारिक कष्टों के संदर्भ में लिया है क्योंकि एक अर्थ में बादल भीषण गर्मी से मुक्ति का माध्यम है तो दूसरी ओर क्रान्ति के अग्रदूत युवाओं का दल जो कि सांसारिक कष्टों का निवारण करेगा।

4. 'आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!- पंक्ति में निहित अलंकार बताइये।

उत्तर- वर्णित पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार प्रयुक्त हुआ है।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

नागार्जुन

जन्म - सन् 1911

जन्म स्थान-सतलखाँ - गाँव, दरभंगा-जिला, बिहार

मूलनाम - वैद्यनाथ मिश्र, स्नेहपूर्वक लोग 'बाबा' कहकर भी पुकारते थे।

☞ एक अंधविश्वास के कारण इन्हें 'ढक्कन' कहकर भी पुकारा गया।

☞ 'मैथिली' में वे 'यात्री' के नाम से रचना कार्य करते थे।

☞ इन्हें घुमक्कड़ी और अक्खड़ स्वभाव व व्यंग्य के धनी होने के कारण 'आधुनिक युग का कबीर' कहकर भी पुकारा गया।

☞ श्रीलंका में 1936 में बौद्ध धर्म अंगीकार करने के पश्चात् वे नागार्जुन कहलाये।

☞ **अध्ययन** - आरंभिक शिक्षा संस्कृत पाठशाला में फिर बनारस और कोलकाता में

☞ अनेक बार संपूर्ण भारत की यात्रा की।

रचना कार्य- युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, हजार-हजार बाहों वाली, तुमने कहा था, पुरानी जूतियों का कोरस, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, मैं मिलटरी का बूढ़ा घोड़ा।

☞ उपन्यास व अन्य गद्य विधाओं में भी लेखन कार्य किया।

☞ संपूर्ण कृतित्व नागार्जुन रचनावली के सात खंडों में

पुरस्कार - हिंदी अकादमी दिल्ली का शिखर सम्मान, उत्तरप्रदेश का भारत-भारती एवं बिहार का राजेंद्र पुरस्कार प्राप्त।

☞ मैथिली भाषा में 'पत्रहीन नग्न गाछ' रचना के लिए साहित्य अकादमी।

☞ अनेक बार जेल यात्रा।

☞ हिंदी, मैथिली, बांग्ला और संस्कृत में लेखन कार्य।

☞ गाँव की चौपालों और साहित्यिक दुनिया में समान रूप से लोकप्रिय कविता के छायावादोत्तर युग के एकमात्र कवि ।

मृत्यु- सन् 1998

यह दंतुरित मुसकान/फसल

वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

1. बच्चे का स्पर्श कठोर पाषाण भी क्या बन जाता है?

(क) जल (ख) पुष्प
(ग) सुंदर दृश्य (घ) गीत (क)

2. 'छविमान' शब्द का अर्थ है-

(क) नौजवान (ख) छबिला
(ग) सुन्दर (घ) योद्धा (ग)

3. दूध, दही, शहद, जल और मिश्री से बना हुआ मिश्रण क्या कहलाता है?

(क) मधुरस (ख) मधुपर्क
(ग) चूरगा (घ) भोग (ख)

4. कवि ने बाँस और बबूल किसे कहा है?

(क) दूसरों को (ख) पेड़ को
(ग) स्वयं को (घ) किसी को नहीं (ग)

5. कवि नागार्जुन की मातृभाषा कौनसी है?

(क) अवधी (ख) भोजपुरी
(ग) बुंदलेखण्डी (घ) मैथिली (घ)

6. 'यह दुतुरित मुसकान' कविता में किस रस की अनुभूति है?

(क) वात्सल्य रस (ख) वीर रस
(ग) करूण रस (घ) श्रृंगार रस (क)

7. 'फसल' कविता में हमें किस संस्कृति के निकट ले जाती है?

(क) उपभोक्त-संस्कृति (ख) हड़प्पा संस्कृति
(ग) कृषि संस्कृति (घ) उक्त सभी (ग)

8. फसलें किसके अमृत भरे प्रभाव से सिंचकर पुष्ट हुई हैं?

(क) नहर के (ख) नदियों के
(ग) तालाब के (घ) बादलों के (ख)

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

9. 'तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान, मृतक में भी डाल देगी जान।'- पंक्ति में निहित अलंकार बताइये।

(क) रूपक (ख) यमक

(ग) अनुप्रास (घ) अतिशयोक्ति (घ)

10. 'परस' व 'फूल' शब्द हैं-

(क) तत्सम (ख) तद्भव

(ग) देशज (घ) विदेशज (ख)

लघूत्तरात्मक प्रश्न :-

1. नन्हें बालक का चित्रण कवि नागार्जुन जी ने किन शब्दों में किया है?

उत्तर- एक नन्हा बालक अपने दूधिया दाँतों की मुसकान बिखेर कर एकदम सुस्त व्यक्ति को भी स्फूर्तिमय बना देता है और उसके धूल-मिट्टी से सने हुए गाल एकदम ऐसा प्रतीत कराते है कि किसी तालाब को छोड़कर झोंपड़ी में कमल खिल रहे हैं। उसके स्पर्श मात्र से एकदम कठोर हृदय व्यक्ति भी पिघलकर जल की भाँति शीतल हो जाता है।'बाँस और बबूल' जैसे रूखे मन में भी बालक का स्पर्श कोमल शेफालिक के फूलों की भाँति एहसास करवाता है।

2. कवि के अनुसार फसल क्या है?

उत्तर- नदियों के पानी का जादू, हाथों के स्पर्श की महिमा, भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुणधर्म, सूरज की किरणों का रूपांतर, हवा की थिरकन का सिमटा हुआ संकोच ही फसल है।

3. बालक किसे नहीं पहचान पाया? कवि ने उसे किसके माध्यम से देखा? माँ के आँचल में मधुपर्क का पान करते हुए बालक कैसे निहारता रहा?

उत्तर- बालक अपने पिता के रूप में कवि नागार्जुन को नहीं पहचान पाया। कवि को बच्चे की माँ के माध्यम से बालक को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा बालक जीवन के लिए आत्मीयता की मिठास से युक्त माँ का वात्सल्य प्रेम से पूर्ण मधुपर्क का पान करता हुआ बीच - बीच में तिरछी निगाह से नागार्जुन को देखकर आँखें मिलने पर मुस्कुरा देता है।

4. 'बाँस और बबूल' किसके प्रतीक है?

उत्तर- कवि ने अपने आप को ही बाँस और बबूल बताया है। बाँस और बबूल दोनों ही रूखेपन के प्रतीक हैं। कवि भी निरंतर घर से बाहर रहने के कारण पारिवारिकता के अहसास तथा वात्सल्य के सुख से अपरिचित-सा हो गया था

5. शिशु के धूल-धूसरित अंगों से कवि की कल्पना एवं झोंपड़ी में जलजात खिलने से कवि का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- शिशु के धूल-धूसरित अंगों से कवि की कल्पना है कि मानों झोंपड़ी में कमल के फूल खिल उठे। शिशु के मुखादी अंगों की सुन्दरता में कमल से समानता दिखाई दे रही है। जलजात खिलने से भी कवि का अभिप्राय बच्चे की दंतुरित मुसकान की अनुभूति से है जो कि शिशु की निश्छल और मोहक मुसकान के कारण झोंपड़ी में आनन्द और प्रसन्नता बिखेर देती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

1. कवि ने बच्चे की मुसकान के सौन्दर्य को किन-किन बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है?

उत्तर- बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को कवि कुछ विंबों के माध्यम से इस प्रकार व्यक्ति करते है-

(i) बच्चे की मुसकान निर्जीव में प्राणों का संचार कर सकती है।

(ii) मुसकान युक्त शिशु के गाल खिले हुए कमलों दौरो प्रतीत होते हैं।

(iii) मुस्कुराते शिशु का स्पर्श पत्थर हृदय को भी द्रवित कर देने वाला होता है।

(iv) मुस्कराते शिशु के रोमांचकारी स्पर्श से कवि के बाँस और बबूल जैसे नीरस और उदास हृदय से शेफालिक के पुष्पों जैसी कोमलता झर रही है।

2. 'फसल' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर- इस कविता के माध्यम से कवि ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं उन तत्त्वों की ओर जिनके संयोग से फसल

शेखावाटी मिशन - 100
Scanned with OKEN Scanner

तैयार होती है- जल, वायु, मिट्टी, प्रकाश और मानव श्रम ही वे तत्व है। कवि फसलों का उपयोग करने वाले सामान्य व्यक्तियों को फसल के तैयार होने में सम्पूर्ण देश के प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से परिचित कराना चाहते है किसान के कठिन परिश्रम व योगदान से फसल तैयार होती है। अत: कवि उपभोक्तावादी जीवन में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और किसानों के प्रति सम्मान भाव तथा जीवन की आवश्यकता पूर्ति के लिए प्रकृति और मानव के बीच उचित साझेदारी का भाव रखने का संदेश देना चाहते है।

पठितांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर-

'धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य!
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य !
इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क
उंगलियाँ माँ की कराती रही है मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार
और होती जब कि आँखें चार
तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान
मुझे लगती बड़ी ही छविमान !'

1. बच्चे की दंतुरित मुसकान कवि को कैसी लगती है?

उत्तर- बालक की दंतुरित मुसकान कवि को बहुत सुदंर लगती है। और कवि उसकी मधुर मुसकान पर मुक्त हो जाता है।

2. कवि की अपने घर में स्थिति कैसी है?

उत्तर- कवि लम्बे समय तक घर से बाहर इधर-उधर घूमते है, इस कारण प्रवासी, बच्चे के लिए इतर अर्थात् अन्य हो गये हैं और बच्चे के पहचान न पाने के कारण उनकी स्थिति अपनों के बीच अतिथि-सी हो गयी है। ?

3. कवि के अनुसार माँ को धन्य क्यों माना गया है?

उत्तर- माँ अपने अबोध बालक की सुंदर छवि को देखती है और उस पर अपना वात्सल्य लुटाती है। वह अपने बालक के चेहरे पर दन्तुरित मुसकान देखकर भाव-विभोर हो जाती है। इसी आशय से कवि ने माँ को धन्य बताया है।

4. वर्णित पद्यांश की भाषा व प्रयुक्त मुहावरों का अर्थ बतारखे।

उत्तर- उक्त पद्यांश की भाषा खड़ी बोली हिंदी हैं एवं इसमें प्रयुक्त गुहावरों के अर्थ इस प्रकार है-

(i) कनखी मारना- आँख से इशारा करना।

(ii) आँखें चार होना- आमने-सामने देखना या किसी से आमने-सामने नजर मिलना।

पठितांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर-

एक के नहीं, दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू:
एक के नहीं, दो के नहीं
लाख - लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा:
एक की नहीं, दो की नहीं,
हजार - हजार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म:

1. कवि के अनुसार फसल निर्माण में मिट्टी के योगदान को स्पष्ट करें

उत्तर- कवि के अनुसार फसलें मिट्टी की उर्वरकता का परिणाम हैं। फसलें कहीं भूरी मिट्टी से उपजी तो, कहीं काली मिट्टी से तो कहीं संदली मिट्टी से ।

2. इस काव्यांश में कवि क्या कहना चाहता है? किन तत्वों का वर्णन है?

उत्तर- कवि का तात्पर्य है कि फसलों को उगाने और बढ़ाने में प्रकृति के सभी तत्तों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इन्हीं तत्वों के साथ किसान सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये तत्व प्रमुख रूप से - नदियों का पानी, विभिन्न प्रकार की उपजाऊ मिट्‌टी, सूरज की किरणें, मन्द-मन्द बहती हवाएं तथा मानव-श्रम है।

3. 'एक के नहीं, दो के नहीं' पंक्ति क्या तात्पर्य है?

उत्तर- अर्थ- खेतों में लहलहाती खड़ी फसलें एक-दो व्यक्तियों के नहीं अपितु एक साथ अनगिनत लोगों के परिश्रम के परिणामस्वरूप अपने मूल रूप को धारण करती हैं।

4. 'पानी का जादू' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- पानी में मिश्रित जीवनदायी अमृत तत्व जिन्हें पाकर फसले फल-फुलकर बड़ी हुई है। फसलें सैकड़ों नदियों के जल से सिंचित होकर जनमती और बढ़ती हैं

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

मंगलेश डबराल

जन्मः- सन् 1948 में टिहरी गढ़वाल (उत्तरांचल) के काफलपानी गाँव में

शिक्षाः- देहरादून में।

पत्र- पत्रिकाओं में संलग्न रहेः- हिंदी पेट्रियट, प्रतिपक्ष, आसपास, पूर्वग्रह, अमृत प्रभात, जनसता, सहारा, समय आदि।

वर्तमान में 'नेशनल बुक ट्रस्ट' से जुड़े हैं।

कविता संग्रहः- पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते है और आवाज भी एक जगह है।

पुरस्कारः- साहित्य अकादमी, पहल सम्मान अनुपादक के रूप में भी कार्य-

मंगलेश जी की कविताओं के भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, रूसी, जर्मन, स्पानी, पोलस्की और बल्गारी भाषाओं में भी अनुवाद प्रकाशित।

कविताओं में सामंती बोध व पूँजीवादी छल-छदम का प्रतिकार है।

संगतकार

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः-

1. **मंगलेश डबराल किस रूप में प्रतिष्ठित हुए है?**
(क) वकील के रूप में (ख) पत्रकार के रूप में
(ग) एक व्यवसायी के रूप में
(घ) अध्यापक के रूप में (ख)

2. **'प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ' पंक्ति में निहित अलंकार बताइए।**
(क) उत्प्रेक्षा (ख) रूपक
(ग) मानवीकरण (ग) श्लेष (ग)

3. **मुख्य गायक के गायन की क्या विशेषता होती है?**
(क) वह अपने गायन से सबको मधुर कर देता है।
(ख) उसका स्वर आत्मविश्वास से भरा हुआ होता है।
(ग) उसका गायन सभी को प्रिय लगता है।
(घ) उसका गायन कोयल के समान मधुर होता है।
(ख)

4. **मुख्य गायक को क्या समझाने के लिए संगतकार उसका साथ देता है?**
(क) गाए जा चुके राग को पुनः भी गाया जा सकता है।
(ख) वह उसको ढाँढ़स बंधाता है।
(ग) वह बताना चाहता है कि वह अकेला नहीं है।
(घ) उक्त सभी (घ)

5. **'अन्तरा' का मतलब क्या है?**
(क) अलग- अलग (ख) दूरी बताना
(ग) गीत का चरण (घ) भाग विशेष (ग)

6. **'आवाज से राख जैसा कुछ गिरता हुआ' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है-**
(क) अनुप्रास (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) रुपक (घ) श्लेष (ख)

7. **सरगम को लाँधने से कवि का क्या अभिप्राय है?**
(क) संगीत को छोड़कर अन्यत्र ध्यान देना
(ख) मूल स्वर भूलकर अंतरे की जटिल तानों में खो जाना
(ग) संगीत की गहराइयों में उतर जाना
(घ) सभी कथन सत्य (ख)

8. **'जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान'- पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार कौनसा है?**
(क) विरोधाभास (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) उपमा (घ) रूपक (ख)

9. **'अनहद' का कविता के संदर्भ में अर्थ है-**
(क) सीमाहीन (ख) असीम
(ग) अनंत (घ) असीम मस्ती (घ)

10. **'ढाँढ़स बँधाना' का पर्यायवाची है-**
(क) तसल्ली देना (ख) सांत्वना देना
(ग) 'क' और 'ख' दोनों (घ) कोई नहीं (ग)

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

लघुत्तरात्मक प्रश्न-

1. **'तारसप्तक' क्या है?**

उत्तर- 'सप्तक' का अर्थ है:-'सात का सामूह'। ये सात स्वर है- 'सा, रे, ग, म, प, ध और नि' :- षडज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम्, धैवत और निषाद। इनकी ध्वनि की ऊंचाई और धीमेपन (आरोह-अवरोह) के आधार पर यदि ध्वनि मध्य सप्तक से ऊपर है तो उसे 'तार सप्तक' कहते हैं।

2. **बिना किसी कारण के भी संगीतकार मुख्य गायक का साथ क्यों देता है?**

उत्तर- मुख्य गायक का उत्साह बढ़ाने के लिए कि वह अकेला नहीं है और उसे विश्वास दिलाने के लिए कि गाया हुआ राग पुन: भी गाया जा सकता है।

3. **संगतकार के अपनी आवाज को ऊँचा न उठने देने के प्रयास की क्या वजह हो सकती है ?**

उत्तर- उसकी आवाज में हिचक या स्वर दबी और धीमी आवाज वाला रखने में उसके अंदर की मनुष्यता है जिसमें वो मुख्य गायक का सम्मान करता है। और उसी की आवाज को ऊँचाई और बल देना चाहता है।

4. **संगतकार कौन-कौन हो सकता है? मुख्य गायक के साथ इनका संबंध बताते हुए उनके प्रमुख कार्य पर प्रकाश डालिए-**

उत्तर- संगतकार कोई भी नौसिखिया जिसने अभी सीखना प्रारंभ किया हो, फिर चाहे वो मुख्य गायक का शिष्य, उसका छोटा भाई या दूर से चलकर आया कोई रिश्तेदार भी हो सकता है। इनके इनमें ये किसी भी संबंध में जो व्यक्ति संगतकार की भूमिका अदा करता है वो मुख्य गायक के साथ स्वर मिलाकर उसके, स्वर को बल प्रदान करता है।

5. **पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें:-**

(i) 'प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ'

(ii) 'वह आवाज सुन्दर कमजोर काँपती हुई थी'

(iii) 'उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए'।

उत्तर- (i) जब गायक, तार सप्तक में देर तक नहीं गा पाता है, उसका गला बैठने लगता है और स्वर मंद पड़ने लगता है तब उनकी प्रेरणा और उत्साह साथ नहीं देते। वह हताश होने लगता है।

(ii) मुख्य गायक के स्वर में अपना स्वर मिलाकर उसके गायन को प्रभावशाली बनाने वाले संगतकार की आवाज गायक की आवाज के समान भारी और ऊँची नहीं है। वह कमजोर और काँपती हुई सी लगती है परन्तु वह मधुर है और गायक के गायन को प्रतिष्ठा दिलाने वाली है।

(iii) संगतकार के द्वारा अपने स्वर को गायक से नीचा रखने के प्रयास को मनुष्यता माना है। यदि संगतकार में मानवीय संवेदना न होती तो वह अहंकार - ग्रस्त होकर स्वयं को श्रेष्ठ प्रदर्शित करने का प्रयत्न करता। वह गुरु के मान-सम्मान की परवाह किये बिना स्वयं आगे आने का प्रयास करता। गायक की प्रतिष्ठा को क्षति न पहुँचाने की भावना में उसकी मनुष्यता ही कारण है।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न:-

1. **संगतकार कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- कविता हममें यह संवेदनशीलता विकसित करती है कि उनमें से प्रत्येक का अपना-अपना महत्व है और उनका सामने न आना उनकी कमजोरी नहीं बल्कि मानवीयता है। इस कविता के माध्यम से कवि ने संदेश दिया है कि मुख्य गायक या कलाकारों का मौनभाव से परोक्ष में सहयोग करने वाले सहायकों या संगतकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इनको नींव की ईंट कहा जा सकता है। इनको समाज जानता नहीं और इन्हें यश और सम्मान भी नहीं मिलता। कवि चाहता हैं कि लोग इनके महत्व को समझकर इन्हें उचित सम्मान दें। क्योंकि ये संगतकार उचित समय पर सहयोग करके मुख्य कलाकार को निराशा और असफलता से बचाते है तथा उसे आत्मविश्वास से भर देते हैं। इसलिए कार्य उपेक्षित रहने वाले इन लोगों के प्रति पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हुए इन्हें सहानुभूति और उचित सम्मान दिए जाने की अपेक्षा करता है।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

पठितांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर:-

''मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज सुंदर कमजोर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँधकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को संभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था।''

1. **'चट्टान जैसे भारी स्वर' का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- कवि कहता है कि मुख्य गायक का स्वर चट्टान जैसा भारी हो जाता है अर्थात् वह ऊँची राग खींचने में असमर्थ होता है तब एक सुन्दर कमजोर काँपती आवाज उसमें मिलकर उस आवाज के भारीपन को दूर करती है, वह संगतकार की आवाज होती है।

2. **संगतकार की आवाज की विशेषताएँ बताते हुए वह कब स्थायी को सँभाले रहता है? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- **संगतकार के आवाज की विशेषताएँ** - उसकी आवाज मधुर, पतली, सुन्दर तथा कम्पनयुक्त है। जो मुख्य गायक की भारी-भरकम आवाज को कोमलता प्रदान करती है। जब मुख्य गायक अपने सरगम को लाँधकर भटकता हुआ अनहद में चला जाता है तब संगतकार ही स्थायी को संभाले रहता है।

3. **'अंतरे की जटिल तानों के जंगल में'- पंक्ति का अर्थ एवं निहित अलंकार बताइये।**

उत्तर- **पंक्ति का अर्थ:-** किसी गीत के चरण को गाते हुए स्वर व आलाप की कठिन व उलझी हुई तानें। इन तानों में उलझ कर मुख्य गायक जब मूल स्वर से भटकता है तब संगतकार उसे बचाता है।

निहित अलंकार - रुपक

पद्यांश में वर्णित अन्य अलंकार:- चट्टान जैसे भारी - उपमा

जैसे सगेटता हो। जैसे उसे याद .... उत्प्रेक्षा।

4. **कवि ने नौसिखिया किसे तथा क्यों कहा? इस शब्द का अर्थ एवं तत्सम रूप भी लिखिए।**

उत्तर- कवि ने नौसिखिया मुख्य गायक को कहा है क्योंकि कभी- कभी वह सुरों से इस प्रकार अटक जाता है जैसे वह गायन के क्षेत्र में नया - नया हो।

शब्द का अर्थ:- जिसने अभी सीखना प्रारंभ किया हो।

तत्सम रूप:- नवशिक्षु।

शेखावाटी मिशन - 100

हिन्दी अनिवार्य

कक्षा -10

गद्य-खण्ड (क्षितिज)

नेताजी का चश्मा (स्वयं प्रकाश)

लेखक परिचय -

जन्म- 1947 (इंदौर-मध्यप्रदेश)

'वसुधा' पत्रिका का संपादन

प्रसिद्ध रचनाएँ -

कहानी संग्रह - सूरज कब निकलेगा, आएँगे अच्छे दिन भी, आदमी जात का आदमी, संधान ।

उपन्यास - बीच में विनय, ईंधन ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. **शहर के मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर किसकी प्रतिमा लगी थी?**

(क) भगतसिंह (ख) नेहरूजी

(ग) गाँधीजी (घ)सुभाषचन्द्र बोस (घ)

2. **हालदार साहब कितने दिनों से कंपनी के काम से कस्बे से गुजरते थे?**

(क) दस (ख) सात

(ग) पन्द्रह (घ) पाँच (ग)

3. **मूर्ति कोट के दूसरे बटन तक कितने फुट ऊँची थी?**

(क)एक फुट (ख) तीन फुट

(ग) दो फुट (घ)चार फुट (ग)

4. **नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा किसने लगाया था?**

(क) पानवाले ने (ख) किसी बच्चे ने

(ग) कैप्टन ने (घ) हालदार साहब ने

(ख)

5. **नेताजी की मूर्ति किसने बनाई थी?**

(क) मास्टर मोतीलाल ने (ख) पानवाले ने

(ग) हालदार साहब ने (घ) कैप्टन ने (क)

लघूत्तरात्मक प्रश्न :-

1. **हालदार साहब को मूर्ति के सामने से गुजरने पर क्या अन्तर दिखाई देता था और क्यों?**

उत्तर- हालदार साहब को मूर्ति के सामने से गुजरने पर हर-बार मूर्ति पर लगे चश्मे के फ्रेम के बदल जाने का अन्तर दिखाई पड़ता था, क्योंकि कैप्टन उसे बदल देता था।

2. **कैप्टन चश्मे वाले को सामने खड़ा देखकर हालदार साहब अवाक् क्यों रह गये थे?**

उत्तर- हालदार साहब ने नेताजी के प्रति सम्मान की भावना देखकर सोचा कि शायद कैप्टन चश्मे वाला नेताजी का साथी है, या आजाद हिन्द फौज का सिपाही रहा होगा। लेकिन जब सामने कैप्टन के रूप में बूढ़ा, मरियल और लंगड़ा आदमी खड़ा देखा तो हालदार साहब अवाक् रह गये।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न-

1. **कैप्टन मूर्ति के चश्मे को बार-बार क्यों बदल दिया करता था?**

उत्तर- कैप्टन देशभक्त तथा शहीदों के प्रति आदरभाव रखने वाला व्यक्ति था। वह नेताजी की चश्माविहीन मूर्ति देखकर दुखी होता था। वह मूर्ति पर चश्मा लगा देता था पर किसी ग्राहक द्वारा वैसा ही चश्मा माँगे जाने पर उतारकर उसे दे देता था और मूर्ति पर दूसरा चश्मा लगा दिया करता था।

2. **'नेताजी का चश्मा' पाठ के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश देने का प्रयास किया है?**

उत्तर- 'नेताजी का चश्मा' नामक पाठ के माध्यम से लेखक ने देशवासियों विशेषकर युवा पीढ़ी को राष्ट्र प्रेम एवं देशभक्ति की भावना मजबूत बनाए रखने के साथ-साथ शहीदों का सम्मान करने का भी संदेश दिया है। देशभक्ति का प्रदर्शन देश के सभी नागरिक अपने-अपने ढंग से कार्य व्यवहार से कर सकते हैं।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

हालदार साहब को यह सब कुछ बड़ा विचित्र और कौतुकभरा लग रहा था। इन्हीं ख्यालों में खोए-खोए पान के पैसे चुकाकर, चश्मेवाले की देश-भक्ति के समक्ष नतमस्तक होते हुए वह जीप की तरफ चले, फिर रुके, पीछे मुड़े और पानवाले के पास जाकर पूछा, क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है? या आजाद हिंद फौज का भूतपूर्व सिपाही?

1. हालदार साहब को मूर्तिकार का कार्य कैसा लग रहा था।

उत्तर- हालदार साहब की मूर्तिकार का कार्य विचित्र और कौतुकभरा लग रहा था।

2. हालदार साहब किसके समक्ष नतमस्तक होकर रवाना हुए?

उत्तर- हालदार साहब चश्मेवाले की देशभक्ति के समक्ष नतमस्तक होकर रवाना हुए।

3. हालदार साहब ने पानवाले से क्या पूछा?

उत्तर- हालदार साहब ने पानवाले से पूछा कि यह कैप्टन कौन है? नेताजी का साथी या उनकी फौज का सैनिक

4. 'देशभक्ति' की भावना किसमें थी?

उत्तर- देशभक्ति की भावना दिव्यांग चश्मे वाले में थी जो कि नेताजी की मूर्ति के चश्मा लगाता था।

शेखावाटी मिशन - 100

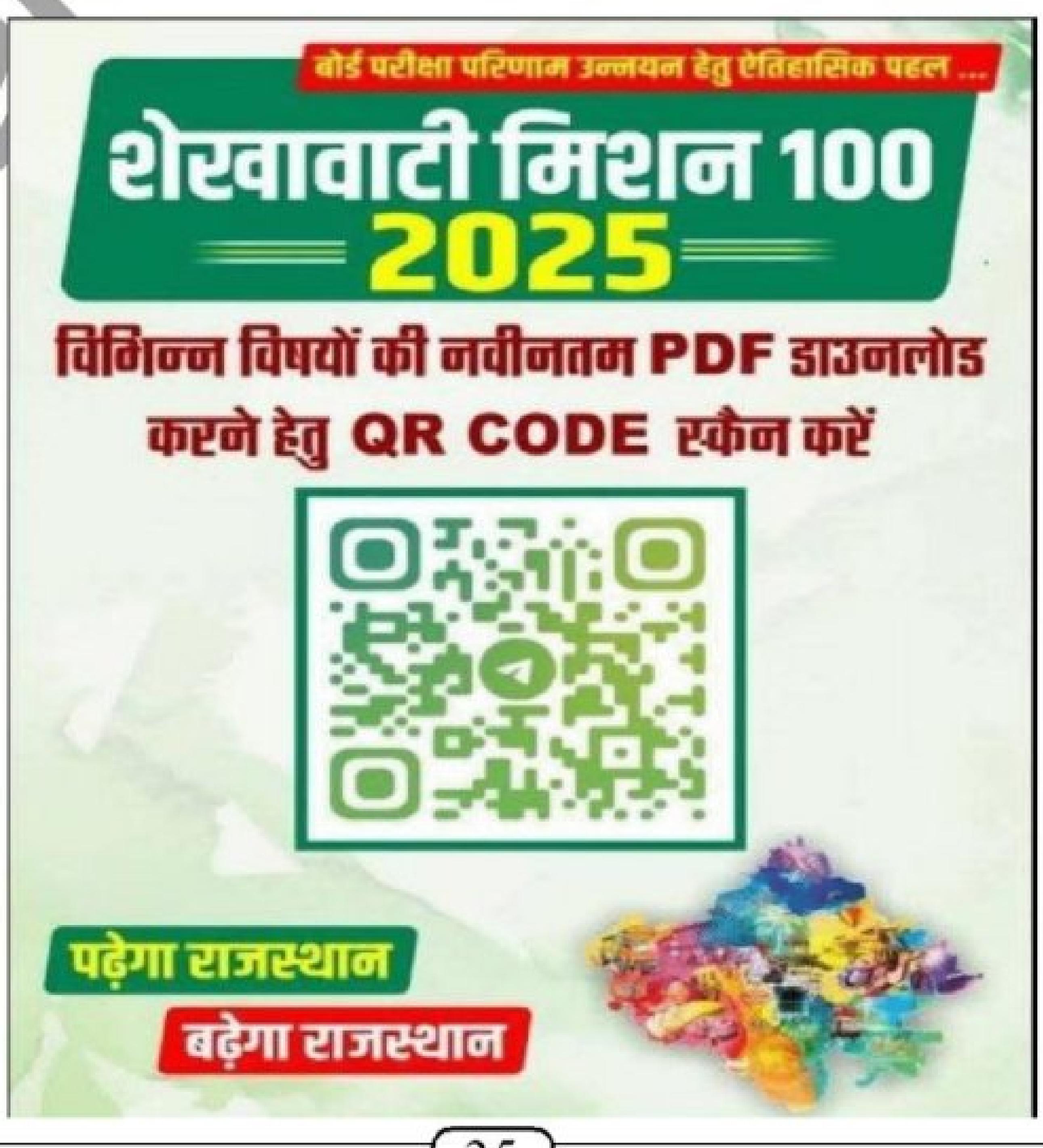

Scanned with OKEN Scanner

बाल गोबिन भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी)

लेखक परिचय -

जन्म- 1899, बेनीपुर गाँव, जिला-मुजफ्फरपुर (बिहार)

देहावसान - 1968 **उपनाम** - 'कलम का जादूगर'

पत्र - पत्रिकाएँ - तरुण भारत, किसान मित्र, बालक, युवक, योगी, जनता, जनवाणी, नयी धारा ।

इनका सम्पूर्ण साहित्य बेनीपुरी रचनावली के 8 खंडों में प्रकाशित।

रचनाएँ:- पतितों के देश में (उपन्यास)

चिता के फूल (कहानी), अंबपाली (नाटक) माटी की मूरतें (रेखाचित्र),

पैरों में पंख बांधकर (यात्रा - वृतांत)

जंजीरें और दीवारें (संस्मरण)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न : -

1. **'बालगोबिन भगत' पाठ गद्य साहित्य की कौनसी विधा है।**

(क) संस्मरण (ख) कहानी
(ग) नाटक (घ) रेखाचित्र (घ)

2. **बालगोबिन भगत के बेटे को मुखाग्नि किसने दी?**

(क) पतोहू ने (ख) बालगोबिन भगत ने
(ग) गाँव वालों ने (घ) लेखक ने (क)

3. **बालगोबिन भगत अपने खेत की पैदावार कहाँ ले जाते थे?**

(क)मंडी (ख)बाजार
(ग)कबीरपंथी मठ (घ) सरकारी गोदाम (ग)

4. **'पुरवाई' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है।**

(क) हवा (ख) पानी
(ग) आग (घ) जल (क)

5. **बालगोबिन भगत कौनसा वाद्य यंत्र बजाते थे?**

(क) बाँसुरी (ख) हारमोनियम
(ग) खँजड़ी (घ) ढपली (ग)

लघुत्तरात्मक प्रश्न-

1. **बालगोबिन भगत किस प्रकार के व्यक्तियों को अधिक स्नेह का पात्र मानते थे और क्यों?**

उत्तर- बालगोबिन भगत कमजोर, असहाय, बीमार, गरीब आदि प्रकार के व्यक्तियों को अधिक स्नेह का पात्र मानते थे। उनकी समझ में ऐसे आदमियों को ज्यादा प्यार व देखभाल की आवश्यकता होती है।

2. **लेखक द्वारा बालगोबिन भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष किस दिन देखा गया?**

उत्तर- लेखक को उनकी संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखने को मिला, जिस दिन उनके पुत्र की मृत्यु हो गयी थी। वे उस दिन सामान्य गृहस्थों की तरह विलाप न करके शव के सामने बैठकर तल्लीन होकर भक्ति के पद गा रहे थे।

3. **बालगोबिन भगत अपनी पतोहू को रोने के बदले उत्सव मनाने को क्यों कह रहे थे?**

उत्तर- भगत का मानना था कि व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसकी आत्मा अपने प्रियतम परमात्मा के पास चली जाती है। विरहिणी आत्मा का परमात्मा प्रियतम से मिलन आनन्दोत्सव की घटना होती है। इसलिए वे अपनी पतोहू को रोने के बदले उत्सव मनाने को कह रहे थे।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न:-

1. **बालगोबिन भगत को साधु क्यों कहा गया है। विस्तार से वर्णन कीजिए।**

उत्तर- खेती-बाड़ी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत साधु जैसा जीवन व्यतीत करते थे। क्योंकि सरलता, सत्यनिष्ठा, कर्मशीलता, परोपकार, ईमानदारी, नि:स्वार्थता, सामाजिक आकर्षणों में निर्लिप्ता, काम, क्रोध, मोह और लोभ का परित्याग यह ही सच्चे साधु की पहचान है। यह सभी गुण बालगोबिन भगत में थे। सांसारिकता के त्याग और पूजा, अनुष्ठानों के आडम्बर से ही कोई साधु नहीं बनता। इसी कारण भगतजी गृहस्थ होते हुए भी एक सच्चे साधु थे।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरः-

आसाढ़ की रिमझिम है। समूचा गाँव खेतों में उत्तर पड़ा है। कहीं हल चल रहे हैं; कहीं रोपनी हो रही हैं। धान के पानी भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं। औरतें कलेवा लेकर मेंड़ पर बैठी है। आसमान बादल से घिरा: धूप का नाम नहीं। ठंडी पुरवाई चल रही। ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर-तरंग झंकार-सी कर उठी। यह क्या है- यह कौन है। यह पूछना न पड़ेगा। बालगोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े, अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अँगुली एक-एक धान के पौधे को, पंक्तिबद्ध, खेत में बिठा रही है। उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढाकर कुछ की ऊपर, स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगो के कानों की ओर !

1. गद्यांश के अनुसार किस फसल की रोपनी हो रही है?

उत्तर- गद्यांश के अनुसार धान की रोपनी हो रही है।

2. समूचा गाँव कब खेतों में उत्तर जाता है?

उत्तर- आसाढ़ की रिमझिम बरसात में समूचा गाँव खेतों में उत्तर जाता है।

3. आसाढ़ की रिमझिम में बच्चे क्या प्रतिक्रिया करते हैं?

उत्तर- बच्चे धान के पानी भरे खेतों में उछलकूद अर्थात् किलोल कर रहे हैं।

4. भगत खेत में रोपनी के साथ क्या कर रहे हैं?

उत्तर- बालगोबिन भगत खेत में रोपनी के साथ-साथ भजन गा रहे हैं।

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरः-

उनका बेटा बीमार है, इसकी खबर रखने की लोगों को कहाँ फुरसत। किंतु मौत तो अपनी ओर सबका ध यान खींचकर ही रहती है। हमने सुना, बालगोबिन भगत का बेटा मर गया। कुतूहलवश उनके घर गया। देखकर दंग रह गया। बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफेद कपड़े ढाँक रखा है। वह कुछ फूल तो हमेशा ही रोपते रहते, उन फूलों में से कुछ तोड़कर उस पर बिखरा दिए हैं। फूल और तुलसीदल भी। सिरहाने एक चिराग जला रखा है। और, उसके सामने जमीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं। वही पुराना स्वर, वही पुरानी तल्लीनता ।

1. लेखक बालगोबिन भगत के घर क्यों गया?

उत्तर- बालगोबिन भगत का बेटा मर गया इसलिए कुतूहलवश लेखक उनके घर गया।

2. कौनसी बात अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है?

उत्तर- मौत की खबर अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है।

3. लेखक क्या देखकर आश्चर्यचकित हुए?

उत्तर- पुत्र की मृत्यु पश्चात भगत द्वारा किये गये क्रियाक्रम को देखकर लेखक आश्चर्यचकित हुए।

4. भगतजी बेटे के शव के पास बैठकर क्या कर रहे थे?

उत्तर- भगतजी बेटे के शव के पास आसन लगाकर गीत गाए चले जा रहे थे।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

लखनवी अंदाज (यशपाल)

लेखक परिचय -

जन्म - सन् 1903 - फीरोजपुर छावनी (पंजाब)

प्रारंभिक शिक्षा - काँगड़ा से

बी.ए. - नेशनल कॉलेज, लाहौर

भगतसिंह व सुखदेव से लाहौर में परिचय

क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण जेल जाना पड़ा।

मृत्यु- 1976

रचनाएँ:-

कहानी संग्रह- ज्ञानदान, तर्क का तूफान, पिंजरे की उड़ान, वा दुलिया, फूलों का कुर्ता।

प्रमुख उपन्यास - झूठा सच (भारत विभाजन पर) अमिता, दिव्या, पार्टी कामरेड, दादा कामरेड, मेरी तेरी उसकी बात

'लखनवी अंदाज' पाठ की विधा- व्यंग्य

इस व्यंग्य लेख में पतनशील सांमती वर्ग की बनावटी जीवन शैली पर कटाक्ष

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. **लेखक ने किस क्लास की टिकट खरीदकर रेल यात्रा की?**

(क) सेकण्ड क्लास (ख) फर्स्ट क्लास

(ग) थर्ड क्लास (घ) फोर्थ क्लास (क)

2. **कहानी के लिए आवश्यक है?**

(क) विचार (ख) घटना

(ग) पात्र (घ) उपर्युक्त सभी (घ)

3. **सफेदपोश सज्जन ने तौलिए पर क्या रखा था?**

(क) खरबूजा (ख) पपीता

(ग) केला (घ) खीरा (घ)

4. **''खीरा लजीज होता है लेकिन मेदे पर बोझ डाल देता है।'' नवाब की बात सुनकर लेखक को क्या लिखने का विचार आया?**

(क) नयी कविता (ख)साठोंतरी कविता

(ग) नयी कहानी (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

1. **'यशपाल ने पतनशील सामन्ती वर्ग पर कटाक्ष किया है।' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- 'लखनवी अंदाज' व्यंग्य में यशपाल ने लखनऊ के एक नवाब साहब की बनावटी जीवन शैली का चित्रण किया है। नवाब साहब ने खीरों को छीलकर और नमक-मिर्च लगाकर केवल सूंघा और कहा कि इसका स्वाद लाजवाब है। खीरे खाये नहीं फेंक दिये। इस तरह दिखावटी रईस बनने का आचरण होने से लेखक ने सामन्ती वर्ग पर कटाक्ष किया है।

2. **लेखक ने क्या सोचकर सेकण्ड क्लास का टिकट लिया था?**

उत्तर- लेखक ने भीड़ से बचने के लिए, एकान्त में नयी कहानी के बारे में सोच सकने के लिए और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देख सकने के विचार से ही सेकण्ड क्लास का टिकट लिया था।

3. **'लखनवी अंदाज' कहानी से हमें क्या सन्देश मिलता है।**

उत्तर- 'लखनवी अंदाज' कहानी से हमें संदेश मिलता है कि हमें दिखावटी जीवन-शैली से हमेशा दूर रहकर वास्तविकता का सामना करना चाहिए। क्योंकि जीवन में स्थूल और सूक्ष्म दोनों का ही महत्व है। जो लोग सनक भरी आदतों से पेट भरने का दिखावा करते हैं। वे अवास्तविक हैं। चाहे नयी कहानी के लेखन की ही बात क्यों न हो।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः -

1. **'नयी कहानी' और 'लखनवी अंदाज' में आपको क्या समानता दिखाई देती है।**

उत्तर- 'नयी कहानी' और 'लखनवी अंदाज ' दोनों सूक्ष्म काल्पनिक और अशरीरी हैं। दोनों ही वास्तविकता को महत्व न देकर बनावटी जीवन शैली को महत्व देते हैं। नवाब साहब झूठी नवाबी के कारण बिना खीरा खाये अपना पेट भरना चाहते हैं तो नये कहानीकार बिना घटना, पात्र और विचार के कहानी लिखना

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

चाहते हैं। दोनों ही यथार्थ की उपेक्षा कर परजीवी संस्कृति की आराधना करते हैं।

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे। सम्भव है, नवाब साहब ने बिल्कुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफायत के विचार से सेकण्ड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखे।.... अकेले सफर का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ ?

1. **लेखक ने पुरानी आदत के अनुसार क्या किया?**

उत्तर– लेखक नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे।

2. **लेखक की पुरानी आदत क्या है?**

उत्तर– ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की लेखक की पुरानी आदत है।

3. **सफेद पोश ने खीरे क्यों खरीदे होंगे ?**

उत्तर– अकेले सफर का वक्त काटने हेतु खीरे खरीदे होंगे।

4. **'शहर का कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखें। पंक्ति में 'कोई' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ?**

उत्तर– वाक्य में 'कोई' शब्द लेखक के लिए प्रयुक्त हुआ है।

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की और देखा। खिड़की के बाहर देखकर दीर्घ नि: श्वास लिया। खीरे की एक फाँक उठाकर होंठो तक ले गए। फाँक को सूंघा। स्वाद के आनन्द में पलके मुँद गई। मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उत्तर गया। तब नवाब साहब में फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर, वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए। नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से हाथ और होंठ पौछ लिए और गर्व से गुलाबी आँखों से हमारी ओर देख । लिया, मानो कह रहे हों – यह है खानदानी रईसों का तरीका !

1. **नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से क्या देखा ?**

उत्तर– उन्होंने सतृष्ण आँखों से मसाले के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों को देखा।

2. **नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर क्यों छोड़ दिया?**

उत्तर– नवाब साहब ने वासना से रसास्वादन कर फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया।

3. **नवाब साहब की पलकें क्यों मुड़ गई?**

उत्तर– फाँक को होठों तक ले जाने व सूँघने से स्वाद के आनन्द में पलकें मुड़ गई ।

4. **नवाब साहब ने खीरे की फाँकों की खिड़की से फेंकना और तौलिए से हाथ मुंह पोंछना किस भाव को दर्शाता है?**

उत्तर– नवाब साहब ने दर्शाया कि जो उच्चकुलीन और खानदानी रईस होते हैं उनके ऐसे ही अंदाज होते हैं।

एक कहानी यह भी (मन्नू भण्डारी)

लेखक परिचय -

जन्म- 1931- भानपुरा (मंदसौर) मध्यप्रदेश ।

इंटर तक शिक्षा - अजमेर (राजस्थान) में

स्वातंत्र्योत्तर कहानी की प्रमुख कहानीकर ।

कहानी संग्रह - एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, यही सच है, त्रिशंकु ।

उपन्यास - आपका बंटी, महाभोजः ।

आत्मकथ्य- एक कहानी यह भी ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. **लेखिका के पिता ने रसोई को क्या कहकर सम्बोधित किया है।**

(क) रसोईघर (ख) भटियारखाना

(ग) भट्टी (घ) तपनघर (ख)

2. **लेखिका ने बचपन में अपने भाइयों के साथ कौन-कौनसे खेल खेले थे?**

(क) क्रिकेट (ख) कब्बड्डी

(ग) गुल्ली-डण्डा (घ) बॉलीबाल (ग)

3. **लेखिका को साहित्य की दुनिया में प्रवेश किसने करवाया?**

(क) माता-पिता ने (ख) मित्रों ने

(ग) प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने

(घ) रिश्तेदारों ने (ग)

लघुत्तरात्मक प्रश्न-

1. **लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है? एक कहानी यह भी पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- रसोईघर में व्यस्त रहने वाली लड़कियों की प्रतिभा व्यर्थ नष्ट हो जाती है। इसलिए लेखिका के पिता अपनी बेटियों को घर-गृहस्थी या चूल्हे - चौके तक सीमित नहीं रखना चाहते थे, बल्कि वे उन्हें जागरूक नागरिक बनाना चाहते थे। अतः उन्होंने रसोईघर की उपेक्षा करते हुए उसे 'भटियारखाना' कहकर सम्बोधित किया है।

2. **मन्नू भण्डारी के पिताजी के स्वभाव की क्या विशेषताएँ थी।**

उत्तर- मन्नू भण्डारी के पिता अत्यन्त कोमल, संवेदनशील और प्रखर समाज-सुधारक होने के साथ ही शक्की स्वभाव के व्यक्ति थे। वे अन्तर्विरोधों के बीच जीने के कारण अस्थिर चित व्यक्ति होने के साथ ही बेहद क्रोधी और अह्मवादी व्यक्ति थे।

3. **"पड़ोस-संस्कृति मानव मन को प्रभावित करती है।" एक कहानी यह भी पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- लेखिका के एक दर्जन प्रारम्भिक कहानियों के पात्र अजमेर के उसी मोहल्ले के रहे जिनके बीच उसका बचपन और किशोरावस्था बीती थी। लेखिका को उनकी जीवन-शैली, भाव-भंगिमाएँ, भाषा आदि याद रहीं। इससे स्पष्ट होता है कि पड़ोस - संस्कृति मानव-मन को प्रभावित करती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः-

1. **मन्नू भंडारी ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है?**

उत्तर- मन्नू की माँ अपने पति की आज्ञाओं का पालन करती हुई और अपनी संतानों की इच्छाओं को पूरा करती हुई सिर्फ पत्नी और एक माँ ही रह गई। उसकी स्वयं की पहचान पूर्णतः समाप्त ही हो गई। एक मशीन की तरह से सबके कार्य करते हुए माँ का स्वयं का व्यक्तित्व परिवार में नगण्य और महत्वहीन था। इसी कारण मन्नू ने अपनी अनपढ़ माँ को व्यक्तित्वहीन कहा। इसलिए अपनी संतानों के लिए आदर्श नहीं बन पाई।

2. **लेखिका मन्नू भंडारी के खंडित आत्मविश्वास को उनकी अध्यापिका द्वारा किस प्रकार उभारा गया? स्पष्ट कीजिए ।**

उत्तर- लेखिका मन्नू भंडारी बचपन से हीन भावनाओं से ग्रसित थी। जब वे कॉलेज के प्रथम वर्ष में आई, तब उनका हिन्दी की अध्यापिका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ। मन्नू को शीला अग्रवाल ने प्रसिद्ध लेखकों की

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

विचारात्मक किताबें पढ़ने की सलाह दी। वे उन्हें चुन-चुन कर किताबें पढ़ने को देती और बाद में उन पर लम्बी बहस भी करती थी। उन्होंने ही मन्नू भंडारी के भीतर छिपी असाधारण क्षमता से मन्नू का परिचय करवाया। उन्हीं के मार्गदर्शन में लेखिका ने हड़ताल, जुलूस, प्रभात फेरियाँ व भाषणबाजी की। अध्यापिका के प्रोत्साहन ने ही लेखिका के साहित्यिक संस्पर एवं कार्यक्षेत्र की नयी दिशा प्रदान की।

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

शायद अचेतन के किसी पर्त के नीचे दबी इसी हीन भावना के चलते मैं अपनी किसी भी उपलब्धी पर भरोसा नहीं कर पाती.... सब कुछ मुझे तुक्का ही लगता है। पिताजी के जिस शक्की स्वभाव पर में कभी भन्न-भन्ना जाती थी। आज एकाएक अपने खण्डित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखाई देती है.. बहुत अपनों के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक।

1. लेखिका अपनी उपलब्धि पर भी भरोसा क्यों नहीं कर पाती?

उत्तर- पर्त के नीचे दबी हीन भावना के कारण।

2. लेखिका को अपनी हर उपलब्धी क्या लगती है?

उत्तर- लेखिका को अपनी हर उपलब्धि एक तुक्का ही लगता है।

3. लेखिका पिताजी के शक्की स्वभाव पर क्या प्रतिक्रिया देती थी?

उत्तर- वह पिताजी के शक्की स्वभाव पर कभी-कभी भन्ना जाती थी।

4. लेखिका के पिताजी का स्वभाव शक्की क्यों हुआ

उत्तर- बहुत से अपनों के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उनका स्वभाव शक्की हुआ।

शेखावाटी मिशन - 100

नौबतखाने में इबादत (यतींद्र मिश्र)

लेखक परिचय -

जन्म - 1977 अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

- सहित- पत्रिका का संपादन।
- विमला देवी फाउंडेशन का संचालन।

काव्य संग्रह - यदा-कदा, अयोध्या तथा अन्य कविताएँ, ड्योडी पर अलाप

- शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी पर - गिरिजा पुस्तक लिखी।
- थाती का संपादन।
- नौबत खाने में 'इबादत' पाठ की विधा- व्यक्तिचित्र
- प्रस्तुत पाठ शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के जीवन पर आधारित ।
- संगीत को आराधना माना है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के बचपन का क्या नाम था?

(क) नसीरुद्दीन (ख) अमीरुद्दीन

(ग) मुरुद्दीन (घ) कमरुद्दीन (ख)

2. शहनाई वादन में बिस्मिल्ला खाँ के उस्ताद कौन थे?

(क) शम्सुद्दीन (ख) रसूलन बाई

(ग) सलार हुसैन (घ) अली बख्श (घ)

3. बिस्मिल्लाह खाँ को संगीत की आरम्भिक प्रेरणा किनसे मिली?

(क) रसूलन बाई और बतूलनबाई

(ख) अमजद अली खाँ

(ग) जरीन दारुवाला

(घ) हुसैन अहमद खाँ (क)

4. बिस्मिल्ला खाँ किस संस्कृति के प्रतीक थे?

(क) हिन्दू (ख) हिन्दू-मुस्लिम

(ग) मुस्लिम (घ) पारसी (ख)

लघुत्तरात्मक प्रश्न-

1. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की काशी को क्या देन है?

उत्तर- उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ ने काशी को हिन्दू-मुस्लिम एकता की मूल्यवान संस्कृति दी। उन्होंने मुसलमान होकर भी गंगा को मैया माना। बालाजी तथा बाबा विश्वनाथ के प्रति गहरी आस्था प्रकट कर काशी को जन्नत जैसा पवित्र माना। इस तरह की आस्था से उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता को बनाने में सहयोग किया।

2. मजहब के प्रति समर्पित बिस्मिल्ला खाँ काशी से बाहर होने पर बाबा विश्वनाथ के प्रति अपनी श्रध्दा किस प्रकार व्यक्त करते थे?

उत्तर- मजहब के प्रति समर्पित बिस्मिल्ला खाँ काशी से बाहर होने पर बाबा विश्वनाथ और बालाजी के मन्दिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते थे. और कुछ क्षण के लिए वे उसी ओर शहनाई को घुमाकर बजाते थे। इस तरह के शहनाई वादन के माध्यम से अपनी आस्था और श्रध्दा प्रकट करते थे।

3. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर- शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के पर्याय है। शहनाई बजाने के लिए जिस रीड का प्रयोग किया जाता है, वह डुमराँव में सोन नदी के किनारे ही पाई जाने वाली घास से बनाई जाती है। इसके साथ ही डुमराँव प्रसिद्ध शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ का जन्म-स्थान भी है।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न-

1. 'शहनाई और काशी से बढकर कोई जन्नत नहीं इस धरती पर हमारे लिए।' बिस्मिल्ला खाँ ऐसा क्यों कहा करते थे ?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ के लिए शहनाई और काशी से बढकर इस धरती पर स्वर्गिक सुख प्रदान करने वाली और दूसरी कोई चीजें नहीं थी। इसलिए वे शहनाई और काशी को अपने लिए सबसे बड़ी जन्नत मानते थे। इसलिए वे ऐसा कहते थे। वो यह मानते थे कि इसी जमीन ने उन्हें तालीम दी। यही से अदब पाया । बाबा विश्वनाथ, 'संकटमोचन बालाजी व गंगा मैया की इस नगरी से बढ़कर जन्नत और नहीं।'

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

2. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है? समझाइये ।

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक इसलिए कहा जाता है, क्योंकि उनकी शहनाई से हमेशा ही मंगलध्वनि निकलती रही। वे काशी के विश्वनाथ, बालाजी मन्दिर में अनेक मांगलिक उत्सव-पर्वो पर शहनाई बजाते थे। इसके साथ ही उनसे बढकर और दूसरा सुरीला शहनाई वादक नहीं हुआ है। मंदिरों में सुबह की प्रथम पूजा आरती को मंगला कहा जाता है। बिस्मिल्ला खाँ के सुरीले शहनाई वादन से ही मंगला आरती शुरु होती थी। अत: उन्हें मंगलध्वनि का नायक कहा गया है।

पठित गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर

काशी संस्कृति की पाठशाला है। शास्त्रों में आनंदकानन के नाम से प्रतिष्ठित। काशी में कलाधर हनुमान व नृत्य- विश्वनाथ हैं। काशी में बिस्मिल्ला खाँ है। काशी में हजारों सालों का इतिहास है जिसमें पंडित कंठे महाराज है, विद्याधरी है। बड़े रामदास जी हैं, मौजुद्दीन खाँ हैं. व इन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन-समूह है। यह एक अलग काशी है जिसकी अलग तहजीब है, अपनी बोली और अपने विशिष्ट लोग हैं। इनके अपने उत्सव है। अपना गम । अपना सेहरा - बन्ना और अपना नौहा। आप यहाँ संगीत को भक्ति से, भक्ति को किसी भी धर्म के कलाकार से, कजरी को चैती से, विश्वनाथ को विशालाक्षी से, बिस्मिल्ला खाँ को गंगाद्वार से अलग करके नहीं देख सकते।

1. शास्त्रों में काशी किस नाम से प्रसिद्ध है।

उत्तर- शास्त्रों में काशी आनंदकानन नाम से प्रसिद्ध है।

2. काशी में क्या-क्या विद्यमान है ?

उत्तर- काशी में कलाधर हनुमान, नृत्य विश्वनाथ व बिस्मिल्ला खाँ है।

3. काशी में किन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन समूह है?

उत्तर - काशी में पंडित कंठे महाराज, विद्याधरी, बड़े रामदासजी, मौजुद्दीन आदि रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन समूह है।

4. काशी में किसको किससे अलग करके नहीं देख सकते हैं?

उत्तर- काशी में संगीत को भक्ति से, भक्ति को किसी भी धर्म के कलाकार से, कजरी को चेती से, विश्वनाथ को विशालाक्षी से एवं बिस्मिल्ला खाँ को गंगाद्वार से अलग करके नहीं देख सकते हैं।

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

सचमुच हैरान करती है काशी- पक्का महाल से जैसे मलाई बरफ गया, संगीत, साहित्य. और अदब की बहुत सारी परंपराएँ लुप्त हो गई। एक सच्चे सुर साधक और सामाजिक की भाँति बिस्मिल्ला खाँ साहब को इन सबकी कमी खलती है। काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। उसी तरह मुहर्रम - ताजिया और होली - अबीर, गुलाल की गंगा-जमुनी संस्कृति भी एक दूसरे के पूरक रहे हैं। अभी जल्दी ही बहुत कुछ इतिहास बन चुका है। अभी आगे बहुत कुछ इतिहास बन जाएगा। फिर भी कुछ बचा है जो सिर्फ काशी में है। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है।

1. खाँ साहब की हैरानी का क्या कारण है?

उत्तर- मलाई बरफ गया, संगीत, साहित्य और अदब की बहुत सारी परम्पराएँ लुप्त हो गई। इसलिए हैरानी है।

2. काशी में एक-दूसरे के पूरक कौन हैं।

उत्तर- काशी में बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक - दूसरे के पूरक रहे हैं।

3. काशी में आज भी कौनसी संस्कृति जीवित है?

उत्तर- काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है।

4. काशी में मरण को भी कैसा माना गया है।

उत्तर- काशी में मरण को शुभ मंगलकारी मानां जाता है।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

संस्कृति - भदन्त आनंद कौसल्यायन

लेखक परिचय-

जन्म - सन् 1905 निधन - 1988

जन्म स्थान - सोहाना गाँव, जिला-अंबाला (पंजाब)

बचपन का नाम - हरनाम दास

धर्म - बौध्द

☞ गाँधीजी के साथ लंबे समय तक वर्धा में रहे।

संस्कृति पाठ की विधा - निबंध ।

पुस्तक प्रकाशन - 20 से अधिक

प्रमुख रचनाएँ - भिक्षु के पत्र, जो भूल ना सका, आह! ऐसी दरिद्रता, बहानेबाजी, यदि बाबा ना होते, रेल का टिकट, कहाँ क्या देखा ।

☞ देश-विदेश में हिंदी भाषा का प्रचार किया।

संस्कृति निबंध में - सभ्यता एवं संस्कृति पर प्रकाश डाला गया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. **संस्कृत व्यक्ति के कार्यों के पीछे कौनसी भावना रहती है?**

(क) निःस्वार्थ की भावना

(ख) उदारता की भावना

(ग) जनकल्याण की भावना

(घ) वीरता की भावना (ग)

2. **पेट की आग बुझाने के लिए मानव ने किसका आविष्कार किया था?**

(क) तलवार का (ख) वस्त्र का

(ग) आग का (घ) सुई-धागे का (ग)

3. **लेखक ने सभ्यता की जननी किसे कहा है।**

(क) संस्कृति को (ख) असंस्कृति को

(ग) असभ्यता को (घ) आग को (क)

4. **'संस्कृति' नामक पाठ में न्यूटन को कहा गया है।**

(क) एक वैज्ञानिक (ख) दिशा दिखाने वाला

(ग) संस्कृत मानव (घ) आदि मानव (ग)

5. **संस्कृति का सम्बन्ध मानव के किस जीवन से होता है?**

(क) बाहरी जीवन से

(ख) भौतिक जीवन से

(ग) आन्तरिक जीवन से

(घ) सामाजिक जीवन से (ग)

लघुत्तरात्मक प्रश्न-

1. **लेखक ने आग और सुई-धागे का उदाहरण देकर किनके अन्तर को स्पष्ट किया है?**

उत्तर - लेखक ने आग और सुई-धागे का उदाहरण देकर संस्कृति और सभ्यता के अन्तर को स्पष्ट किया है। जिस योग्यता, प्रवृति अथवा प्रेरणा के बल आग व सुई धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति विशेष की संस्कृति और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता।

2. **लेखक के अनुसार संस्कृति कब असंस्कृति हो जाती है?**

उत्तर- लेखक के अनुसार संस्कृति में मानव-कल्याण की भावना निहित होती है। जब यही भावना टूट कर मानव के अकल्याण और विनाश में सहायक बन जाती है तब वह असंस्कृति हो जाती है। अर्थात् जिसका परिणाम असभ्यता कहलाता है इसलिए मानव में कल्याण की भावना ही होनी चाहिए।

3. **लेखक के अनुसार मनुष्य-संस्कृति का जनक होने के लिए क्या आवश्यक है?**

उत्तर- लेखक के अनुसार मनुष्य-संस्कृति का जनक होने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं से ऊपर उठकर निरन्तर किसी सूक्ष्म रहस्य की खोज में लगा रहे और उससे जानने का प्रयत्न करें। मानव कल्याणकारी तत्वों की ही खोज करे जिससे हमारा विकास सम्भव हो सकें।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्नः-

1. **वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?**

उत्तर- लेखक के अनुसार वास्तविक अर्थ में 'संस्कृत व्यक्ति' उसे कहा जा सकता है, जो अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर किसी नयी चीज की खोज कर और उसका दर्शन करे। अर्थात् किसी नयी चीज का आविष्कर्ता व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त खोजा। अतः उसे 'संस्कृत व्यक्ति' कहा जा सकता है। महात्मा बुद्ध का मानव कल्याणकारी दर्शन भी उन्हें उत्कृष्ट संस्कृत व्यक्ति की श्रेणी में रखता है। यह खोज भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में हो सकती है।

2. **आम की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्त्रोत क्या रहे होंगे1**

उत्तर- आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज इसलिए मानी जाती है, क्योंकि यह खोज हमारे जीवन संचालन की एक बहुत बड़ी आवश्यकता भोजन पकाने के काम आती है। इसलिए इस खोज को आदिमानव ने एक बहुत बड़ी खोज माना और आज भी हमारे जीवन में इसका सर्वोपरि स्थान है। इसकी खोज के पीछे पेट की ज्वाला शान्त करने की प्रेरणा प्रमुख थी, साथ ही प्रकाश और गर्मी पाने की तथा हिंसक जंगली जानवरों से सुरक्षा की प्रेरणा भी रही होगी। शीत ऋतु से बचने के लिए आदिमानव इसका उपयोग करता होगा और इसी में माँस आदि भूनकर तथा जंगली कन्द-मूल पकाकर खाता होगा। शीत से रक्षा पाने और पेट भरने पर वह कितना आनन्दित होता होगा। इसी आनन्द की अनुभूति के कारण उसने अग्नि को देवता माना होगा और इसकी उपासना की होगी, जो आज भी प्रचलन में है।

पठित गद्यांश के आधार पर प्रश्नोतर -

और सभ्यता? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम। हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने-पहनने के तरीके, हमारे गमनागमन के साधन, हमारे परस्पर कट मरने के तरीके; सब हमारी सभ्यता है। मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है। हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति और जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता ? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा?

1. **संस्कृति का परिणाम किसे कहा गया है?**

उत्तर- संस्कृति का परिणाम सभ्यता को कहा गया है।

2. **मानव योग्यता से आत्मविनाश के साधनों का आविष्कारकर्ता है, उसे क्या कहते हैं?**

उत्तर- असंस्कृति या असभ्यतां ।

3. **मानव जिन साधनों के बल पर दिन-रात आत्मविनाश में जुटा हुआ है उसे क्या कहते हैं?**

उत्तर- उसे असभ्यता कहते हैं।

4. **असंस्कृति कब होकर ही रहेगी?**

उत्तर- संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जायेगा हो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

कृतिका

माता का अँचल

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. 'माता का अंचल' कृति के रचनाकार है-
(क) शिवपूजन सहाय (ख) मधु कांकरिया
(ग) कमलेश्वर (घ) शिव प्रसाद मिश्र रूद्र (क)

2. 'देहाती दुनिया' उपन्यास से लिया गया पाठ है -
(क) माता का अँचल (ख) साना साना हाथ जोड़ी
(ग) मैं क्यों लिखता हूँ (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

3. 'माता का अँचल' पाठ में लेखक का असली नाम क्या था?
(क) भोलानाथ (ब) तारकेश्वरनाथ
(ग) कमलनाथ (घ) रामनाथ (ख)

4. भोलानाथ के पिताजी पूजा के समय उनके मस्तक पर किसका तिलक लगाते थे?
(क) चंदन (ख) भभूत
(ग) कुमकुम (घ) सिन्दूर (ख)

5. रामनामा बही में लेखक के पिताजी कितनी बार राम-नाम लिखते थे?
(क) सौ बार (ख) हजार बार
(ग) दो सौ बार (घ) दस बार (ख)

6. 'उतान' शब्द का क्या अर्थ है -
(क) पीठ के बल लेटना (ख) अवसर
(ग) सरोबार कर देना (घ) भोज (क)

7. 'माता के अंचल' पाठ के लेखक को बचपन में किससे अधिक लगाव था?
(क) माता (ख) पिता
(ग) भाई (घ) बहन (ख)

8. बचपन में लेखक अपने पिताजी के साथ कौनसा खेल खेलता था?
(क) कब्बडी (ख) रस्साकस्सी
(ग) कुश्ती (घ) फुटबाल (ग)

9. मकई के खेत में किसका झुण्ड चर रहा था ?
(क) बकरियों का (ख) भैसों का
(ग) चिड़ियों का (ग) भेड़ों का (ख)

10. चूहों के बिल में पानी डालने से बिल से क्या निकला?
(क) चूहा (ख) छुछून्दर
(ग) नेवला (घ) साँप (घ)

11. 'बुढ़वा बेईमान माँगे करेला का चोखा' कहकर बच्चों ने किसको चिड़ाया था?
(क) बैजू (ख) भोलानाथ
(ग) गणेश (घ) मूसन तिवारी (घ)

12. 'माता का अंचल' पाठ किस शैली में लिखा गया है-
(क) डायरी शैली (ख) नाट्य शैली
(ग) आत्मकथात्मक शैली
(घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

13. अमोला किसे कहते है?
(क) आँवला
(ख) एक प्रकार की सब्जी
(ग) आम का उगता हुआ पौधा
(घ) अनान का का पेड़ (ग)

14. 'माता का अँचल' पाठ में 'महतारी' शब्द का अर्थ है-
(क) मामा (ख) मामी
(ग) माता (घ) पिता (ग)

15. 'माता का अँचल' पाठ में लेखक अपने पिताजी को क्या कहकर पुकारा करते थे-
(क) बाबू जी (ख) पिताजी
(ग) पापा जी (घ) बापू जी (क)

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

लघुत्तरात्मक प्रश्नः-

1. ''माता का अँचल पाठ में बालक भोलानाथ व बाबूजी के मित्रवत प्रेम के साथ वात्सल्य भी उभरता है।'' सोदाहरण समझाइए।

उत्तर- भोलानाथ के पिता एक सजग व स्नेही पिता है। उनके दिन का आरम्भ ही भोलानाथ के साथ शुरू होता है। उसे नहलाकर पूजा पाठ कराना, उसका अपने साथ घुमाने ले जाना, उसके साथ खेलना व उसकी बालसुलभ क्रीड़ा से प्रसन्न होना, उनके स्नेह व प्रेम को व्यक्त करता है। उसके जरा भी पीड़ा हो जाये तो वह तुरन्त उसकी रक्षा के प्रति सजग हो जाते है। गुरूजी द्वारा सजा दिए जाने पर वह उनसे माफी माँग कर अपने साथ ही ले आते हैं।

2. 'माता का अंचल' रचना में बाल मनोभावों की अभिव्यक्ति करते करते लेखक ने तत्कालीन समाज के पारिवारिक परिवेश का चित्रण भी किया है। सोदाहरण समझाइए ।

उत्तर- लेखक का बचपन ग्रामीण परिवेश में व्यतीत हुआ। तत्कालीन सामाजिक परिवेश में जीवों के प्रति आस्था की भावना थी, जैसे :- मछलियों को आटे की गोलिया खिलाना, जो माता-पिता बालकों से अधिक लगाव रखते थे। पिता बालक के साथ कुश्ती लड़ते और खट्टा-मीठा चुम्बन माँगकर प्यार जताते थे। उसके साथ खेल-खिलते थे। माता उन्हें पशु पक्षियों की कहानियाँ सुनाकर खाना खिलाती थी। इस प्रकार आज की तुलना में माता-पिता अपने बच्चों के साथ ज्यादा समय व्यतीत करते थे।

3. ''बच्चे बचपन में निर्दोष, निर्भय और मस्त होते हैं, उन्हें परिवार की चिन्ता नहीं होती है।'' 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बच्चे सचमुच निर्दोष एवं मासूम होते हैं। उनके मन में किसी भी प्रकार का डर नहीं होता है। इस कारण वे सत्य बात बोल देते हैं। उन्हें ऐसी बातों के दुष्परिणाम का ज्ञान भी नहीं होता है। इसी कारण एक बूढ़े वर ने उन बच्चों के पीछे पड़कर दूर तक खदेड़ा। मुसन तिवारी को चिड़ाने के कारण गुरुजी से मार खानी पड़ी। चूहे के बिल में पानी डालने पर साँप निकला तो उसे देखकर बेतहाशा आये और चोटे खायीं।

4. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर- लेखक की इच्छा के विपरीत उसकी माँ उसे नहलाती है, बालों में तेल डालती है, बाल गूंथती है और काला टीका लगाती है, तब वह सिसकने लग जाता है और सिसकते हुए जब बाहर आता है तब बाहर खड़े अपने साथियों को देखकर उसे खेलने की याद और उसके आनन्द की अनुभूति होने लगती है। इसलिए वह सिसकना भूल जाता है।

5. इस उपन्यास अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं?

उत्तर- इस पाठ में जिस ग्रामीण संस्कृति का चित्रण, लेखक ने किया है वह संस्कृति पूरी तरह से बदल चुकी है। क्योंकि अब वैज्ञानिक प्रगति और शहरी सभ्यता के बढ़ते प्रभाव के कारण ग्रामीण संस्कृति अछूती नहीं रही है। आजकल गांवों मे भी रहन-सहन, खानपान आदि सब शहरों की तर्ज पर होने लगा है। पहले ग्रामीण, निस्वार्थ भाव से एक-दूसरे की सहायता करते थे परन्तु अब स्वार्थ ज्यादा बढ़ रहा है। अब गाँवों में भी दूषित राजनीति के कारण लोगों के अन्दर जाति, धर्म, सम्प्रदाय और अमीर-गरीब जैसे भेद पनप गये हैं। ग्रामीण अंचल पर भी शहरी सभ्यता का प्रभाव आ चुका है अब ग्रामीण-जीवन की सरलता समाप्त सी हो गई है।

6. 'माता का अँचल' पाठ से आपको बाल - स्वभाव की कौनसी जानकारियाँ मिलती है? लिखिए।

उत्तर-'माता का अँचल' पाठ से पता चलता है कि बच्चे अपने सुख - दु:ख को मन में नहीं रखते है। यदि वे कभी दुखी होते हैं, तो उसे रो-धोकर प्रकट कर देते है। कभी वे प्रसन्न होते हैं तो हंसी-खुशी के साथ प्रकट कर देते है। इसलिए सिसकते - सिसकते एकदम हँस पड़ना और खेलने में तल्लीन रहना उनके लिए स्वाभाविक होता है। उनके सामने कोई रूचिकर प्रसंग आने पर अपने तनाव, दु:ख को भूलकर हँसते-खेलने लग जाते हैं।

7. 'महतारी के हाथ से खाने पर बच्चों का पेट भी भरता है। ऐसा क्यों कहा गया ? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर संक्षेप में लिखिए।

उत्तर-महतारी यानि कि माँ बच्चे को खेल-खेल में, कहानियाँ सुना कर बड़े ही प्यार से खाना खिलाती है। वे बच्चे का ध्यान खाने पर से हटाकर दूसरी तरफ कर देती है और बातों के साथ-साथ खाना खिलाती जाती है। जिससे बच्चे का पेट भर जाता है। आदमी बच्चे को जल्दी-जल्दी खाना खिलाना चाहता है इसलिए बच्चे उनके साथ ठीक से नहीं खा पाते और वे भूखे रह जाते है। इसलिए यह बात कही गई है।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

साना-साना हाथ जोड़ि

1. साना-साना हाथ जोड़ि .... पाठ की लेखिका कौन है?

(क) कृष्णा सोबती (ख) महादेवी वर्मा

(ग) मधु कांकरिया (घ) मन्नू भण्डारी (ग)

2. साना-साना हाथ जोड़ि .... पाठ किस विधा में लिखा गया है?

(क) रेखाचित्र (ख) यात्रा - वृतान्त

(ग) संस्मरण (घ) कहानी (ख)

3. साना - साना हाथ जोड़ि पाठ में वर्णन है-

(क) अरावली पर्वत माला का

(ख) पश्चिमी पठार का

(ग) रेगिस्तान की मिट्टी का

(घ) हिमालय की यात्रा का (घ)

4. लेखिका ने गैंगटोंक को किसका शहर कहा है?

(क) मेहनतकश बादशाहों का

(ख) मजदूरों का

(ग) परिश्रमी लोगों का

(घ) आलसियों का (क)

5. मन वृन्दावन होने का अर्थ है .... ।

(क) वृन्दावन की सेर करना

(ख) वृन्दावन में मन रमना

(ग) दु:खी होना

(घ) अत्यधिक प्रसन्न होना (घ)

6. लेखिका के गाईड व ड्राईवर का नाम क्या था?

(क) जितेन (ख) शेखर

(ग) मणि (घ) महेश (क)

7. जितेन ने देवी-देवताओं के निवास वाली जगह का क्या नाम बताया?

(क) यूमथांग (ख) खेदुम

(ग) कटाओ (घ) मेटुला (ख)

8. गैगटोंक नहीं मैडम गंतोक कहिए। ....। गंतोक मतलब है पहाड़ ....। यह किसने कहा -

(क) लेखिका ने (ख) जितेन ने

(ग) मणि ने (घ) शेखर ने (ख)

9. भारतीय आर्मी के किस कप्तान ने यूमथांग को टूरिष्ट स्पॉट बनाने में सहयोग दिया?

(क) कप्तान शेखर दत्त (ख) कप्तान शेखर कपूर

(ग) कप्तान जोगेन्द्र (घ) कप्तान सुब्बाराव (क)

10. साना - साना हाथ जोड़ि .... पाठ मे किस शहर के सौन्दर्य का वर्णन है-

(क) अगरतला (ख) गुवाहाटी

(ग) कोलकत्ता (घ) गंगटोक(सिक्किम) (घ)

11. यूमथांग घाटी की क्या विशेषता है?

(क) यह घाटी बहुत गहरी है।

(ख) यह फूलों से भर जाती है।

(ग) यह खतरनाक है।

(घ) इसमें बड़े-बड़े मैदान है। (ख)

12. जितेन ने यूमथांग घाटी में किस फिल्म की शूटिंग होने की बात कहीं है?

(क) गाइड (ख) एक फूल दो माली

(ग) बरसात (घ) राजा हिन्दुस्तानी(क)

13. गंतोक मे श्वेत पताकाएँ किस अवसर पर फहराई जाती है?

(क) शान्ति के अवसर पर

(ख) युद्ध के अवसर पर

(ग) शोक के अवसर पर

(घ) किसी उत्सव के अवसर पर (ग)

14. लेखिका ने साना-साना हाथ जोड़ि प्रार्थना किससे सीखी थी?

(क) जितेन नार्गे से (ख) स्कूली बच्चों से

(ग) नेपाली युव ती से (घ) स्कूल की शिक्षिका से

(ग)

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

15. लायुंग की सुबह कैसी थी?

(क) बादलों से युक्त

(ख) शीतल कर देने वाली

(ग) सम्मोहन जगाने वाली

(घ) बेहद शान्त और सुरम्य (घ)

16. हिमालय की तीसरी सबसे बड़ी चोटी कौनसी है?

(क) कंचन जंघा (ख) माउण्ट एवरेस्ट

(ग) K_2 शिखर (घ) जोसिस (क)

17. गैंगटॉक से यूमथांग कितनी दूरी पर था?

(क) 150 कि.मी. (ख) 152 कि.मी.

(ग) 149 कि.मी. (घ) 140 कि.मी. (ग)

18. देखते ही देखते रास्ते किसकी तरह घुमावदार होने लगे?

(क) रस्सी की तरह (ख) साँप की तरह

(ग) नदी की तरह (घ) जलेबी की तरह (घ)

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. चित्रलिखित- सी मैं 'माया' और 'छाया' के इस अनूठे खेल को भर-भर आँखों देखती जा रही थी।' साना- साना हाथ जोड़ि' - पाठ के आधार पर यह कौनसा खेल था?

उत्तर- गंतोक से यूमथांग की यात्रा के दौरान उस पहाड़ी प्रदेश में पल-पल प्राकृतिक परिदृश्य बदल रहा था। जैसे-जैसे लेखिका पहाड़ की ऊंचाई पर जा रही थी तो कहीं मखमली हरियाली पर दृश्य थे तो थोड़ी देर में एकदम पथरीला। कुछ देर बाद सभी दृश्यो पर बादल की धुंध छा जाती है जिससे सभी दृश्य गायब हो जाते हैं। इन्हीं प्राकृतिक लम्हों को लेखिका ने 'माया और छाया' का अनूठा खेल कहा है।

2. 'मन काव्यमय हो उठा। सत्य और सौन्दर्य को छूने लगा।' किस दृश्य को देखकर लेखिका का मन काव्यमय हो गया?

उत्तर सिक्किम में यूमथांग की यात्रा के दौरान 'सेवन सिस्टर्स वाटर फाला के दृश्य को देखकर लेखिका की आत्मा संगीत सुनने लगी। उस झरने के पास लेखिका ने बिखरे पत्थरों पर बैठकर अपना पाँव उस शीतल नीर में डुबोया तो उस आत्मानुभूति से मन काव्यमय हो उठा।

3. जितेन नार्गे ने 'धर्मचक्र' की क्या विशेषता बताई? 'साना - साना हाथ जोड़ि अध्याय के आधार पर लिखिए।

उत्तर लेखिका सिक्किम यात्रा पर गई थी। सिक्किम की राजधानी गंगटोंक से यूमथांग जाते वक्त एक जगह पर एक कुटिया में घूमता-चक्र देखा, पूछने पर नार्गे ने बताया कि यह धर्म-चक्र है। प्रेयर व्हील। इसको घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।

4. मेरे लिए यह यात्रा सचमुच ही खोज यात्रा थी। लेखिका के इस कथन को 'साना-साना हाथ जोड़ि ...... पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए

उत्तर गंगटॉक से यूमथांग और आगे कटाओ तक की यात्रा लेखिका के लिए खोज यात्रा थी। लेखिका ने प्रकृति के अद्भुत सौन्दर्य, उसकी सम्मोहक शक्ति, वहाँ के संघर्ष पूर्ण जीवन का अनुभव किया था। उसने वहाँ पढ़ने वाले बच्चों की कठिनाइयों, डोको में बच्चे को पीठ में बाँधे काम करती नारियों को, भीषण सर्दी में भी सीमान्त क्षेत्र में गश्त करते फौजियों को देखा। इन सत्यों की अनुभूतियों के आधार पर लेखिका ने इस यात्रा को खोज यात्रा कहा है।

5. प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है?

उत्तर-यहाँ के हिम-शिखर जल-स्तम्भ के समान हैं। सर्दियों में यहाँ प्रकृति बर्फबारी करके हिमशिखरो के रूप में, जल -संग्रह कर लेती है और गर्मियों में यही बर्फ की शिलाएँ पिघल - पिघल कर जलधारा का रूप ले लेती हैं। इस पानी से लोगों की प्यास बुझती है। यह जल संचय की एक अद्भुत व्यवस्था है।

6. गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों' का शहर क्यों कहा गया है?

उत्तर गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा गया है, क्योंकि यहाँ के स्थानीय निवासी बहुत मेहनती है। इस

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

दुर्गम पर्वत-स्थल पर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यहाँ के निवासियों को कड़ा संघर्ष करना पड़ता है। अनेक असुविधाओं के बीच भी वे अपना जीवन बादशाहों के समान मस्त अंदाज में बिताते हैं, जरा भी हीनता या दीनता की भावना नहीं रखते हैं। उन्होंने गंतोक को कड़ी मेहनत से मनोरम बनाया है।

7. लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी क्यों दिखाई दी?

उत्तर लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला कि यह धर्मचक्र है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं। इस बात को जानकर लेखिका ने महसूस किया कि धार्मिक आस्थाओं और अन्धविश्वासों के बारे में सारे भारत में एक जैसी मान्यताएँ है। लोग पाप-पुण्य की व्याख्या अपने अपने ढंग से करते हैं। इतनी वैज्ञानिक, प्रगति होने पर भी भारत के लोग पापों से छुटकारा पाने के लिए किसी न किसी अन्धविश्वास का सहारा लेते हैं। यहाँ लोगों की आस्थाएँ, विश्वास, पाप-पुण्य की अवधारणाएँ और कल्पनाएँ एक जैसी हैं। यही विश्वास पूरे भारत को एक सूत्र में बाँध देता है।

8. प्राकृतिक सौन्दर्य के अलौकिक आनन्द में डूबी लेखिका को कौन-कौनसे दृश्य झकझोर गये?

उत्तर प्राकृतिक सौन्दर्य के अलोकिक आनन्द में डूबी लेखिका को अकस्मात् वहाँ के जनजीवन ने झकझोर दिया-

(i) वहाँ सड़क बनाने के लिए पत्थरों पर बैठकर पत्थर तोड़ती औरतों का दृश्य भीतर तक झकझोर गया। उनके हाथों में कुदाल और हथौड़े थे। उनमें से कइयों की पीठ पर एक बड़ी टोकरी में बच्चे बंधे हुए थे। नदी, फूलों, वादियों और झरनों के ऐसे स्वर्गिक सौन्दर्य के बीच भूख, मौत, दीनता और जिजीविषा के बीच जंग जारी है।

(ii) सात-आठ वर्ष की उम्र के ढेर सारे बच्चे तीन सोद तीन किलोमीटर की पहाड़ी चढ़कर स्कूल जाते और वहाँ से लौटते बच्चे। ये पहाड़ी बच्चे पढ़ाई के अलावा माँ के साथ मवेशी चराते हैं, पानी भरते हैं और लकड़ियों के गट्ठर ढ़ोते हैं।

(iii) सूरज ढ़लने के समय कुछ पहाड़ी औरतें गायों को चराकर लौट रही थी। उनके सिर पर एकत्र की गई लकड़ियों के भारी-भरकम गट्ठर थे। इसके साथ ही चाय के हरे-भरे बागानों में कई युवतियाँ वोकु पहनकर चाय की पत्तियाँ तोड़ रही थीं।

9. 'कटाओ' पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है। इस कथन के पक्ष में अपनी राय व्यक्त कीजिए।

उत्तर 'कटाओ' सिक्किम का एक खूबसूरत किन्तु वीरान पहाड़ी स्थान है। जहाँ प्रकृति अपने पूरे वैभव के साच दृष्टिगोचर होती है। यहाँ पर लेखिका को बर्फ का आनन्द लेने के लिए जब घुटनों तक के लम्बे बूटों की आवश्यकता महसूस हुई। तब उसने देखा कि वहाँ झाँगु की तरह किराये पर मुहैया कराने वाली एक भी दुकान नहीं है। तब लेखिका को लगा कि कटाओ में किसी दुकान का न होना भी वहाँ के लिए वरदान है क्योंकि यहां झांगु की तरह दुकानों की कतार लग गयीं तो यहाँ का भी नैसर्गिक सौन्दर्भ तो खत्म होगा ही, यहाँ आबादी भी बढ़ेगी और सैलानियों की भीड़ भी। अन्ततः यहाँ भी प्रदूषण फैलेगा और यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट हो जायेगा।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

मैं क्यों लिखता हूँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. 'मैं क्यों लिखता हूँ ?' पाठ के लेखक कौन है?

(क) शिवपूजन सहाय (ख) कमलेश्वर

(ग) अज्ञेय (घ) शिवप्रसाद मिश्र (ग)

2. अज्ञेय ने बी. एससी. कहाँ से की?

(क) लाहौर (ख) श्रीनगर

(ग) भोपाल (घ) दिल्ली (क)

3. किसे संक्षिप्त वाक्यों में बाँधना आसान नहीं है?

(क) जीवन के नैतिक सम्बन्धों को

(ख) जीवन के आन्तरिक अनुभवों को

(ग) जीवन के सांस्कृतिक अनुभव को

(घ) जीवन के सामाजिक अनुभव को (ख)

4. लेखक स्वयं किसलिए लिखता है?

(क) अपनी आन्तरिक विवशता से मुक्ति पाने के लिए

(ख) तटस्थ होकर आन्तरिक विवशता को देखने के लिए

(ग) आन्तरिक विवशता को पहचानने के लिए

(घ) उपर्युक्त सभी (घ)

5. लेखकों के सामने कौनसी विवशता होती है?

(क) सम्पादकों के आग्रह की

(ख) प्रकाशक के तकाजे की।

(ग) आर्थिक आवश्यकता

(घ) उपर्युक्त सभी (घ)

6. कृतिकार वास्तव में किसके प्रति समर्पित नहीं होता?

(क) माता-पिता (ख) बाहरी दबाव

(ग) आन्तरिक दबाव (घ) गुरु (ख)

7. लेखक किस विषय के विद्यार्थी रहे है?

(क) विज्ञान (ख) भूगोल

(ग) इतिहास (घ) गणित (क)

8. लेखक को किसका पुस्तकीय ज्ञान था?

(क) अणु का

(ख) रेडियोधर्मी तत्वों का

(ग) रेडियोधर्मिता के प्रभाव का

(घ) उपर्युक्त सभी (घ)

9. लेखक ने कहाँ पर गिरे अणु बम के बारे में समाचार पढ़े ?

(क) टोक्यो (ख) मुम्बई

(ग) हिरोशिमा (ब) मणिपुर (ग)

10. किस नदी में बम फेंककर सैनिक हजारों मछलियाँ मार देते थे?

(क) गंगा (ख) कावेरी

(ग) गोदावरी (घ) ब्रह्मपुत्र (घ)

11. लेखक ने किसके आधार पर अपना लेख लिखा?

(क) सम्पादक के आग्रह पर

(ख) आर्थिक आवश्यकता के लिए

(ग) अपनी अनुभूति के आधार पर

(घ) प्रकाशक के काजे पर (ग)

12. लेखक ने कृतिकार के लिए अनुभव से गहरी चीज क्या बताई?

(क) संवेदना (ख) अनुभूति

(ग) कल्पना (घ) सन्तुष्टि (ख)

13. लेखक ने हिरोशिमा कविता कब लिखी?

(क) जापान में

(ख) हिरोशिमा में

(ग) भारत लौटकर, रेलगाड़ी में - बैठे-बैठे

(घ) अमेरिका में (ख)

14. लेखक का अनुभव अनुभूति कब बन गया?

(क) पत्थर पर अंकित मानव की छाया देखकर

(ख) हिरोशिमा अणु-विस्फोट देखकर

(ग) अस्पताल देखकर

(घ) उपर्युक्त सभी (क)

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

15. 'अज्ञेय' जी के अनुसार इस पाठ में मोक्ष पाने का एकमात्र साधन क्या है?

(क) लड़ाई करना (ख) पूजा पाठ करना

(ग) लिखना (घ) नाचना (ग)

16. अज्ञेय जी के अनुसार किसके स्वभाव और आत्मानुशासन का महत्व होता है?

(क) कृतिकार के (ख) शिल्पकार के

(ग) मूर्तिकार के (घ) इनमें से कोई नहीं(क)

लघुत्तरात्मक प्रश्नः-

1. हिरोशिमा पहुँच कर लेखक ने कैसा अनुभव किया? उसकी मनः स्थिति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर हिरोशिमा में पहुँच कर वहाँ के दृश्यों को देखने पर लेखक को अणुबम के विस्फोट की भयानकता का अनुभव हुआ। वहाँ की सड़कों पर घूमते हुए जले हुए पत्थर पर लम्बी उजली छाया देखकर कवि को अनुभूति हुई कि रासायनिक हमले के शिकार व्यक्तियों की क्या दशा हुई होगी? तब उन्होंने अनुमान लगाया कि मानो वहाँ कोई व्यक्ति खड़ा रहा होगा जो रेडियोधर्मी किरणों का शिकार हुआ। जिसने पत्थर तक को झुलसा दिया और उस व्यक्ति को भाप बनाकर उड़ा दिया। इसी प्रत्यक्ष अनुभूति से उन्होंने यह कविता लिखी।

2. ''मैं क्यों लिखता हूँ ?'' प्रश्न के उत्तर में लेखक ने क्या कारण बताया?

उत्तर लेखक स्वयं जानना चाहता है कि वह क्यों लिखता है इसका उत्तर देना कठिन है लेकिन लिखकर ही कोई लेखक अपने मन की विवशता को प्रकट करता है। और आकुलता से मुक्त हो जाता है। यह अलग बात है कि कुछ प्रसिद्धि मिल जाने के बाद बाह्य विवशता के आधार पर भी लिखा जाता है। कुछ सम्पादकों के आग्रह से, प्रकाशक के तकाजे से, और कुछ आर्थिक आवश्यकता से भी लिखा जाता है। परन्तु इसका सम्बन्ध आत्मिक अनुभूति से अधिक रहस्य है और यही इसका मूल कारण है।

3. लेखक की आभ्यन्तर विवशता क्या होती है! 'मैं क्यों लिखता हूँ ?' पाठ के आलोक में उत्तर दीजिए

उत्तर लेखक की आभ्यन्तर विवशता यह है कि वह स्वयं को पहचानने के लिए लिखता हूँ। लेखक लिखकर अपने मन के अन्दर की विवशता को जानना चाहता है। जो विचार उसके अन्दर छटपटाहट पैदा कर रहे हैं। उन्हें जानने के लिए लिखता है। लेखक मानता है कि कई बार बाहरी तत्वों **जैसे-** आर्थिक विवशता, सम्पादक का आग्रह, प्रसिद्धि पाने के लिए भी किया जाता है। परन्तु लेखक तटस्थ रहकर, आन्तरिक विचारों से मुक्ति पाने के लिए अपनी अनुभूति के आधार पर लिखता है।

4. हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है। यह आप कैसे कह सकते हैं?

उत्तर लेखक जापान घूमने गया था तो हिरोशिमा में उस विस्फोट से पीड़ित लोगों को देखकर उसे थोड़ी पीड़ा हुई, परन्तु उसका मन लिखने के लिए उसे प्रेरित नहीं कर पा रहा था। हिरोशिमा के पीड़ितों को देखकर लेखक को पहले ही अनुभव हो चुका था परन्तु जले पत्थर पर किसी व्यक्ति की उजली छाया को देखकर उसको हिरोशिमा में विस्फोट से प्रभावित लोगों के दर्द की अनुभूति कराई, लेखक को लिखने के लिए प्रेरित किया। इस तरह हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अन्तः व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है।

5. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है?

उत्तर यह पूर्णतः सत्य है कि हिरोशिमा में अणुबम का प्रयोग विज्ञान का भयंकर दुरुपयोग है। इस घटना ने विज्ञान के विनाशकारी रूप से सारे संसार को परिचित करा दिया था। आजकल विज्ञान का दुरुपयोग घातक अस्त्र-शस्त्र बनाकर और उसके द्वारा आंतकवादी हमले किए जा रहे हैं। चिकित्सकों द्वारा भ्रूण - परीक्षण किया जा रहा है और अनचाहे भ्रूणों को समाप्त किया जा रहा है। चिकित्सक विविध उपकरणों की सहायता से मानव

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

शरीर के अंग निकाल कर तस्करों को प्रोत्साहित कर रहे है। किसान जहरीले रसायन और कीटनाशक छिड़ककर पैदावार बढ़ा रहे हैं। इन फसलों से उत्पादित अनाज से लोगों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है। विज्ञान के द्वारा आविष्कृत उपकरणों के कारण ही ध्वनि प्रदूषण फैल रहा है; निकलने वाले धुएं से वायु प्रदूषित हो रही है।

6. एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?

उत्तर एक संवेदनशील, युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में हमारी भूमिका यह है कि मैं विज्ञान के जिस यंत्र की बुराई के बारे में जानता हूं उसका उपयोग करने से या उससे दूर रहने का प्रयास करता हूँ। जैसे मैं प्लास्टिक थैलियों तथा प्लास्टिक से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का बिल्कुल उपयोग नहीं करता हूँ और न दूसरों को उपयोग करने की सलाह देता हूँ। फसलों में कीटनाशक तथा जहरीले रसायनों को छिड़कने की कभी भी कोशिश नहीं करता हूँ। भ्रूण हत्या जैसे बुरे कार्य कराने की कभी भी किसी को सलाह नहीं देता हूँ।

7. हिरोशिमा में विज्ञान का जिस तरह दुरुपयोग हुआ वह मानवता के लिए खतरे का संकेत था। वर्तमान में यह खतरा और भी बढ़ गया है। भविष्य में ऐसी घटना की पुनरावृति न हो इस संबंध में अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर हिरोशिमा में जिस तरह विज्ञान का दुरुपयोग हुआ वह मानवता के इतिहास में काला दिन होने के साथ-साथ मनुष्यता के लिए कलंक भी था। विज्ञान की उत्तरोतर प्रगति के कारण यह खतरा दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। यदि विज्ञान का दुरूपयोग न रोका गया तो यह मानवता के अस्तित्व के लिए खतरा बन सकता है। आज आंतकवादियों द्वारा विभिन्न हथियारों का दुरुपयोग किया जा रहा है। वे कुछ ही देर में हजारों लोगों को मौत के घाट उतार देते है। विभिन्न देशों का परमाणु शक्ति सम्पन्न होना तो ठीक है परंतु उनके दुरुपयोग का दुष्परिणाम पूरी दुनिया को भुगतना पड़ेगा।

ऐसी घटनाओं की पुनरावृति रोकने के लिए विश्व के विकसित एवं परमाणु शक्ति संपन्न देशों को आगे आना चाहिए और इसका दुरुपयोग रोने के लिए सशक्त जनमत बनाना चाहिए। इन देशों द्वारा इन देशों पर तुरंत निमंत्रण लगाया जाना चाहिए, परमाणु बम बनाने के लिए आतुर है या जो अपनी परमाणु शक्ति की धौंस अन्य छोटे देशों को दिखाते हैं। यदि ये देश इसके लिए तैयार नहीं होते हैं तो उनके साथ आर्थिक और व्यापारिक संबंध समाप्त कर देना चाहिए।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

व्यावहारिक व्याकरण एवं रचना

अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रश्न संख्या (1 से 5 तक)।

साहस की जिन्दगी सबसे बड़ी होती है। ऐसी जिन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिल्कुल बेखौफ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिन्ता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे है? जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्य को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। आड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना यह साधारण जीव का काम है। क्रान्ति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते है और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते है। साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है जिन सपनों का कोई व्यवहारिक अर्थ नहीं है। साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है। झुण्ड में चलना और झुण्ड मे चरना यह भैंस और भेड़ का काम है। सिंह तो बिल्कुल अकेला होने पर भी मगन रहता है।

1. इस गद्यांश का उचित शीर्षक है-

(अ) जनमत की उपेक्षा (ब) साहसी मनुष्य

(स) मनुष्य और जिन्दगी (द) इनमें से कोई नहीं **(ब)**

2. सबसे बड़ी जिन्दगी होती है-

(अ) दरिया दिली की (ब) साहस की

(स) हास्य की (द) उधारी की **(ब)**

3. दुनिया की असली ताकत होता है-

(अ) कमजोर व्यक्ति (ब) स्वस्थ व्यक्ति

(स) साहसी व्यक्ति (द) रूग्ण व्यक्ति **(स)**

4. झुण्ड में नहीं चलता-

(अ) भेड़ (ब) भैंस

(स) सिंह (द) सियार **(स)**

5. क्रान्ति करने वाले लोग होते हैं-

(अ) वीर (ब) साहसी

(स) बलवान (द) योद्धा **(ब)**

6. अकेला होने पर भी मगन कौन रहता है-

(अ) सियार (ब) भेड़

(स) भैंस (द) सिंह **(द)**

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्व पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।(संख्या 1 से 5 तक)

फूलों की राह पुरानी है
शूलों की राह नयी साथी
सुमनों के पथ पर चरणों के
कितने ही चिह्न पड़े होगें
लालायित फिर भी चलने को
कितने ही चरण खड़े होगें
पर गैल अछूती शूलों की
जो चूमे वही जवानी है
जो लहू सीच कर बढ़ते हैं
उनका ही कूच रवानी है।
जीवन की चाह पुरानी है
मरने की चाह नयी साथी
फूलों की राह पुरानी है
शूलों की राह नयी साथी।

1. प्रस्तुत पद्यांश का उचित शीर्षक है-

(अ) जीवन की चाह (ब) नई राह

(स) सुमन के पथ (द) गैल अछूती शैल **(अ)**

Scanned with OKEN Scanner

2. 'फूल' प्रतीक है-

(अ) कोमलता का (ब) कठोरता का

(स) संकटों का

द) सुन्दर कल्पनाओं का (अ)

3. 'गैल अछूती' से तात्पर्य है-

(अ) जिस रास्ते को किसी ने छुआ नहीं

(ब) रास्ता अछूता है

(स) जो गीला, अछूत रास्ता है

(द) जिस रास्ते पर आज तक कोई गाया नहीं(द)

4. 'जो लहू सींच कर बढ़ते है' किसके लिए कहा गया है-

(अ) साहसी (ब) वीर

(स) पराक्रमी (द) उपर्युक्त सभी (द)

5. 'कूच करना' मुहावरे का अर्थ है-

(अ) भाग जाना (ब) प्रस्थान करना

(स) कुछ नया करना (द) रूके रहना (ब)

6. किसकी राह पुरानी बताई गई है-

(अ) शूलों की (ब) फूलों की

(स) तलवारों की (द) अंगारों की (ब)

विज्ञापन - लेखन

1. आपके शहर में विश्व पुस्तक मेले का आयोजन होने जा रहा है, इसके लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर-

पुस्तक -प्रेमियों के लिए शुभ-सूचना

आपके शहर में

विश्व पुस्तक मेले का आयोजन

दिनांक : 1 जनवरी, 2025 से 05 जनवरी, 2025 तक

रामलीला मैदान सीकर में

मेले मे सभी भाषाओं तथा अनेक लेखकों-प्रकाशकों की पुस्तकें उचित मूल्य पर उपलबध है।

आयोजक

नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया

एक बार अवश्य पधारें।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

2. **'नव अंकुर' विधवा महिला सहायता संस्था जयपुर द्वारा बनाई गई कारपेट की बिक्री हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।**

उत्तर-

नव-अंकुर विधवा महिला सहायता संस्था, जयपुर

कॉरपेट प्रदर्शनी

दिनांक 01 अप्रैल, 2025 से 07 अप्रैल, 2025 तक

सुनहरा अवसर ! ! 30 प्रतिशत छूट ! सुनहरा अवसर !

संस्थान में हस्तकला निर्मित सुन्दर व कलात्मक कॉरपेट ब्रिकी हेतु प्रदर्शनी रखी गई है जिसमें पधारकर एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

स्थान

नव-अंकुर विधवा महिला सहायता संस्थान, जयपुर

समय :- सुबह 10:00 से सांय : - 6:00 तक

3. **आपके विद्यालय में S.U.P.W शिविर में अनुपयोगी सामग्री से निर्मित उपयोगी सामग्री ब्रिकी हेतु एक विज्ञान लिखिए।**

उत्तर-

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सामी (सीकर)

सुनहारा अवसर ! **सुनहरा अवसर!**

विद्यालय में S.U.P.W शिविर में अनुपयोगी सामग्री से निर्मित उपयोगी सामग्री की बिक्री हेतु लगी प्रदर्शनी में आइए ! मनभावन सामग्री को उचित मूल्य पर खरीद कर ले जाइए !!

आपके घर की शोभा बढ़ाइए!!!

प्रदर्शनी में पधार कर छात्रों का उत्वाहवर्द्धन कीजिए!

दिनांक : 14 फरवरी, 2025

समय : प्रात: 09:00 बजे से सांय 4:00 बजे तक

स्थान : रा.उ.मा.वि. सामी

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

4. **आपके शहर जयपुर में आयोजित निदेशालय द्वारा राष्ट्रीय हैण्डलूम उत्पादों का प्रदर्शन-बिक्रय मेला आयोजित किया जा रहा है। इसका एक विज्ञापन तैयार कीजिए।**

उत्तर-

जयपुर शहर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला

नेशनल हैण्डलूम एक्सपो

दिनांक : 1 जनवरी, 2025 को 15 जनवरी, 2025 तक

समय : दोपहर 12 बजे से रात्रि 9 बजे तक

स्थान : स्टेच्यू सर्किल के पास

15 प्रतिशत छूट !

! हथकरधा एवं हस्तशिल्प के विविध आकर्षक उत्पाद !!

<u>आयोजक</u>

उद्योग दिनेशालय, जयपुर — **विकास आयुक्त (हस्तकला)**

जयपुर — **भारत सरकार**

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

पत्र-लेखन

पत्रों के प्रकार- पत्रों को दो भागों में बांटा जा सकता है-

1. औपचारिक-पत्र **2. अनौपचारिक-पत्र**

1. औपचारिक-पत्र :- औपचारिक पत्र के अंतर्गत प्राधानाचार्य को पत्र, सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों को पत्र, संपादक को पत्र, व्यावसायिक पत्र आदि को शामिल किया जाता है।

2. अनौपचारिक-पत्र :- व्यक्तिगत या पारिवारिक पत्रों को अनौपचारिक पत्रों में शामिल किया जाता है, पिता, माता या मित्र के पत्र, बधाई-पत्र, निमंत्रण पत्र और संवेदना पत्र इसमें शामिल किये जाते हैं।

पत्र के मुख्य अंश:-

1. प्रेषक का पता और दिनांक - व्यक्तिगत पत्रों में ऊपर दाहिनी ओर प्रेषक अपना पता व पत्र लेखन की तिथि लिखता है। आजकल इसे बाई ओर भी लिखा जाता है।

2. विषय संकेत : - औपचारिक पत्रों में विषय शीर्षक देकर विषय संकेत लिखा जाता है जिसे पत्र के विषय की जानकारी मिल जाती है।

3. संबोधन तथा अभिवादन :- औपचारिक पत्रों में मान्यवर, महोदय आदि आदर सूचक शब्दों से संबोधन किया जाता है। अनौपचारिक पत्रों में अपने से बड़ों के लिए आदरणीय, पूजनीय, पूजनीया, माननीय आदि का प्रयोग किया जाता है।

अपने से छोटों के लिए- प्रिय, चिरंजीवी, अनुज, सुश्री, प्यारी आदि।

हम उम्र के लिए - प्रिय मित्र, प्रिय बंधु आदि।

4. विषय वस्तु :- यह पत्र का मुख्य अंग है। इस भाग में संबंधित विषय-वस्तु का संक्षिप्त और स्पष्ट विवरण लिखना चाहिए।

5. समापन सूचक शब्द :- पत्र की समाप्ति पर प्रेषक को पत्र प्राप्तकर्ता के संबंध के अनुसार समापन सूचक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अपने से बड़ों के लिए- आपका आज्ञाकारी, आपका प्रिय आदि।

बराबर वाले के लिए - अभिन्न मित्र या सखी, तुम्हारा परम् मित्र या सखी।

अपने से छोटो के लिए - तुम्हारा शुभचिंतक या तुम्हारा अग्रज या पिता/माता आदि शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

औपचारिक पत्रों में - प्रार्थी, भवदीय/भवदीया, आपका आज्ञाकारी शिष्य, आपकी आज्ञाकारी शिष्या आदि।

6. पत्र प्राप्त करने वाले का पता - यह प्राय: अंत में लिखा जाता है। पत्र लिफाफे में बंद है तो उसके ऊपर लिखा जाता है।

औपचारिक पत्रों में यह सबसे पहले/प्रारम्भ में बांई ओर लिखा जाता है।

पत्र लिखते समय निमन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. कागज अच्छे किस्म का हो।
2. लिखावट सुन्दर व स्पष्ट हो।
3. वर्तनी की त्रुटियाँ न हो।
4. विराम चिह्नों का उचित प्रयोग।
5. तिथि, अभिवादन, अनुच्छेद का उचित प्रयोग आदि।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

प्रार्थना-पत्र

1. अपने आपको राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुमेरपुर (पाली) का छात्र मानकर अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को भौतिक भ्रमण पर जाने की अनुमति के लिए एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उत्तर- सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

सुमेरपुर (पाली)

विषय :- शैक्षणिक भ्रमण पर जाने की अनुमति हेतु।

मान्यवर,

सादर निवेदन है कि मेरी कक्षा के सभी छात्र-छात्राएँ शैक्षिक-भ्रमण पर जाना चाहते है। इससे हमारा ज्ञानवर्द्धन तो होगा ही साथ ही अन्य जगह की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व प्राकृतिक सौन्दर्य की जानकारी मिल सकेगी। हम इस बार उदयपुर, चितौड़गढ व माउंट आबू का भ्रमण करना चाहते है। इसके लिए कक्षाध्यापक जी व शारीरिक शिक्षक महोदय का मार्गदर्शन प्राप्त है।

अत: हमें शैक्षिक-भ्रमण पर जाने की अनुमति प्रदान कर अनुग्रहित करें।

दिनांक : 10 नवम्बर, 2025

आपका आज्ञाकारी शिष्य

अजय कुमार

कक्षा - 10

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

सुमेरपुर (पाली)

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

2. प्रधानचार्य राजकीय माध्यमिक विद्यालय मन्दसौर (पाली) की ओर से अपने जिले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र लिखिए। जिसमें विद्यालय के छात्रों के स्वास्थ्य परीक्षण का निवेदन हो।

उत्तर-

कार्यालय प्रधानाचार्य राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मन्दसौर

क्रमांक : रा.उ.मा.वि./मन्दसौर/100/2024-25 **दिनांक :** 2-01-2025

प्रेषक,

प्रधानाचार्य,

रा.उ.मा.वि. मन्दसौर, पाली

सेवामें,

श्रीमान मुख्य चिकित्सा अधिकारी,

पाली

विषय : छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण करवाने हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी शिक्षा विभाग के आदेश की अनुपालना में छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण विद्यालय परिसर में करना अनिवार्य है।

इस संबंध में विद्यालय में अध्ययनरत 700 छात्रों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए चिकित्सकों की एक टीम अतिशीघ्र विद्यालय में भिजवाने की कृपा करें।

भवदीय

प्रधानाचार्य

राउमावि, मन्दसौर

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

3. स्वयं को आलोक कुमार मानते हुए अपने मित्र को जन्म-दिवस के उपलक्ष में बधाई-पत्र लिखिए।

उत्तर-

जय भवन

आदर्श नगर, जयपुर

दिनांक : 20 जनवरी, 2025

प्रिय मित्र नवीन,

सप्रेम नमस्ते,

कल तुम्हारा पत्र मिला, तुमने अपने जन्म-दिवस के अवसर पर आयोजित पार्टी में मुझे सम्मिलित होने के लिए लिखा है। मैं इस अवसर पर अवश्य आना चाहता था परन्तु माताजी के स्वास्थ्य खराब होने के कारण आने में असमर्थ हूँ। मैं तुम्हारे जन्मदिवस के शुभ अवसर पर तुम्हे बधाई देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। मैं तुम्हारे लिये एक भेंट भेज रहा हूँ इसे स्वीकार करना और मेरी अनुपस्थिति पर नाराज मत होना।

पुन: बधाई एवं अनेक शुभकामनायें। स्नेह-कुशलपत्र की आकांक्षा के साथ

तुम्हारा मित्र

आलोक कुमार

4. आप सीकर निवासी संजय है। कोटा में अध्ययन कर रहे अपने छोटे भाई विजय को पत्र लिखिए, जिसमें अध्ययन के साथ-साथ खेलों में भी भाग लेने की सलाह दीजिए।

सीकर

15 फरवरी, 2025

प्रिय अनुज विजय,

शुभाशीष !

तुम्हारा पत्र मिला। जानकर बहुत खुशी हुई कि तुम्हारी पढ़ाई अच्छी चल रही है। पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद, व्यायाम व मनोरंजन भी शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक हैं। यह अच्छी बात है कि तुम्हारे विद्यालय में खेलकूद अनिवार्य कर रखे हैं। तुम्हे भी अध्ययन के साथ-साथ खेलों में भी भाग लेना चाहिए। इससे हमारा सर्वांगिण विकास होता है।

अन्त में मेरा यही कहना है कि कक्षा में ध्यान लगाकर सुनना तथा पढ़ाये हुए पाठ को अच्छी तरह से पढ़कर याद करना। साथ ही खेलों में भी अवश्य भाग लेना

तुम अपने लक्ष्य को प्राप्त करो। इसी कामना के साथ।

तुम्हारा शुभेच्छु

संजय

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

निबंध-लेखन

परीक्षापयोगी कुछ महत्त्वपूर्ण निबंध

1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
2. पर्यावरण प्रदूषण
3. विद्यार्थी जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व
4. आतंकवाद एक वैश्विक समस्या
5. योग एवं खेलकूद का शिक्षा में महत्व
6. चुनावी परिदृश्य
7. राजस्थान के प्रमुख त्योहार व लोक संस्कृति
8. विद्यार्थी जीवन में अनुशासन
9. मेरा प्रिय साहित्यकार
10. जीवन की अविस्मरणीय घटना
11. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति
12. भाषा का महत्व
13. महंगाई एवं बेरोजगारी एक ज्वलंत समस्या

शेखावाटी मिशन - 100

संज्ञा

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ होता है – नाम अर्थात किसी भी वस्तु, प्राणी, स्थान तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहा जाता हैं।

संज्ञा के भेद – संज्ञा के प्रमुखतः निम्नलिखित तीन भेद होते हैं ।

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति विशेष, वस्तु विशेष, स्थान विशेष के नाम का बोध होता हैं उसे व्यक्ति वाचक संज्ञा कहा जाता हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती हैं सामान्य का नहीं।

   जैसें– राम, श्याम, सीता, गीता, भारत, हिमालय, गंगा, दीपावली, सोमवार, दैनिक भास्कर, आगरा, ताजमहल आदि।

   सामान्यत व्यक्ति वाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, पर्वतों, नदियों, त्योहारों, वारों, समाचार पत्रों, नगरों, गाँवों आदि के नामों को शामिल किया जाता हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञा** – जिन शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान की सम्पूर्ण जाति के नाम का बोध होता है उसे जाति वाचक संज्ञा कहते हैं ।

   जातिवाचक संज्ञा सामान्य का बोध कराती हैं विशेष का नहीं।

   जातिवाचक संज्ञा में गाय, आदमी, पुस्तक, पेड़, पंखा, पहाड़, नदी, समुद्र नगर, गाँव, शहर, कबूतर, आदि शब्दों को शामिल किया जाता हैं।

3. **भाववाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से प्राणियों या वस्तुओं के गुण, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं अर्थात् मनुष्य के मन में उत्पन्न होने वाले भाव के नाम को ही भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

   जैसें– भय, क्रोध, दया, उत्साह, चिंता, बचपन, बुढ़ापा आदि।

   विशेष– किसी जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय शब्द के साथ प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञा शब्द की रचना की जा सकती हैं।

जैसें–

पशु	+ ता	– पशुता
बच्चा	+ पन	– बचपन
मम	+ ता/त्व	– ममता/ममत्व
निज	+ त्व	– निजत्व
बुरा	+ आई	– बुराई
मोटा	+ आपा	– मोटापा
थकना	+ आवट	– थकावट
दूर	+ ई	– दूरी

महत्वपूर्ण प्रश्न

01. किसी भाव, अवस्था, गुण अथवा दशा के नाम को...... .... भाववाचक संज्ञा कहते है।
(मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)

01. प्रायः गुण दोष अवस्था, व्यापार, अर्मूत भाव तथा क्रिया ....संज्ञा के अंतर्गत आते हैं। (मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2023)
उत्तर–भाववाचक संज्ञा

03. संज्ञा किसे कहते है इसके कितने भेद होते हैं?
उत्तर–संज्ञा का शाब्दिक अर्थ होता है – नाम अर्थात किसी भी वस्तु, प्राणी, स्थान तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहा जाता हैं।
संज्ञा के भेद – संज्ञा के प्रमुखतः निम्नलिखित तीन भेद होते हैं। व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक

04. व्यक्तिवाचक संज्ञा किसे कहते है? उदाहरण सहित बताए।
उत्तर–जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति विशेष, वस्तु विशेष, स्थान विशेष के नाम का बोध होता हैं उसे व्यक्ति वाचक संज्ञा कहा जाता हैं।
व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती हैं सामान्य का नहीं।

05. जाति वाचक संज्ञा किसे कहते हैं?
उत्तर–जिन शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान की सम्पूर्ण जाति के नाम का बोध होता है उसे जाति वाचक संज्ञा कहते हैं ।

06. भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं?
उत्तर–जिस संज्ञा शब्द से प्राणियों या वस्तुओं के गुण, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते है।

07. भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना किन शब्दों से की जा सकती है?
उत्तर–किसी जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय शब्द के साथ प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञा शब्द की रचना की जा सकती हैं।

08. निम्नलिखित शब्दों में से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक व भाववाचक संज्ञा शब्दों को छाँटकर लिखिए–
उत्तर–आदमी, लड़की, राम, बच्चा, पशु, हिमालय, बचपन, हँसी, क्रोध, आगरा, गौरव।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

सर्वनाम

⇒ सर्वनाम शब्द सर्व+नाम दो शब्दों के योग से बना है। जिसमें सर्व का अर्थ होता है सभी तथा नाम का अर्थ होता है संज्ञा अर्थात् सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते है।

परिभाषाः— संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते है। **जैसे** —मैं, तुम, हम, यह, वह, कोई, किसी, कौन, जो, आदि

सर्वनाम के भेदः— सर्वनाम के निम्नलिखित 6 भेद होते है।

1. पुरुषवाचक	2. निश्चयवाचक
3. अनिश्चयवाचक	4. प्रश्नवाचक
5. निजवाचक	6. सम्बंधवाचक

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम**ः— जिन सर्वनामों का प्रयोग वक्ता या लेखक के द्वारा अपने नाम, श्रोता के नाम तथा श्रोता के अलावा अन्य किसी के नाम के स्थान पर किया जाता है, उसे पुरुष वाचक सर्वनाम कहते है।

पुरुषवाचक सर्वनाम के निम्नलिखित **तीन भेद** होते है।

(i) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम ः— वक्ता या लेखक के द्वारा अपने नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उन्हें उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे—मैं, हम, मेरा, मैनें, हमें आदि।

(ii) मध्यम पुरुष वाचक सर्वनामः— वक्ता या लेखक के द्वारा श्रोता के नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उन्हें मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे—तू, तुम, आप, आप सब आदि।

(iii) अन्य पुरुष वाचक सर्वनामः— वक्ता या लेखक के द्वारा श्रोता के अलवा अन्य किसी के नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उन्हें अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे— यह, वह, ये, वे, उन्होनें, उन्हें आदि।

2. **निश्चयवाचक सर्वनाम**ः—किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निश्चित संकेत करते हुए उनके नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है। जैसे— यह, वह, ये, वे।

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम ः—जिन सर्वनाम शब्दों से किसी व्यक्ति या वस्तु की अनिश्चतता का बोध होता है तो उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे— कोई, किसी आदि

(4) निजवाचक सर्वनामः— जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता अपने लिए, अपनेपन के रुप में करता है तो उसे निज वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे—स्वयं, खुद, स्वतः, आप ही, अपना, अपनी, अपने आदि।

जैसे—"मैं अपनी पुस्तक पढ़ता हूँ।" यहाँ 'मैं' शब्द उत्तम पुरुष तथा "अपनी" शब्द निजवाचक सर्वनाम है।

(5) प्रश्नवाचक सर्वनामः— जिन सर्वनाम शब्दों से किसी प्रश्न का बोध होता है। उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते है। जैसे—कौन, क्या, किसे आदि।

(6) सम्बन्धवाचक सर्वनामः— दो उपवाक्यों में प्रयुक्त संज्ञा शब्दों के बीच सम्बंध दर्शानें वाले सर्वनाम शब्द को सम्बंध वाचक सर्वनाम कहते हैं। **जैसे**—जो, जिसे, जिसका, जिसकी, जिसके आदि

महत्त्वपूर्ण प्रश्नः—

1. सर्वनाम किसे कहते है, इसके कितने भेद होते हैं?
2. पुरुषवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं, इसके कितने भेद होते है।
3. पुरुषवाचक सर्वनाम के भेदों को उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।
4. निश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते है, उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।
5. अनिश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते है, उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।
6. निजवाचक सर्वनाम किसे कहते है, उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

विशेषण

ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेषण कहा जाता है। जैसे–नीला, काला, हरा, नया, मोटा, ताजा, पुराना आदि।

⇒ विशेषण शब्दों के द्वारा जिस शब्द की विशेषता प्रकट की जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है।

⇒ विशेषण के निम्नलिखित **चार भेद** होते है।

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेत वाचकविशेषण

1. गुणवाचक विशेषण–ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द के गुण, दोष, दशा, रंग, रूप, स्थान आदि विशेषताओं को प्रकट करते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते है। जैसे–भला आदमी, बुरा आचरण, टूटी कुर्सी, काला कुत्ता, सुन्दर बालक, भारतीय नारी, मीठा आम आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण– ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की संख्या को प्रकट करते है, संख्यावाचक सर्वनाम कहलाते है। इसके दो उपभेद किए जाते हैं।

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण– जिन विशेषण शब्दों के द्वारा किसी निश्चित संख्या को प्रकट किया जाता है। उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते है। जैसे–पाँच आदमी, दस लड़के, सौ रुपये, तीनों लोक आदि।

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण– जिन विशेषण शब्दों के द्वारा किसी अनिश्चित संख्या को प्रकट किया जाता है। उसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते है। जैसे–कुछ लोग, थोड़े रुपये आदि

3. परिमाण वाचक विशेषण–ऐसे शब्द जो किसी वस्तु या पदार्थ के नाप, तौल या मात्रा को प्रकट करते है, परिमाण वाचक विशेषण कहलाते है।

इसके भी दो भेद होते है।

(i) निश्चित परिमाण वाचक– जिन विशेषण शब्दों के द्वारा किसी निश्चित मात्रा को प्रकट किया जाता है। उसे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते है। जैसे –दो लीटर दूध, पाँच किलो चीनी, तीन मीटर कपड़ा आदि।

(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण–जन विशेषण शब्दों के द्वारा किसी अनिश्चित मात्रा को प्रकट किया जाता है। उसे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते है।

जैसे–थोड़ा दूध, कम चीनी, थोड़ा, कपड़ा आदि

4. संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण–जब किसी सर्वनाम शब्द को किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करते हुए वाक्य में विशेषण के रूप में लिख दिया जाता है, तो वह संकेत वाचक या सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे– **इस** गेंद को मत फेंको **यह** पुस्तक मेरी है। **वह** घर रमेश का है।

प्रविशेषण

ऐसे शब्द जो विशेषण की विशेषता बताते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं **जैसे**– वह **बहुत** परिश्रमी है।
यह **बहुत** छोटा मैदान है।
यहाँ एक **अत्यंत** ऊँचा महल था।

विशेषण शब्द की रचना

कुछ शब्द मूल रूप से विशेषण ही होते है लेकिन किसी संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया या अव्यय शब्द के साथ प्रत्यय जोड़कर विशेषण शब्द बनाये जा सकते हैं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्नः–

1. वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें..................... कहते है। (मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)
2. विशेषण किसे कहते है इसके कितने भेद होते है।
3. गुणवाचक विशेषण किसे कहते है, उदाहरण सहित बताइये।
4. संख्यावाचक विशेषण किसे कहते है इसके कितने भेद होते है।
5. परिमाणवाचक विशेषण किसे कहते है इसके कितने भेद होते है।
6. संकेत वाचक विशेषण किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइये।
7. निश्चय वाचक सर्वनाम व संकेत वाचक विशेषण में क्या अंतर होता है?

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

क्रिया

जिस शब्द के द्वारा किसी कार्य के करनें या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहा जाता है।

⇒ क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता है। किसी भी वाक्य में कर्त्ता, क्रम तथा काल की जानकारी क्रिया पद के माध्यम से ही प्राप्त होती है।

क्रिया के भेद :–

कर्म के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित दो भेद होते है।

1. **सकर्मक क्रिया** – जिस क्रिया का फल वाक्य में प्रयुक्त कर्म कारक शब्द पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे–पूनम **चित्र** बना रही है।

– राहुल **पुस्तक** पढ़ रहा है।

– विवेक **सितार** बजा रहा है।

सकर्मक क्रिया के निम्नलिखित दो भेद होते है।

(i) एकर्मक क्रिया–जब किसी वाक्य में एक ही कर्म कारक शब्द का प्रयोग किया जाता है। उसे एक कर्मक क्रिया कहा जाता है। **जैसे** –बच्चे **पुस्तक** पढ़ रहे हैं।

– पार्थ **टीवी** देख रहा है।

(ii) द्विकर्मक क्रिया–जब किसी वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्मकारक शब्द प्रयुक्त होते है। तो उसे द्विकर्मक क्रिया कहा जाता है। **जैसे**–गुरुजी **छात्रों** को **पाठ** पढ़ा रहे है।

2. **अकर्मक क्रिया**– जब किसी वाक्य में कर्म का प्रयोग किए बिना ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है अर्थात् क्रिया का फल वाक्य में प्रयुक्त कर्त्ता पर पड़ता है। उसे अकर्मक क्रिया कहते है। जैसे – राधा हँसती है।

– राम दौड़ रहा है।

– बच्चे सो रहे है।

रचना के आधार पर क्रिया के भेदः– इस आधार पर क्रिया के पाँच भेद माने जाते है।

1. संयुक्त क्रिया–जब किसी वाक्य में दो या दो से अधिक अलग–अलग धातुओं से बनी क्रिया का एकसाथ प्रयोग होता है उसे संयुक्त क्रिया कहा जाता है।

जैसे– बच्चा पढ़ने लग गया है।

2. नामधातु क्रिया– जिन क्रिया शब्दों की रचना संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों से होती है। उसे नामधातु क्रिया कहा जाता है।

जैसे–संज्ञा–हाथ–हथियाना, बात–बतियाना

सर्वनाम–अपना–अपनाना

विशेषण–गर्म–गरमाना

3. प्रेरणार्थक क्रिया– जब किसी वाक्य में कर्ता स्वयं कोई कार्य न करके किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहा जाता है।

जैसे – माँ बेटे को दूध पिलाती है।

– मोहन राकेश से पत्र लिखवाता है।

4. पूर्वकालिक क्रिया–जब किसी वाक्य में एक क्रिया के समाप्त होनें के बाद दूसरी क्रिया सम्पन्न होती है तो वहाँ पहले समाप्त क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते है। जैसे–बच्चा दूध **पीकर** सो गया।

– मैं खाना **खा कर** आया हूँ।

5. कृदन्त क्रिया–धातु(क्रिया) के अंतं में प्रत्यय जोड़नें से जिस क्रिया की रचना होती है उसे कृदन्त क्रिया कहते है। **जैसे**– चल–चलना, चलता, चलकर

– पढ़–पढ़ना, पढ़ता,पढ़कर

– लिख–लिखना, लिखता, लिखकर

महत्वपूर्ण प्रश्नः–

1. वे क्रियाएँ जिनके साथ कर्म प्रयुक्त नहीं होता, उसे... ....क्रिया कहते है।(मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)
2. क्रिया किसे कहते हैं?
3. कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते है।
4. सकर्मक क्रिया का फल किस पर पड़ता है।
5. किस क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है।
6. सकर्मक क्रिया के कितने भेद होते है।
7. जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग नहीं होता वह............ क्रिया होती है।
8. रचना के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते है।

शेखावाटी मिशन-100

Scanned with OKEN Scanner

अव्यय

अव्यय शब्द अ और व्यय के जोड़ से बना हैं। जिसमें 'अ' का अर्थ होता है – नहीं तथा व्यय को अर्थ होता है खर्च या परिवर्तन अर्थात् ऐसे शब्द जिनमें किसी भी परिस्थिति में परिवर्तन नहीं होता हैं उसे अव्यय शब्द कहा जाता हैं।

परिभाषाः– ऐसे शब्द जिनके स्वरूप में लिंग, वचन, काल आदि के प्रभाव से कोई परिवर्तन या विकार नहीं होता उसें अव्यय या अविकारी शब्द कहा जाता हैं।

अव्यय के भेदः–

1. क्रियाविशेषण   2. समुच्चयबोधक
3. सम्बन्धबोधक   4. विस्मयादि बोधक

1. क्रियाविशेषण अव्ययः– ऐसे अव्यय शब्द जो वाक्य में क्रिया से ठीक पहले प्रयुक्त होकर क्रिया शब्द की विशेषता को प्रकट करते हैं उन्हें क्रियाविशेषण अव्यय कहा जाता हैं।

जैसे – पूनम **कल** आयेगी।
तुम **यहाँ** बैठ सकते हो।
वह **तेज** चलता है।
रमेश **बहुत** बोलता है।

क्रियाविशेषण अव्यय के भेदः– क्रियाविशेषण अव्यय शब्दों के द्वारा क्रिया के घटित होने के समय, स्थान, रीति एवं मात्रा को प्रकट किया जाता है जिसके कारण इसके निम्न चार भेद किये जाते हैं।

1. काल वाचक क्रियाविशेषणः– जो क्रियाविशेषण शब्द वाक्य में क्रिया के घटिक होने के समय/काल को प्रकट करते हैं वे कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसें– **रिंकू कल** आएगी।
राहुल अब जा सकते हो।
राम तुम **बाद** में आना।
वह **दिनभर** बैठा रहा।

2. स्थान वाचक क्रिया विशेषणः– जो क्रिया विशेषण शब्द वाक्य में किसी स्थान को प्रकट करते है तो वे स्थान वाचक क्रिया विशेषण कहलाते है।

जैसें– तुम आगे चलो।
हमारे आस–पास रहना।
कोई बाहर खड़ा है।
तुम इधर आना।

3. परिणाम वाचक क्रिया विशेषणः– जो क्रिया विशेषण शब्द वाक्य में किसी क्रिया की मात्रा को प्रकट करते है वे परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहलाते है।

जैसें– रमेश **बहुत** बोलता है।
वह दूध बहुत पीता है।
तुम्हें चाय कम पीनी चाहिए।
नमक थोड़ा डाला गया।

4. रीतिवाचक क्रिया विशेषण–जिन क्रिया विशेषण शब्दों के द्वारा क्रिया की शैली/ढंग/तरीके को प्रकट किया जाता है उन्हें रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहा जाता है।

जैसें– पूजा धीरे–धीरे लिखती है।
पिताजी जल्दी–जल्दी चलते है।
वह कार से आएगी।

2. समुच्चय बोधक अव्यय शब्द

ऐसे अव्यय शब्द जो दो शब्दों व दो वाक्यों को जोड़नें के लिए प्रयुक्त होते है वे समुच्चय बोधक अव्यय शब्द कहलाते हैं।

समुच्चय बोधक अव्यय शब्द भी दो प्रकार के होते है।

1. समानाधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय
2. व्याधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय

(1) समानधिकरण समुच्चय बोधक अव्ययः–जब कोई अव्यय शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़नें के लिए अकेला ही प्रयुक्त होता है तो वह समानाधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय कहा जाता है। सामान्यतः साधारण वाक्य में दो शब्दों तथा संयुक्त वाक्यों में दो वाक्यों को जोड़नें में प्रयुक्त शब्द

जैसें– भरत आया एवं राम चला गया।
राम और श्याम घनिष्ठ मित्र है।
बैठ जाओ अथवा चले जाओ।
दो और दो चार होते है।
उसने कठिन मेहनत की परन्तु सफल नहीं हुआ।

(2) व्याधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय शब्दः–

जब कोई अव्यय शब्द प्रधान उपवाक्य को आश्रित उपवाक्य से जोड़नें के लिए अपने संयोजक शब्द के

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

साथ प्रयुक्त होता है। तो वहाँ उसे व्याधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय शब्द कहा जाता है। सामान्यतः मिश्र वाक्य को जोड़नें वाले अव्यय शब्द व्याधिकरण अव्यय माने जाते है।

जैसे– यदि तुम मेहनत करते तो सफल हो जाते।

अगर तुम मेरे पास आते तो मैं तुम्हारी सहायता करता।

यदि तुम अपनी खैर चाहते हो तो यहाँ से भाग जाओ।

3. **सम्बंध बोधक अव्ययः**–जो अव्ययव शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर उसका वाक्य के अन्य शब्दों के साथ सम्बंध स्थापित करते हैं। उन्हें सम्बंध बोधक अव्यय कहा जाता है।

जैसे– विद्यालय के समीप एक मंदिर है।

ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती।

वह पिताजी के साथ मेला देखने गया।

चोर चौराहे तक पैदल गया।

4. **विस्मयादिबोधक अव्ययः**– ऐसे अव्यय शब्द जो वक्ता के हर्ष, शौक, घृणा, सम्बोधन, विस्मय, स्वीकृति, अनुमोदन आदि मनोभावों को प्रकट करते हैं, उन्हें विस्मयादि बोधक अव्यय कहते है।

जैसे– वाह! कितना सुन्दर दृश्य है।

अहा! मैं परीक्षा में सफल हो गया।

अरे! तुम यहाँ क्या कर रहे हो।

विशेष– निपात–निपात भी एक प्रकार का अव्यय शब्द होता है, यह वाक्य में किसी चरण या पद की पूर्ति हेतु प्रयुक्त किए जाते है। अर्थात् वाक्य में किसी शब्द के बाद के प्रयुक्त होकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल प्रदान करते है।

जैसे– मुझे हिन्दी भी पढ़नी है।

मुझे भी हिन्दी पढ़नी है।

प्रमुख निपात शब्दः– ही, भी, तो, तक, मात्र, भर, केवल आदि।

महत्वपूर्ण प्रश्नः–

0. वे.................... शब्द, जो दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते है। (मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)

संधि

दो वर्णो के परस्पर मेल से बने शब्द के लेखन और उच्चारण में कोई परिवर्तन आ जाता है उसे संधि कहा जाता है। यदि + अपि = यद्यपि

नमः + ते = नमस्ते

जगत् + ईश = जगदीश

संधि के भेद

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

1. **स्वर संधि** – स्वर + स्वर

जब स्वर के साथ स्वर का मेल होने पर स्वर वर्ण में कोई विकार उत्पन्न होता है तो उसे स्वर संधि कहा जाता है।

जैसे –

यदि + अपि = यद्यपि

विनै + अक = विनायक

रमा + ईश = रमेश

सदा + एव = सदैव

राम + अयन = रामायण

स्वर में होने वाले परिवर्तन के आधार पर इसके पाँच भेद किए जाते है।

1 **यण् स्वर संधि**

इ/ई, उ/ऊ, ऋ + असमान स्वर

↓ ↓ ↓

य् व् र्

जैसे –

स्त्री + अपि = स्त्र्यपि

गति + अनुसार = गत्यनुसार

उपरि + उक्त = उपर्युक्त

अभि + उत्थान = अभ्युत्थान

वाणी + औचित्य = वाण्यौचित्य

नदी + अर्पण = नद्यर्पण

गुरु + ऋण = गुर्वृण

अनु + अय = अन्वय

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

मधु + आचार्य = मध्वाचार्य
गुरु + औदार्य = गुर्वौदार्य
चमू + आक्रमण = चम्वाक्रमण
मातृ + उपदेश = मात्रुपदेश
पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा

2. **अयादि स्वर संधि**

ए ऐ ओ औ + असमान स्वर
↓ ↓ ↓ ↓
अय् आय् अव् आव्

जैसे –

चे + अन = चयन
पो + अन = पवन
गो + एषणा = गवेषणा
नै + इका = नायिका
विधै + अक = विधायक
धौ + इका = धाविका

3. **गुण स्वर संधि**

अ/आ + ई/ई → ए
अ/आ + उ/ऊ → ओ
अ/आ + ऋ → अर्

जैसे –

देव + इन्द्र = देवेन्द्र
महा + इन्द्र = महेन्द्र
रमा + ईश = रमेश
राका + ईश = राकेश
महा + उदधि = महोदधि
नव + ऊढ़ा = नवोढ़ा
महा + ऊर्मि = महोर्मि
देव + ऋषि = देवर्षि
ग्रीष्म + ऋतु = ग्रीष्मर्तु
महा + ऋण = महर्ण

4. **वृद्धि स्वर संधि**

अ/आ + ए/ऐ = ऐ
अ/आ + ओ/औ = औ

जैसे –

सदा + एव = सदैव
तथा + एव = तथैव
जल + ओक = जलौक
परम + ओज = परमौज
भाव + औचित्य = भावौचित्य

5. **दीर्घ स्वर संधि**

अ/आ + अ/आ = आ
इ/ई + इ/ई = ई
उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

जैसे –

मध्य + अवधि = मध्यावधि
जन + अर्दन = जनार्दन
दीप + आधार = दीपाधार
कटक + आकीर्ण = कटकाकीर्ण
कारा + आवास = कारावास
प्रति + इत = प्रतीत
रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
कवि + इन्द्र = कवीन्द्र
अभि + ईप्सा = अभीप्सा
अधि + ईक्षक = अधीक्षक
फणी + इन्द्र = फणीन्द्र
श्री + ईश = श्रीश
मधु + उत्सव = मधूत्सव
चमू + उत्साह = चमूत्साह
सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि
भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व

व्यंजन संधि –

नियम नम्बर 1

क् / च् / ट् / त् / प् + 3, 4 वर्ण, य, र, ल, व सभी स्वर
↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ग् ज् ड् द् ब्

जैसे –

वाक् + ईश = वागीश
अच् + अन्त = अजन्त
षट् + आनन = षडानन
सत् + उपदेश = सदुपदेश
जगत् + ईश = जगदीश

नियम नम्बर 2

क् / च् / ट् / त् / प् + पंचम वर्ण विशेषकर न/म
↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ड़् ञ् ण् न् म्

जैसे – वाक् + मय = वाड़्मय

शेखावाटी मिशन - 100
Scanned with OKEN Scanner

प्राक् + मुख = प्राड्.मुख
उत् + मूलन = उन्मूलन
उत् + नयन = उन्नयन
अप् + मय = अम्मय
षट् + मास = षण्मास
षट् + मूर्ति = षण्मूर्ति
सत् + मति = सन्मति
जगत् + माता = जगन्माता

नियम नम्बर 3

द् + क्, त्, थ्, प्, स् = त्

उद् + कोच = उत्कोच
तद् + क्षण = तत्क्षण
संसद् + सत्र = संसत्सत्र
उद् + तेजक = उत्तेजक

नियम नम्बर 4 'म' का नियम

जब कभी + से पहले 'म्' वर्ण तथा + के बाद क से लेकर म् तक कोई भी वर्ण आता हैं तो संधि कार्य करते समय + से पहले आने वाले म् वर्ण को + के बाद आने वाले वर्ण के पाँचवे वर्ण में बदल देना चाहिए।

लेखन में पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार भी मान्य है।

जैसे –

सम् + चार = सञ्चार/संचार
सम् + गति = सङ्.गति/संगति
अलम् + कार = अलङ्.कार/अलंकार
सम् + न्यासी = सन्नयासी/संन्यासी

– 'म' का नियम – 2

म् + य् र् ल् व् ह्
↓
अनुस्वार

जैसे –

सम् + शय = संशय
सम् + रक्षक = संरक्षक

– 'म' का नियम 3

सम् + कृ धातु से बनने वाला कोई शब्द
↓ ↓
अनुस्वार स्

जैसे – सम् + कृत = संस्कृत
सम् + कृति = संस्कृति

त्/द् का नियम –

त्/द् + च/छ् सत् + चरित्र = सच्चरित्र
↓ उत्/उद् + छेद = उच्छेद
च्

त्/द् + ज/झ सत् + जन = सज्जन
↓ जगत् + जननी = जगज्जननी
ज्

त्/द् + ट तत्/तद् + टीका = तट्टीका
↓
ट्

त्/द् + ड् उत्/उद् + डयन = उड्डयन
↓
ड्

त्/द् + ल उत्/उद् + लेख = उल्लेख
↓
ल्

त्/द् + श् उत्/उद् + श्वास = उच्छ्वास
↓ ↓ उत्/उद् + श्रृंखल = उच्छृंखल
च् छ्

चागम संधि – स्वर + 'छ'
↓
'च्'

जैसे –अनु + छेद = अनुच्छेद
तरु + छाया = तरुच्छाया
प्रति + छाया = प्रतिच्छाया

नियमः– इ/उ + स् त् थ् द् ध् न्
↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्

जैसे – प्रति + स्था = प्रतिष्ठा
अभि + सेक = अभिषेक
युधि + स्थिर = युधिष्ठिर
अनु + संगी = अनुषंगी

शेखावाटी मिशन – 100

Scanned with OKEN Scanner

विर्सग संधि

जब विसर्ग के साथ किसी स्वर अथवा व्यंजन वर्ण का मेल होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन हो जाता है तो वहाँ विसर्ग संधि मानी जाती हैं–

जैसे हैं– नमः + ते– नमस्ते

सरः + ज – सरोज

यजुः + वेद – यजुर्वेद

विर्सग संधि के भेद :– संधि कार्य करने पर विसर्ग में होने वाले परिवर्तन के आधार पर विसर्ग संधि के तीन भेद माने जाते हैं।

(1) सत्व विसर्ग संधि

(2) उत्व विसर्ग संधि

(3) रूत्व विर्सग संधि

(1) **सत्व विर्सग संधिः–** संधि कार्य करते समय जब विसर्ग श् ष् स् वर्ण में बदल जाता हैं तो वहाँ सत्व विसर्ग संधि मानी जाती हैं।

सत्व विसर्ग संधि में निम्नानुसार परिवर्तन होता हैं।

(2) विसर्ग (:) + श् च् छ्

↓

श्

हरिः + चन्द्र – हरिश्चन्द्र

मनः + चिकित्सक – मनश्चिकित्सक

निः + छल – निश्छल

विसर्ग + ट ठ्

↓ धनुः + टीका – धनुष्टीका

ष् धनु + टंकार – धनुष्टंकार

3. **विसर्ग + त् थ् स्**

↓ नमः + ते – नमस्ते

स् अन्तः + तल – अन्तस्तल

4. **इ/उ : + क ख प फ**

↓ बहिः + कार – बहिष्कार

ष् चतुः + पथ – चतुष्पथ

धनुः + पाणि – धनुष्पाणी

2. उत्व विसर्ग संधि

अः + घोष – वर्ण

↓

ओ

यशः + दा – यशोदा

यशः + धरा – यशोधरा

अधः + गति – अधोगति

तपः + भूमि – तपोभूमि

मनः + रोग – मनोरोग

मनः + हर – मनोहर

मनः + विज्ञान – मनोविज्ञान

3. यदि अ के साथ विसर्ग तथा + के बाद अ के अलावा कोई स्वर आता है तो विसर्ग का लोप कर देना चाहिए।

अतः + एव – अतएव

यशः + इच्छा – यशइच्छा

3. रूत्व विसर्ग सन्धि

इ/उ विसर्ग (:) + घोष वर्ण

↓

र्

बहिः + गमन – बहिर्गमन

आयुः + वेद – आयुर्वेद

यजुः + वेद – यजुर्वेद

धनुः + धर – धनुर्धर

ज्योतिः + मय – ज्योतिर्मय

आशीः + वाद – आशीर्वाद

अभ्यास प्रश्न

01. 'गुण स्वर सन्धि' का सही उदाहरण है–

(मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)

(1) रमेश (2) विद्यालय
(3) मतैक्य (4) नीरोग (1)

02. किस विकल्प में सही संधिकार्य नहीं हुआ है–

(1) सुख + ऋत = सुखार्त
(2) परम + ऋत = परमार्त
(3) महा + ऋण = महर्णं
(4) कुल + अटा = कुलटा (2)

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

03 निम्न में से किस विकल्प में सही संधिकार्य हुआ है–
(1) अभि + इप्सा = अभीप्सा
(2) लघु + उर्मि = लघूर्मि
(3) परि + इक्षा = परीक्षा
(4) अधि + ईक्षक = अधीक्षक (4)

04 किस विकल्प में सही संधिकार्य हुआ है–
(1) मनः + चिकित्सक = मनोचिकित्सक
(2) मनः + कामना = मनोकामना
(3) पयः + पान = पयः पान
(4) यशः + इच्छा = याशिच्छा (3)

05 किस विकल्प में सही संधिकार्य नहीं हुआ है–
(1) मनः + चिकित्सा = मनश्चिकित्सा
(2) प्र + ऊढ़ = प्रौढ़
(3) पयः + पान = पयःपान
(4) निर् + रस = निरस (4)

06 'षट्+ऋतु' का शुद्ध संधियुक्त पद है–
(1) षडर्तु (2) षड्तु
(3) षटर्तु (4) षट्तु (2)

07 निम्न में से किस विकल्प में सही संधि विच्छेद किया गया है–
(1) कारावास –कार + आवास
(2) गुड़ाकेश –गुड़ + आकेश
(3) आत्मवलोकन –आत्मा + अवलोकन
(4) शुक्राचार्य –शुक्र + आचार्य (4)

08 किस विकल्प में संधि नहीं है–
(1) नमस्ते (2) पराजय
(3) अतएव (4) नीरोग (2)

09 किस विकल्प में सही संधि कार्य नहीं हुआ है –
(1) प्र + ऋण = प्रार्ण
(2) वसन + ऋण = वसनार्ण
(3) उत्तम + ऋण = उत्तमार्ण
(4) ऋण + ऋण = ऋणार्ण (3)

10 किस विकल्प में सही संधि कार्य हुआ है–
(1) नि+सिद्ध = निषिद्ध
(2) अधः + पतन = अधोपतन
(3) निः (निस्) + चय = निस्चय
(4) दुः (दुर्) + अवस्था = दुरावस्था (1)

11 किस विकल्प में सही संधि कार्य नहीं हुआ है–
(1) विश्व + मित्र = विश्वामित्र
(2) दीन + नाथ = दीनानाथ
(3) मूसल + आधार = मूसलाधार
(4) सत्य + नाश = सत्यानाश (3)

12 संधि की दृष्टि से अशुद्ध विकल्प है–
(1) मनः + अभिराम = मनोभिराम
(2) अंतः + स्थ = अंतःस्थ
(3) अधः + पतन = अधोपतन
(4) पयः + आदि = पयआदि (3)

13 'षण्मार्ग' का सही संधि विच्छेद का चयन कीजिए ?
(1) षट् + मार्ग (2) षड़ + मार्ग
(3) षण् + मार्ग (4) षठ् + मार्ग (1)

14 'अप् + मय' का शुद्ध सन्धियुक्त पद है–
(1) अप्मय (2) अम्मय
(3) अपमय (4) अपम्य (2)

15 'मनोरम' पद में कौन–सी सन्धि है –
(1) स्वर (2) व्यंजन
(3) विसर्ग (4) उपर्युक्त सभी (3)

16 रजः + कण = ?
(1) रजोकण (2) रजकण
(3) रजःकण (4) रजृकण (3)

17 परः + अक्षि = ?
(1) परोक्ष (2) परोक्षि
(3) पराक्ष (4) परःअक्षि (1)

18 किस क्रमांक में दीर्घ संधि का उदाहरण नहीं है?
(1) यथातथ्य (2) यथावश्यकता
(3) यथार्थ (4) तथास्तु (1)

19 किस क्रमांक में सही संधि विच्छेद नहीं हुआ है?
(1) द्वारका + अधीश = द्वारकाधीश
(2) घृणा + आस्पद = घृणास्पद
(3) सुध + अंशु = सुधांशु
(4) शत + आयु = शतायु (3)

20 किस क्रमांक में सही संधि विच्छेद नहीं हुआ है?
(1) विद्या +अर्जन = विद्यार्जन
(2) कारा +आवास = कारावास
(3) यात + आयात = यातायात
(4) मुक्त + अवली = मुक्तावली (4)

21 किस क्रमांक में सही संधि विच्छेद नहीं है?
(1) अभि+ ईष्ट = अभीष्ट
(2) प्रति+ ईक्षा= प्रतीक्षा
(3) अति+ इत = अतीत
(4) वारि + ईश = वारीश (1)

शेखावाटी मिशन - 100

उपसर्ग

वे शब्दांश जो शब्द से पहले जुड़कर मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते है उसे उपसर्ग कहा जाता है। जैसे–पर+देश=प्रदेश

उपसर्ग के भेदः–

हिन्दी भाषा में मुख्यतः तीन प्रकार के उपसर्ग प्रचलित है।

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिन्दी के उपसर्ग
3. विदेशी भाषा के उपसर्ग

संस्कृत के उपसर्ग :– वे शब्दांश जो तत्सम शब्दों से पहले जुड़कर नये शब्द की रचना करते है उन्हें इस श्रेणी में शामिल किया जाता है। इन्हें मूल उपसर्ग भी कहा जाता है। मूल उपसर्गो की कुल संख्या 22 होती है।

मूल उपसर्ग :–

1. **प्र (आगे/अधिक)** –प्रदेश, प्रयोग, प्रकोप, प्रभाव, प्रहार
2. **परा (विपरीत/पीछे/अधिक)** –पराजय, पराकाष्ठा, पराक्रम, पराभव
3. **अप(बुरा/हीन/विपरीत)** –अपयश, अपकीर्ति, अपकर्ष अपमान, अपकार
4. **सम्(अच्छा/पूर्ण शुद्ध)** –सम्मान, संसार, संचार, संयोग, समाचार।
5. **अनु (पीछे/समान)**–अनुचर, अनुगामी, अनुसार, अनुग्रह, अनुज।
6. **अव (बुरा/हीन)** –अवगुण, अवकाश, अवशेष, अवनति, अवतार।
7. **निस् (बिना/बाहर)** –निश्चय, निशुल्क(निःशुल्क), निच्छल, निःसंतान, निष्पाप।
8. **निर् (बिना/बाहर)** निर्लज्ज, निर्विरोध, निरपराध, निर्भय, निर्धन
9. **दुस् (बुरा/विपरीत)**–दुस्साहस, दुःशासन, दुष्कर्म, दुष्कर, दुष्परिणाम।
10. **दुर् (कठिन/बुरा/विपरीत)**–दुर्दिन, दुर्दशा, दुरात्मा, दुरवस्था, दुर्बल।
11. **वि(विशेष/भिन्न)**–विदेश, विषम, विचार, विहार, विजय
12. **आ(आङ.)**–आदेश, आकार, आजीवन, आमरण, आकण्ठ
13. **नि(विशेष/बड़ा)**–नियम, निगम, निदान, निधन,निकास, निवेदन
14. **अधि(प्रधान/श्रेष्ठ)**–अधिगम, अधिकार, अधीक्षक, अधिनियम, अधिवास
15. **अतिः (अधिक/परे)** –अतिशय, अतिक्रमण, अतीश, अतीत, अत्यावश्यक, अत्यन्त।
16. **अभि (पास/सामने)**–अभियुक्त, अभिमान, अभिसार, अभ्यर्थी, अभ्यास
17. **अपि (भी)** –अपिधान, अपिहित, अपितु
18. **सु(अच्छा/सरल)** –सुगम, सुराज, सुपुत्र, सुमार्ग, सुमति, सुशील
19. **उद(ऊपर/श्रेष्ठ)** –उद्गम, उद्धार, उत्तम, उत्कोच, उद्भव
20. **प्रति(हर/सामने/विपरीत)**–प्रतिशत, प्रतिदिन, प्रतिपल, प्रत्यक्ष, प्रत्याया।
21. **परि (चारो ओर)** –परिक्रमा, परीक्षा, परीक्षक, पर्यावरण, पर्यंक, पर्याप्त।
22. **उप (पास/सहायक)**–उपहार, उपकार, उपमान, उपयोजन, उपचार।

संस्कृत के अन्य उपसर्ग–

01 **अन्तर्**– अन्तर्गत, अन्तरात्मा, अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तर्देशीय
02 **प्रादुर्**– प्रादुर्भाव, प्रादुर्भूत
03 बहिस्– बहिष्कार, बहिष्कृत।
04 इति– इतिश्री, इतिहास, इत्यादि।
05 तिरस्– तिरस्कार, तिरस्कृत
06 तद्– तल्लीन, तन्मय,तत्काल, तद्धित, तदुपरान्त।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

07 अधः–अधःपतन, अधोमुख, अधोगति, अधोहस्ताक्षर, अधोवस्त्र।

08 न– नास्तिक,नग, नकुल, नपुंसक।

09 कु– कुपुत्र, कुख्यात, कुसंगति, कुकर्म।

10 सह– सहपाठी, सहकर्मी, सहोदर,सहयोगी।

11. स्व–स्वतंत्र, स्वार्थ, स्वावलम्ब, स्वाध्याय, स्वाधीन, स्वाभिमान, स्वदेश

12 पर–परतन्त्र, पराश्रित, पराधीन, परदेश, परहित

13 पुरर्(पुनः) –पुनर्जन्म, पुनर्वलोकन, पुनर्गणना, पुनर्मतदान, पुनरागमन

14 सत्–सत्संग, सज्जन, सत्कार, सदाचार, सदुपदेश, सत्कार, सद्भावना, सच्चित, सच्चरित्र

15 तद्–तत्सम, तद्भव, तल्लीन, तद्धित, तत्काल, तत्क्षण, तन्यय, तत्पर, तदुपरान्त

16 अ–अज्ञान, अहित, अविवेक, असत्य, अनश्वर, अपात्र

17 अन्–अनुपयोगी, अनुपजाऊ, अनुदित, अनुत्तर, अनीश्वर, अनेक, अनादि, अनंत, अनशन(अन्+अशन) अनृत।

हिन्दी के अन्य उपसर्ग–

01 अन– अनपढ, अनजान, अनमोल, अनहोनी, अनचाही।

02 उ–उचक्का, उजड़ना, उछलना, उखाड़ना।

03 भर– भरपेट, भरपूर, भरसक,भरकम, भरपाई।

04 स– सफल, सपूत, सबल, सजीव, सपरिवार , सशर्त।

05 नाना– नानाप्रकार, नानारूप, नानाजाति, नानाभांति।

06 क–कपूत, कलंक, कठोर।

07 सम–समतल, समकोण, समकक्ष, समदर्शी, समकालीन।

08 नि– निगोड़ा, निहत्था, निठल्ला, निधड़क।

09 अ– अज्ञान, अकाज, अमर, अमूल्य, अगाध, अछूत।

10 चौ– चौराहा, चौपाया, चौमासा, चौरंगा, चौपाल, चौखट।

11. औ–औचक औतार औसर

विदेशी उपसर्ग–

01 बे–रहित– बेघर, बेवफा, बेदर्द, बेवजह, बेइज्जत।

02 ला–बिना– लापरवाह, लाइलाज, लावारिस।

03 ब–सहित– बतौर, बशर्ते, बदौलत, बखूबी।

04 नेक– भला– नेकइंसान, नकनीयत, नेकदिल।

05 एन–ठीक– एनवक्त, एनजगह, एन मौके

06 बर–ऊपर/बाद– बरबाद, बरदाश्त, बरखाश्त, बरकरार।

07 हैड –प्रमुख– हैडमास्टर, हैडऑफिस, हैडबॉय।

08 हॉफ– आधा– हॉफकमीज, हॉफ टिकट, हॉफ पेंट।

09 सब–उप–सबइंस्पेक्टर, सबकमेटी, सबडिविजन।

10 सर–मुख्य–सरताज, सरपंच, सरफरोश, सरकार।

11. बा(सहित) –बाइज्जत, बाकायदा, बाअदब, बामुलायजा

12. खुश(अच्छा) –खुशहाल, खुशकिस्मत, खुशनसीब, खुशबू, खुशनुमा, खुशखबर

13. बद(बुरा) बदकिस्मत, बदहवास, बदहाल, बदनसीब, बदहाल, बदनीयत, बदनाम, बदकार, बदमाश

14. ला(रहित) लाजवाब, लावारिस, लाइलाज, लापरवाह, लापता,

15. ना(नहीं) –नालायक, नाजायज, नापसंद, नाकाम

16. हर–हररोज, हरवक्त, हरकदम, हरदम, हरहाल

17. हम–हमराह, हमजौली, हमवतन, हमउम्र, हमराज, हमसफर।

अभ्यास प्रश्न

1. हिन्दी में उपसर्ग.................... प्रकार के होते है।
(मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

प्रत्यय

जो शब्दांश किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ को बदल देते है और नए अर्थ का बोध कराते है उसे प्रत्यय कहते हैं।

जैसे– मिल+आवट=मिलावट
पढ़+आकू=पढ़ाकू
झूल+आ=झूला

प्रत्यय के भेद–

1. कृत प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

कृत प्रत्यय–वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अन्त में लगकर नए शब्दों की रचना करते हैं उन्हें कृत प्रत्यय कहते है।

कृत प्रतयय के भेदः–

1. कृत वाचक 2. कर्म वाचक
3. करण वाचक 4. भाव वाचक
5. क्रिया वाचक

(1) कृत वाचक–कर्ता का बोध करानें वाले प्रत्यय कृत वाचक प्रत्यय कहलाते है।

जैसे– हार–पालनहार, चाखनहार, राखनहारवाला–रखवाला, लिखनें वाला, घरवाला

(2) कर्म वाचक कृत प्रत्यय–कर्म का बोध करनों वाले कृत प्रत्यय कर्म वाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– औना–खिलौना
नी–ओढ़नी, मथनी, छलनी
ना–पढ़ना, लिखना, रटना

(3) करण वाचक कृत् प्रत्यय–साधन का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय करण वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– अन–पालन, सोहन, झाड़न
नी–चटनी, कतरनी, सूँघनी
ऊ–झाड़ू, चालू
ई–खाँसी, धाँसी, फाँसी

(4) भाव वाचक कृत प्रत्यय–क्रिया के भाव का बोध करानें वाले प्रत्यय भाववाचक कृत् प्रत्यय कहलाते है।

जैसे– आप–मिलाप, विलाप
आवट–सजावट, मिलावट, लिखावट
आव–बनाव, खिंचाव, तनाव
आई–लिखाई, खिंचाई, चढ़ाई

(5) क्रियावाचक कृत प्रत्यय–क्रिया शब्दों का बोध करानें वाले कृत् प्रत्यय क्रिया वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– या–आया, बोया, खाया
कर–गाकर, देखकर, सुनकर
आ–सूखा, भूखा, भूला
ता–खाता, पीता, लिखता

तद्धित प्रत्ययः– क्रिया को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनानें वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– मानव+ता=मानवता
जादू+गर=जादूगर
बाल+पन=बालपन
लिख+आई=लिखाई

(1) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय–कर्ता का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

जैसे– आर–सुनार, लुहार, कुम्हार
गर–बाजीगर, जादूगर
ई–माली, तेली
वाला–गाड़ीवाला, टोपीवाला, इमलीवाला

(2) भाववाचक तद्धित प्रत्यय–भाव का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– आहट–कड़वाहट
ता–सुन्दरता, मानवता, दुर्बलता
आपा–मोटापा, बुढ़ापा, बहनापा
ई–गर्मी, सर्दी, गरीबी

(3) सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय–सम्बन्ध का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय सम्बंध वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– इक–शारीरिक, सामाजिक, मानसिक
आलु–कृपालु, श्रद्धालु, ईर्ष्यालु
ईला–रंगीला, चमकीला, भड़कीला
तर–कठिनतर, समानतर, उच्चतर

(4) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय–गुण का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

जैसे– वान–गुणवान, धनवान, बलवान
ईय–भारतीय, राष्ट्रीय, नाटकीय
आ–सूखा, रूखा, भूखा

शेखावाटी मिशन - 100
Scanned with OKEN Scanner

(5) **स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय**–स्थान का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

जैसे– वाला–शहरवाला, गाँववाला, कस्बेवाला
इया–उदयपुरिया, जयपुरिया, मुंबइया
ई–रूसी, चीनी, राजस्थानी।

(6) **ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय**–लघुता का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– इया–लुटिया
ई–प्याली, नाली,बाली
ड़ी–चमड़ी, पकड़ी
ओला–खटोला, संपोला, मंझोला

(7) स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय–स्त्रीलिंग का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– आइन – पंडिताइन, ठकुराइन
इन– मालिन, कुम्हारिन, जोगिन
नी–मोरनी, शेरनी, नन्दनी
आनी–सेठानी, पटरानी, जेठानी

अन्य प्रत्यय व प्रत्यय युक्त शब्द

ज्ञ – सर्वज्ञ, मर्मज्ञ, अल्पज्ञ, बहुज्ञ, तत्वज्ञ
जा – अर्कजा, शैलजा, गिरिजा
चर– थलचर, नभचर, वनेचर, खेचर, गोचहर, जलचर, उभयचर
कार – स्वर्णकार,चर्मकार, साहित्यकार, कुंभकार, पत्रकार, चित्रकार, रचनाकार
कर – दिनकर, भास्कर, रूचिकार, शुभंकर, भंयकर, सुधाकर, दिवाकर
त्र – सर्वत्र, एकत्र, अन्यत्र
द – जलद, सुखद, दुःखद, नीरद, अम्बुद, पयोद
ज – जलज, अम्बुज, नीरज, अब्ज, वारिज, सरोज, आत्मज, मनोज
धि – जलधि, नीरधि, पयोधि, अम्बुधि, वारिधि
दायी – सुखदायी, कष्टदायी, प्रेरणादायी, दुःखदायी, उत्तरदायी, आनन्ददायी
धर – चक्रधर, गिरिधर, महीधर, मुरलीधर, विद्याधर, गंगाधर मेरू (मेर) – अजमेर, जैसलमेर, बाड़मेर
ल – शीतल, पीतल, मंजुल, उर्मिल
हर – मनोहर, विहनहर , विषहर, दुःखहर, कष्टहर
नेर – बीकानेर, जोबनेर, आभानेर, साँगानेर
पुर – उदयपुर, जयपुर, भरतपुर, जोधपुर
आस्पद –प्रेरणास्पद, हास्यास्पद, संदेहास्पद, विवादास्पद
ऐल – गुस्सैल, बिगड़ैल, रखैल

उर्दू के प्रत्यय

गर – कारीगर, बाजीगर, जादूगर, सौदागर
गी – सादगी, दीवानगी, ताजगी, वानगी
ची – अफीमची, नकलची, तबलची, तोपची, बावरची
दार – जमीदार, वफादार, मालदार, थानेदार, दुकानदार, हवलदार, किरायेदार
गार – रोजगार, यादगार, मददगार, गुनहगार
खोर – घूसखोर, रिश्वतखोर, हरामखोर, चुगलखोर
बाज – चालबाज, दगावाज, नशेबाज, धोखेबाज
नामा– बाबरनामा, हुमायूँनामा, जहाँगीरनामा, सुलहनामा, इकरारनामा
मन्द – जरूरतमन्द, अहसानमन्द, अक्लमन्द
इन्दा – बाशिन्दा, परिन्दा, शर्मिन्दा
गाह – आरामगाह, ईदगाह, ख्वाबगाह, दरगाह
गीर – आलमगीर, राहगीर, जहाँगीर
आना – नजराना, जुर्माना, हर्जाना, दोस्ताना, सालाना
कार – जानकार, सलाहकार
इयत – इंसानियत, खैरियत, हैवानियत
ईन – शौकीन, हसीन, रंगीन, संगीन
दान – पीकदान, खानदान, फूलदान, कूड़ादान
बन्द – कमरबंद, नजरबंद, हथियारबंद, बाजूबंद
साज – जिल्दसाज, घड़ीसाज, जालसाज

अभ्यास प्रश्न

1. 'रसिया' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है–
(मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)
(1) एरा (2) इया
(3) आर (4) ई (2)

2. वे शब्दांश जो किसी शब्द के...................... में लगकर नये अर्थ का बोध करवाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते है।

शेखावाटी मिशन – 100

Scanned with OKEN Scanner

समास

समास शब्द की व्युत्पति एवं अर्थः–

समास शब्द सम्+आस दो शब्दों के योग से बना है। जिसमें सम् का अर्थ होता है समान/बराबर/पास–पास तथा आस का अर्थ होता है बैठना अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का पास–पास आकर बैठ जाना ही समास कहलाता है।

सामान्यतः दो या दो से अधिक पदों के मेल को समास कहा जाता है।

परिभाषा–समसनं समासः– अर्थात् संक्षिप्तीकरण करनें की प्रक्रिया को ही समास कहा जाता है।

जैसे–रेल पर चलनें वाली गाड़ी–रेलगाड़ी

वह जिसका उदर लम्बा है–लम्बोदर

समास के 6 भेद होते हैः–

1. अव्ययी भाव समास 2. तत्पुरूष समास
3. कर्मधारय 4. द्विगु
5. द्वन्द्व 6. बहुव्रीहि

1. अव्ययी भाव समास

1. इस समास का प्रथम पद प्रधान होता है।
2. इस समास का प्रथम पद कोई उपसर्ग/अव्यय शब्द होता है।
3. इस समास से बना समस्त पद भी एक अव्यय शब्द माना जाता है।
4. पुनरावृति वाले शब्द अर्थात् एक ही शब्द के दोहराव वाले शब्दों में भी अव्ययीभाव समास माना जाता है।
5. इस समास के पदों का विग्रह कार्य उपसर्ग व अव्यय के अर्थ के अनुसार किया जाता है।

जैसे– आजीवन–जीवन रहनें तक

आकण्ठ–कण्ठ तक

निडर –डर से रहित/डर के बिना

निर्विवाद–विवाद से रहित/बिना विवाद के

निर्विरोध–विरोध से रहित/बिना विरोध के

यथाक्रम –क्रम के अनुसार

यथावसर –अवसर के अनुसार

यथागति–गति के अनुसार

यथास्थिति–स्थिति के अनुसार

समक्ष–अक्षि के सामने

परोक्ष–अक्षि से परे

सेवार्थ–सेवा के लिए

ज्ञानार्थ–ज्ञान के लिए

लाभार्थ–लाभ के लिए

अनुदिन–दिन पर दिन

दिन भर–पूरे दिन

भरपेट–पेट भरकर

तत्पुरुष समासः–

जिस समास में सामासिक पदों के बीच से कर्म कारक से अधिकरण कारक तक का लोप हो जाता है तथा द्वितीय पद प्रधान होता है उसे तत्पुरूष समास कहते है।

कारक के आधार पर इसके 6 भेद होते है।

कर्मकारक तत्पुरुष समास

जैसे– चिड़ीमार–चिड़ी को मारनें वाला जेब कतरा–जेब को कतरनें वाला

स्वर्ग प्राप्त–स्वर्ग को प्राप्त

विरोध जनक–विरोध को जन्म देने वाला

करण तत्परुष समास

हस्तलिखित–हस्त के द्वारा लिखित

तुलसीकृत–तुलसी के द्वारा कृत

रेखांकित–रेखा के द्वारा अंकित

आँखों देखी–आँखों से देखा हुआ।

कष्ट साध्य–कष्ट से साध्य

सम्प्रदान तत्पुरुष समास

देवालय–देव के लिए आलय

यज्ञशाला–यज्ञ के लिए शाला

हवनसामग्री–हवन के लिए सामग्री

काक बलि–काक के लिए बलि

रंगमंच–रंग के लिए मंच

अनपादान तत्पुरुष समास

रोगमुक्त–रोग से मुक्त

पथभ्रष्ट–पथ से भ्रष्ट

पदच्युत–पद से च्युत

जन्मान्ध–जन्म से अन्धा

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

भाग्यहीन–भाग्य से हीन

सम्बन्ध तत्पुरुष

मातृभाषा–मातृ की भाषा

राष्ट्रपति–राष्ट्र का पति

कन्यादान–कन्या का दान

पशुबलि–पशु की बलि

अधिकरण तत्पुरुष

कविराज–कवियों में राजा

नरोत्तम–नरों में उत्तम

युद्धरत–युद्ध में रत

गृह प्रवेश–गृह में प्रवेश

आत्म निर्भर–आत्म पर निर्भर

कर्मधारय तत्पुरुष समासः–

जब किसी समासिक पद का प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य हो तो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इस समास के समस्त पद में प्रयुक्त पद विशेषण विशेष्य व उपमान उपमेय होते है।

⇒ इस समास में भी द्वितीय पद प्रधान होता है।

⇒ इस समास में समानाधिकरण तत्पुरुष के नाम से भी जाना जाता है।

निम्नलिखित चार स्थितियाँ होने पर कर्मधारय समास माना जाता है।

1. विशेषण–विशेष्य युक्त पद होनें पर
2. उपमान उपमेय युक्त पद होनें पर
3. रुपक आलंकारिक पद होने पर
4. सु तथा कु उपसर्ग से बना शब्द होनें पर

विग्रह कार्यः– विशेषण विशेष्य होनें पर विशेषण तथा विशेष्य के बीच में है जो शब्द लिख देना चाहिए।

जैसे– नीलोत्पल–नीला है जो उत्पल

नीलगगन–नीला है जो गगन

रक्ताम्बुज–रक्त है जो अम्बुज

कालीमिर्च–काली है जो मिर्च

सत्परामर्श–सत् है जो परामर्श

महासागर–महान है जो सागर

महापुरुष–महान है जो पुरुष

परमात्मा–परम है जो आत्मा

परमेश्वर–परम है जो ईश्वर

अल्पायु–अल्प है जो आयु

दीर्घायु–दीर्घ है जो आयु

अधमरा–आधा है जो मरा

हीनभावना–हीन है जो भावना

अल्पसंख्यक–अल्प है जो संख्या में

बहुसंख्यक–बहु है जो संख्या में

चरमसीमा–चरम है जो सीमा

उड़नखटोला–उड़ता है जो खटोला

उड़नतश्तरी–उड़ती है जो तश्तरी

मन्दाग्नि–मन्द है जो अग्नि

पूर्णांक–पूर्ण है जो अंक

वीरबाला–वीर है जो बाला

उपमान उपमेय वाले शब्दों का विग्रह उपमान के समान है, जो उपमेय।

कमलनयन–कमल के समान है जो नयन

पुण्डरीकाक्ष–पुण्डरीक के समान है जो अक्षि

चन्द्रवदन–चन्द्र के समान है जो वदन

तुषारधवल–तुषार के समान है जो धवल

कुसुम कोमल–कुसुम के समान कोमल

सु उपसर्ग होने पर–सुष्ठु है जो विशेष्य

कु/कद् होने पर–कुस्सित है जो विशेष्य

सुपुत्र–सुष्ठु है जो पुत्र

सुमार्ग –सुष्ठु है जो मार्ग

कुमति–कुत्सित है जो गति

कुकर्म–कुत्सित है जो कर्म

कदाचार–कुस्सित है जो आचरण

द्विगु तत्पुरुष समासः–

जब किसी सामाजिक पद में प्रथम पद कोई संख्यावाची शब्द हो तथा सम्पूर्ण पद किसी समूह का बोध कराता हो तो वहाँ द्विगु समास माना जाता है।

ऐसे पदों का विग्रह करते समय दोनों शब्दों को लिखकर अन्त में समूह/समाहार शब्द लिख देना चाहिए।

द्विगु–दो गायों का समूह

तिराहा–तीन राहों का समाहार

पंचामृत–पाँच अमृतों का समूह

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

षड्ऋतु–षट् ऋतुओं का समूह
सप्ताह –सात अह्नों का समूह
अठन्नी–आठ आनों का समूह
नवरत्न–नव(नौ) रत्नों का समूह
दशाब्दी–दश शब्दों का समूह
शताब्दी–शत शब्दों का समूह
दशक–दश का समूह
शतक–शत का समूह

द्वन्दव समासः–

जब किसी सामाजिक पद में प्रयुक्त दोनों पद या सभी पद अपनी–अपनी प्रधानता को प्रकट करते है तो उसे द्वन्द्व सामस कहते हैं।

जैसे– माता–पिता– माता और पिता
पति–पत्नी– पति और पत्नी
दादा–दादी–दादा और दादी
कृष्णार्जुन–कृष्ण और अर्जुन
शिवकेशव–शिव और केशव
सुरासुर–सुर और असुर
लाभ हानि–लाभ या हानि
जीवनमरण –जीवन या मरण
घट बढ़–घट या बढ़
नफा नुकसान–नफा या नुकसान

बहुव्रीहि समास

जब किसी समास में प्रयुक्त दोनों पद अपना अर्थ खो देते है तथा उनके स्थान पर कोई अन्य अर्थ प्रकट होता है तो उसे बहुव्रीहि समास कहा जाता है।
इस समास में अन्य अर्थ प्रकट होने के कारण इसमें अन्य पद की प्रधानता मानी जाती है।
इस समास में विग्रह करनें पर प्रायः जो जिसका–जिसकी –जिसके शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

लम्बोदर–लम्बा है उदर जिसका वह (गणेश)
चन्द्रमौली–चन्द्र है मौली पर जिसके वह (शिव)
दशानन–दश है आनन जिसके वह (रावण)
सुग्रीव–सु(सुन्दर) है ग्रीवा जिसकी (वानरराज)
चक्षुश्रवा–चक्षु से श्रवण करता है जो वह (साँप)
चक्रपाणि–चक्र है पाणि में जिसके वह (विष्णु)
वीणापाणि–वीणा है पाणि में जिसके वह (सरस्वती)
चतुर्भुज–चार है भुजाएँ जिसकी वह (विष्णु)
चतुर्मुख–चार है मुख जिसके वह(ब्रह्मा)

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

मुहावरे

मुहावरा :– मुहावरा शब्द अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है संक्षिप्त कथन अर्थात् ऐसा कथन जो अपना वास्तविक अर्थ प्रकट न करके किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है तो वह मुहावरा कहलाता है।

विशेषः– मुहावरा पूर्ण वाक्य न होकर वाक्यांश होता है।

इसका अर्थ स्पष्ट करने के लिए इसका वाक्य में प्रयोग करना आवश्यक होता है। मुहावरे में लिंग, वचन,काल आदि के अनुसार कुछ परिर्वतन आ सकता है मुहावरा भाषा की लाक्षणिकता दर्शाता है।

सामान्यतः मुहावरे के अन्त में क्रिया सूचक शब्द (ना युक्त शब्द) प्रयुक्त होते है।

मुहावरे **अर्थ**

- **श्री गणेश करना** – कार्य आरम्भ करना
- **अंक भरना** – स्नेहपूर्वक मिलना
- **अक्ल का घोड़े दौड़ाना** –केवल कल्पनाएँ करते रहना
- **अगर–मगर करना** – बहाने बनाना
- **अक्ल के पीछे लट्ठ लिए धूमना** –मूर्खतापूर्ण कार्य करनें वाला
- **अपनी खिचड़ी अलग पकाना**– अपनी बात सबसे अलग रखना
- **अपना राग अलापना** –अपनी ही बातें करते रहना
- **अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना** –अपना नुकसान स्वयं करना
- **अपना सा मुंह देखते रह जाना** – निराश होना
- **आँख रखना** – निगरानी रखना
- **आँख की किरकिरी** – अवांछित/व्यवधान डालने वाला व्यक्ति
- **आँख लगाना** – चौकस रहना / निगाह रखना
- **आँखें चार होना**– आमना–सामना होना
- **आँखों में चर्बी छा जाना**–घमण्ड होना
- **आँखों में खून उतरना**– अत्यधिक क्रोध होना
- **आँख बन्द होना** – मर जाना
- **आँखों में सरसों फूलना** – अत्यधिक प्रसन्न होना
- **आँख बदलना**– विरोध में होना
- **आँख लड़ जाना** – प्रेम हो जाना
- **अंग अंग ढीला होना**–बहुत थक जाना
- **अंगारों पर पैर रखना/चलना** –संकट पूर्ण कार्य करवाना
- **अंधे के हाथ बेटर लगना**– अयोग्य व्यक्ति को अच्छी वस्तु मिलना स्वस्थ रहना
- **अन्न लगना** –स्वस्थ रहना
- **अन्न जल उठना** – एक स्थान पर रहने का संबंध टूटना/ मर जाना
- **ओस का मोती होना**–शीघ्र नष्ट हो जाने वाला/क्षणभंगुर
- **बालू की भींत उठाना** – व्यर्थ प्रयास करना
- **आग लगने पर कुआँ खोदना** – विपत्ति आने पर उपाय खोजना
- **आटे दाल का भाव मालुम होना** – जीवन के कठिन यथार्थ का बोध होना
- **आँच न आने देना**– कोई कष्ट उत्पन्न न होने देना
- **आकाश के तारे तोड़ना**–असंभव कार्य करना
- **आपे से बाहर होना** – किसी के व्यवहार से उतेजित होकर होश खोना
- **आसमान टूट पड़ना** – बहुत बड़ी आपत्ति आना
- **आसन डोलना** – विचलित होना
- **आँसू पीना** – चुपचाप दुःख सहन करना
- **गूलर का फूल होना**–अदृश्य/ कभी दिखाई न देना
- **उड़ती चिड़िया पहचानना** – थोड़े से संकेत में सब कुछ समझ जाना
- **उलटी गंगा बहना** – परम्परा के विपरीत कार्य करना
- **एक आँख से देखना** – सभी को बराबर समझना
- **एक ही थैली के चट्टे** – बट्टे–सभी समान रूप से बुरे यक्ति
- **उलटे छूरे से मूँडना**–ठगना
- **ऐंठ कर चलना**–गर्व करना
- **आठ–आठ आँसू रोना**– बुरी तरह रोना/पछताना

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

- ✧ **आसमान सिर पर उठाना**–अत्यधिक शोर करना
- ✧ **आस्तीन का साँप होना**–कपटी मित्र
- ✧ **आँधी के आम होना** – सस्ती वस्तु
- ✧ **कतर ब्योंत करना**–काँट छाँट करना
- ✧ **कोढ़ में खाज होना**– एक दुःख के साथ दूसरा दुःख होना
- ✧ **कान लगाना** – ध्यान देना
- ✧ **कान भरना** – चुगली करना
- ✧ **कान का कच्चा होना**– हर किसी के कहने पर भरोसा कर लेना
- ✧ **कान पर जूँ न रेगना**– परवाह न करना/
- ✧ **कान खड़े होना** – चौकन्ना होना / सचेष्ट होना
- ✧ **कच्चा चिट्ठा खोलना**– किसी की कमजोरी को विस्तार से बताना
- ✧ **कलेजा थामना** – भय या आशंका से स्तम्भित होना
- ✧ **कलेजा मुँह में आना** – घबरा जाना
- ✧ **कलम तोड़ना** – मर्मस्पर्शी रचना करना/सुन्दर लेख लिखना
- ✧ **कलेजे पर पत्थर रखना**– संकट के समय धैर्य रखना
- ✧ **कौड़ी के मोल** – अत्यन्त सस्ता
- ✧ **कान में तेल डालना**– किसी बात पर ध्यान न देना
- ✧ **कूप मण्डूक होना** –अल्पज्ञ होना / सिमित ज्ञान
- ✧ **कन्नी काटना** – आँख बचाकर चले जाना / बहाना बनाना
- ✧ **खिचड़ी पकाना** – गुप्त योजना बनाना
- ✧ **खून सूखना**–बहुत भयभीत हो जाना
- ✧ **खेत रहना**–युद्ध में मारे जाना
- ✧ **खून का घूँट पीना**–क्रोध को मन में दबा लेना
- ✧ **कागज की नाव होना** – क्षण भंगुर
- ✧ **गर्दन पर छूरी फेरना**–किसी को नष्ट करने का कार्य करना
- ✧ **गाँठ बाधना**–स्थायी रूप से याद रखना
- ✧ **गाँठ पड़ना**– देश का स्थायी हो जाना
- ✧ **गाल बजाना** –डींग हाँकना/ अपनी प्रशंसा करना
- ✧ **गड़े मुर्दे उखाड़ना** – बीती बाते करना / छेड़ना
- ✧ **गंगा नहाना** – दायित्व पूर्ण करना
- ✧ **गुदड़ी का लाल होना** – गरीब किन्तु गुणवान
- ✧ **घड़ो पानी पड़ना** –लज्जित होना
- ✧ **घाट – घाट का पानी पीना** – विभिन्न स्थानों पर घूमकर अनुभव प्राप्त करना
- ✧ **घोड़े बेचकर सोना**–निश्चित होना
- ✧ **घी के दीपक जलाना**– खुशियाँ मनाना
- ✧ **घास काटना** – गुणवता का ध्यान रखे बिना शीघ्रता से काम निपटाना
- ✧ **घुरे के दिन फिरना**–कमजोर आदमी के अच्छे दिन आना
- ✧ **चाँदी का जूता मारना** – रिश्वत देना
- ✧ **चींटी के पर निकलना** – मरने के दिन निकट आना
- ✧ **चेहरे की हवाइयाँ उड़ जाना** –घबरा जाना
- ✧ **चौथ का चाँद होना**–शुभ होना/किसी के लिए अत्यंत शुभ
- ✧ **छठी का दूध याद आना**– बड़े संकट में पड़ना
- ✧ **छाती पर साँप लौटना**– ईर्ष्या होना
- ✧ **छक्के छूटना** – हिम्मत हार जाना
- ✧ **छप्पर फाड़ कर देना**–अचानक बहुत कुछ प्राप्त होना
- ✧ **जूतियाँ चाटना** – चापलूसी करना
- ✧ **जिन्दा/जीती मक्खी निगलना**– जान बूझ कर बेईमानी करना
- ✧ **छठे चौमास आना** –कभी – कभी आना
- ✧ **छाती ठोकना** – कठिन कार्य हेतु प्रतिज्ञा करना
- ✧ **छींकते नाक कटना** – छोटी बात पर चिढ़ना
- ✧ **जान हथेली पर रखना** – मृत्यु की परवाह न करना
- ✧ **जहर उगलना** – अपमान जनक बात कहना
- ✧ **जमीन आसमान एक करना**– सभी उपाय करना
- ✧ **जिल्लत उठाना** – अपमानित होना
- ✧ **झंडा गाड़ना** – अधिकार करना
- ✧ **टेढ़ी खीर होना** – कठिन काम होना
- ✧ **थाह लेना** – किसी गुप्त बात का भेद जानना
- ✧ **थूक कर चाटना** – अपनी बात से बदल जाना
- ✧ **टांग अड़ाना** – बाधा डालना
- ✧ **टोपी उछालना** – अपमानित करना
- ✧ **टका सा जवाब देना**– साफ मना कर देना
- ✧ **ठीकरा फोड़ना**– दोष लगाना
- ✧ **ढ़िढोरा पीटना** – प्रचार करना

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

- **डेढ़ चावल की खीचड़ी पकाना** – सबसे अलग राय होना
- **डींग हाँकना** – व्यर्थ गप्पे लड़ाना
- **ठकुर सुहाती बाते करना** – चापलूसी करना
- **दर दर की ठोकरे खाना**– बहुत कष्ट उठाना
- **दाना पानी उठना**– आजीविका के अभाव में किसी स्थान से अलग होना
- **दो नावों पर पैर रखना**– दो पक्षों का सहारा लेना
- **दाहिना हाथ** –महत्वपूर्ण संबल
- **दिन फिरना**– अच्छा समय आना
- **तूती बोलना**– अत्यधिक प्रभाव होना
- **दाई से पेट छिपाना**– जानकार से बात छिपाना
- **दूध के दाँत न टूटना**– अनुभव हीन होना
- **दीया लेकर ढूंढना** – अच्छी तरक से खोजना
- **धरती पर पाँव न होना** – घमण्ड होना
- **निन्यानबे का फेर** – धन इकट्ठा करने की चिंता/ लोभ में पड़ना
- **नाक रगड़ना** – अपने स्वार्थ के लिए खुशामद करना
- **नाक का बाल होना** – अत्यधिक प्रिय होना
- **नस नस पहचानना** – किसी के व्यवहार को अच्छी तरह जानना
- **नजर करना**–भेंट करना / पेश करना
- **नहले पर दहला होना** – करारा जवाब देना
- **पापड़ बेलना** – बहुत कष्ट उठाना
- **पर हंडी ऊँची होना**– दूसरे की वस्तु बेहतर लगना
- **पेट में दाढ़ी होना** – बाल्यावस्था में समझदार होना
- **पैरों तले जमीन खिसकना**–आधार खो जाना
- **बल्लियाँ उछलना**– बहुत खुश होना
- **भिड़ का छता छेड़ना** –झगडालू व्यक्ति को छेड़ना
- **भीगी बिल्ली बनना**– मजबूरी में शान्त सहमा हुआ रहना
- **भैंस के आगे बीन बजाना** – मूर्ख के सामने बुद्धिमानी की बात करना
- **मुँह काला करना** – कलंकित / बदनाम करना
- **रोज कुआँ खोदना रोज पानी पीना** – रोज कमाकर जीवन निर्वाह करना
- **रंगा सियार होना**– धोखेबाजी /ढोंगी/उपर कुछ अंदर कुछ ओर होना / चालाक
- **लकीर का फकीर होना** – परम्परावादी होना
- **साँप सूँघना** – सहम जाना
- **सब्ज बाग दिखाना** – झूठे आश्वासन देना
- **साँच को आँच नहीं**– सच बोलने वाले को भय नहीं
- **सिक्का जमाना** – प्रभाव स्थापित करना
- **सूरज को दीपक दिखाना** – प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना
- **हथेली पर सरसों उगाना** – आवश्यक समय से पहले असंभव कार्य करना
- **हक्का बक्का रह जाना** – अचम्भे में पड़ना
- **हवा से बात करना**– बहुत तीव्र गति से चलना
- **हाथ का मैल होना** – तुच्छ /त्याज्य वस्तु
- **हाथ डालना** – किसी कार्य में दखल देना
- **हाथ धो बैठना** – किसी व्यक्ति /वस्तु को खो देना
- **बांछे खिल जाना** – आश्चर्य जनक हर्ष होना
- **लंगोटी में फाग खेलना** – सीमित साधनो में बड़ा काम करना
- **लोहा बजाना** – शस्त्रों से युद्ध करना
- **शैतान के कान कतरना** – बहुत चतुर होना
- **होठ चबाना** – क्रोध प्रकट होना
- **हाथ खीचना** – सहायता बंद कर देना/ साथ न देना
- **दमडी के तीन होना** – सस्ता होना
- **खाक छानना** – व्यर्थ कार्य करना/ मारा मारा फिरना
- **पासंग भी न होना** –तुलना में बहुत कम
- **नुक्ता चीनी करना** –दोष निकालना
- **बछिया का ताऊ होना** – महामूर्ख
- **थैली खोलना** – जी खोलकर खर्च करना
- **दो –दो हाथ करना**– अन्तिम निर्णय हेतु तैयार होना
- **ठन ठन गोपाल होना**– खाली होना / कुछ न होना
- **पानी पीकर जात पूछना** –काम निकलने के बाद सोचना
- **साँप को दूध पिलाना** – बुरे के साथ नेकी करना
- **नाक में दम करना** – बहुत परेशान करना

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

लोकोक्ति

- लोकोक्ति शब्द लोक+उक्ति के योग से बना है जिसका अर्थ होता है लोगों के द्वारा कही गयी बातें अर्थात् एक ऐसा कथन जो किसी सन्दर्भ विशेष में प्रयुक्त किया जाता है किन्तु आगे चलकर वही कथन किसी विशेष अर्थ को प्रकट करने लगता है तो उसे लोकोक्तिकहा जाता है लोकोक्ति अपने आप में एक पूणवाक्य होता है–

✧ **अध जल गगरी छलकत जाय**
→ अल्पज्ञ व्यक्ति ज्यादा इतराता है

✧ **अंधे की लकड़ी**
→ एकमात्र सहारा

✧ **आँख का अंधा नाम नयन सुख**
→ गुणों के विपरीत नाम

✧ **अंधे के आगे रोये अपने नयन खोये**
→ अपात्र व्यक्ति से मदद के लिए व्यर्थ प्रयास

✧ **अपना रख पराया चख**
→ अपना बचाकर दूसरों का माल हड़प जाना

✧ **अरहर की टट्टी गुजराती ताला**
→ सामान्य वस्तु की रक्षा में अधिक खर्च

✧ **अशर्फियों की लूट और कोयले पर मुहर**
→ कीमती वस्तुओं की परवाह न करके तुच्छ वस्तुओं की रक्षा करना

✧ **अंधा क्या चाहे दो आँखे**
→ इच्छित वस्तु की प्राप्ति होना

✧ **आगे नाथ ना पीछे पगहा**
→ पूर्णतः अनियन्त्रित

✧ **अटका बनिया देवे उधार**
→ मजबूर व्यक्ति अनचाहा कार्य भी करता है

✧ **आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास**
→ बड़े उदेश्य की शुरूआत कर छोटे कार्य में लग जाना

✧ **आठ वार नौ त्योहार**
→ मौजमस्ती से जीवन जीना

✧ **तीन कनौजिए तेरह चूल्हे**
→ व्यर्थ की नुक्ता चीनी

✧ **ऊँट किस करवट बैठता है**
→ परिणाम की अनिश्चितता

✧ **घड़ी में घर जले नौ घड़ी भद्रा**
→ समय बीतने पर सहायतामिलने पर कार्य का महत्व नहीं रहता

✧ **जिन खोजा तिन पाईया गहरे पानी पैठ**
→ कठिन परिश्रम से सफलता मिलती है

✧ **छछुंदर के सिर चमेली का तेल**
→ अनुपयुक्त वस्तुओं का साथ / बैमेल मिश्रण

✧ **साँप छछुंदर की गति / भाई गति साँप छछुंदर केरी**
→ दुविधा में पड़ना

✧ **एक तो करेला दूजा नीम चढ़ा**
→ एकाधिक दोष होनौ

✧ **ओछे की प्रीत बालू की भींत**
→ नीच व्यक्ति की मिश्रता क्षणिक होती है

✧ **कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमति ने कुनबा जोड़ा**
→ अलग–अलग स्वभाव वालों को एकत्र करना/ इधर–उधर की सामग्री जुटाकर किसी निकृष्ट वस्तु का निर्माण करना

✧ **खग जाने ही खग की भाषा**
→ मूर्ख ही मूर्ख व्यक्ति की बात समझना है

✧ **कौवों के कोसे ढ़ीर नहीं भरते**
→ बुरे आदमी के कहने पर अच्छे आदमी का अहित / बुरा नहीं होता

✧ **गंगा गये गंगादास जमुना गये जमुनादास**
→ अवसर वादी/सिद्धान्तहीन व्यक्ति

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

✧ **गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त**
→ स्वयं की अपेक्षा दुसरो का उसके लिए अधिक प्रयत्नशील होना

✧ **घर में नहीं दाने बुढ़िया चली भुनाने**
→ झूठा दिखावा करना

✧ **तन पर नहीं लता पान खाये अलवता**
→ झूठा दिखावा करना

✧ **नोखी नाइन बाँस का लहंगा**
→ झूठा दिखावा करना

✧ **चिराग तले अँधेरा**
→ दूसरो को उपदेश देना स्वयं अज्ञान में रहना

✧ **चील के घोसलें में माँस कहाँ**
→ भूखे के घर में भोजन मिलना असंभव है

✧ **चट मंगनी पट ब्याह**
→ तुरन्त कार्य सम्पादित होना

✧ **चाँद को भी ग्रहण लगता है**
→ भले आदमियो को भी कष्ट सहने पड़ते है

✧ **चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढे जाते**
→ अल्पसाधनों से बड़ा काम संभव नहीं होता

✧ **छोटा मुँह बड़ी बात**
→ सामर्थ्य से अधिक डींग हाँकना

✧ **जंगल में मोर नाचा किसने देखा**
→ गुणों का प्रदर्शन उपयुक्त स्थान पर ही होना चाहिए

✧ **टके का सौदा नौ टके विदाई**
→ साधारण वस्तु हेतु अधिक खर्च

✧ **दमड़ी की हाँडी भी ठोक बजाकर लेते है**
→ पैसों की छोटी चीज भी परखकर लेते है

✧ **जो गुड़ खाये सो कान छिदाये**
→ लाभ के लालच में कष्ट सहना

✧ **नक्कार खाने में तूती की आवाज**
→ अराजकता में सुनवाई न होना / बड़ों के बीच छोटों की न सुनना

✧ **पढ़े फारसी बेचे हुए तेल देखो ये विधना (कुदरत) का खेल**
→ शिक्षित होते हुए भी दुर्भाग्य से निम्न कार्य करना

✧ **यादें से फरजी भयो टेढ़ो टेढ़ो जाय**
→ छोटा आदमी बड़े पद पर पहुँच कर इतराने (घमण्ड करने) लग जाता है

✧ **बावन तोले पाव रत्ती**
→ बिल्कुल ठीक या सही – सही हिसाब

✧ **मन चंगा तो कठौती में गंगा**
→ मन पवित्र होने पर घर में ही तीर्थ होता है

✧ **कौआ चला हंस की चाल भूल गया अपनी भी चाल**
→ दूसरों के अनुकरण से अपने रीति–रिवाज भूल जाना

✧ **लिखित सुधाकर लिखिगा राहु**
→ अच्छी उपलब्धि वाले व्यक्ति को दुर्योग से बुरा परिणाम भुगतना पड़त है

✧ **घर आये नाग ना पूजे बाँबी पूजन जाय**
→ अवसर का लाभ न उठाकर उसकी खोज में जाना

✧ **जादू वही जो सिर चढ़कर बोले**
→ उपाय वही जो अच्छा/ कारगर हो

✧ **जैसी बहे बहार पीठ तब तैसी दीजै**
→ समयनुसार कार्य करना

✧ **तिल देखो तिल की धार देखों**
→ परिणाम की प्रतीक्षा करना

✧ **दैव दैव आलसी पुकारा**
→ आलसी व्यक्ति भाग्यवादी होता है।

✧ **नीम हकीम खतरे जान**
→ आधे ज्ञान वाला अनुभवहीन व्यक्ति अधिक खतरनाक होता है

✧ **मानो तो देव नहीं मानो तो पत्थर**
→ विश्वास फलदायी होता है

✧ **शक्करखोर को शक्कर मिल ही जाती है**
→ जरूरतमंद को उसकी वस्तु मिल ही जाती है

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

✧ **षठे षाठ्यम समाचरेत**

→ दुष्टों के साथ दुष्टता का व्यवहार करना चाहिए

✧ **मुफ्त का चन्दन घिस मेरे नन्दन**

→ मुफ्त में मिली वस्तु का दुरूपयोग

✧ **होनहार बिरवान के होते चिकने पात**

→ महान् व्यक्तियों के लक्षण बचपन में ही नजर आ जाते है।

✧ **तीन में न तेरह में मृदंग बजावे डेरे में**

→ किसी महत्व का न होना

✧ **हंसा थे सो उड़ि गये कागो भये दिवान**

→ अच्छे लोग नष्ट होना

✧ **कुतिया चोरन मिल गई पहरा किसका देय**

→ अपनो द्वारा ही धोखा देना

✧ **आदमी जानिए से सोना जानिए कसे**

→ व्यवहार से व्यक्ति का पत्ता चलता है।

शेखावाटी मिशन – 100

Scanned with OKEN Scanner

मॉडल प्रश्न - प्रत्र

माध्यमिक परीक्षा-2025

शेखावाटी मिशन-100

विषय - हिन्दी

कक्षा -10

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांकन अनिवार्यतः लिखे।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य है।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखे।
4. जिन प्रश्नों में आंतरिक खण्ड है, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखे।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्व लिखे।

खण्ड - अ

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए- [15]

(i) कर्म के आधार पर पर क्रिया कितने भेद माने जाते हैं।

(क) एक (ख) दो (ग) तीन (घ) चार ( )

(ii) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द कहलाते हैं।

(क) सर्वनाम (ख) कारक (ग) विशेषण (घ) क्रिया ( )

(iii) 'पण्डिताइन' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है-

(क) इन (ख) आइन (ग) आनी (घ) नी ( )

(iv) 'स्वागत' शब्द का सही सन्धि विच्छेद है-

(अ) सु+आगत (ब) स्व+आगत (स) स+वागत (द) सु+गत ( )

(v) 'भ्रमरगीत' की भाषा है-

(अ) अवधी (ब) संस्कृति (स) उर्दू (द) ब्रज ( )

(vi) फागुन मास में कौनसी ऋतु का आगमन होता है?

(अ) वसन्त (ब) वर्षा (स) ग्रीष्म (द) शरद ( )

(vii) जयशंकर प्रसाद की रचना कौनसी है-

(अ) आसूँ (ब) गीतिका (स) परिमल (द) नये पत्ते ( )

(viii) परशुराम ने शिव धनुष तोड़ने वाले को किसके समान अपना शत्रु माना है?

(अ) रावण (ब) कंस (स) सहस्त्रबाहु (द) यम ( )

(ix) हालदार साहब किस सोच का आदमी है?

(अ) सकारात्मक (ब) नकारात्मक (स) विकारात्मक (द) पुरातनवादी ( )

शेखावाटी मिशन - 100
Scanned with OKEN Scanner

(x) मनु भण्डारी का जन्म कहाँ हुआ था?

(अ) भानुपरा (म. प्र.) (ब) हरिपुरा (म.प्र.) (स) जोधपुर (राज.) (द) उत्तर प्रदेश ( )

(xi) यशपाल का जेल में किससे परिचय हुआ?

(अ) महात्मा गांधी (ब) नेहरू जी से (स) भगतसिंह एवं सुखदेव से (द) इन्दिरा गांधी से ( )

(xii) मानव संस्कृति है-

(अ) विभाज्य (ब) अविभाज्य (स) विनाशकारी (द) प्रलयंकारी ( )

(xiii) शिवपूजन सहाय को उनके पिताजी क्या कहकर पुकारते थे?

(अ) शंकरनाथ (ब) भोलानाथ (स) रामदास (द) कमलनाथ ( )

(xix) गैंगटाक (गंतोक) का अर्थ क्या है?

(अ) जलाशय (ब) चोटी (स) पहाड़ (द) पठार ( )

(xv) मैं विज्ञान का विद्यार्थी हूँ? विद्यार्थी शब्द का सन्धि-विच्छेद है-

(अ) विद्या + अर्थी (ब) विद्या + आर्थी (स) विध + आर्थी (द) कोई नहीं

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- [4]

(i) पर्वत, नदी, नगर, पक्षी फूल आदि उदाहरण.......... संज्ञा के है।

(ii) जो शब्दांश शब्द के आरम्भ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन उत्पन्न कर देते है वे........ कहलाते हैं।

(iii) जिस समास में पहला पद संख्यावचक होता है, वहाँ .... समास होता है।

(iv) घोड़ा तेज दौड़ता है, वाक्य में .... विशेषण है।

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए। [6]

देश प्रेम क्या है? प्रेम ही तो है। इस प्रेम का आलम्बन क्या है? सारा देश अर्थात् मनुष्य, पशु, पक्षी, नाले, वन-पर्वत सहित सारी भूमि। यह प्रेम-किस प्रकार का है? यह साहचर्य प्रेम है जिसके मध्य हम रहते हैं जिन्हें हम बराबर आँखों से देखते हैं, जिनकी बातें बराबर सुनते है जिनका और हमारा हर घड़ी का साथ रहता है, जिनके सानिध्य का हमें अभ्यास हो जाता है उनके प्रति लोभ या राग हो सकता है। देश-प्रेम यदि वास्तव में अन्तःकरण का कोई भाव है तो यही हो सकता है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है-

(क) देश-प्रेम (ख) प्रशु-प्रेम (ग) भक्ति-प्रेम (घ) वन-प्रेम ( )

(ii) देश-प्रेम शब्द में कौनसा समास है?

(क) बहुब्रिहि समास (ख) तत्पुरूष समास (ग) द्विगु समास (घ) अव्ययीभाव समास( )

(iii) देश प्रेम किस कोटि का माना जाता है-

(क) उच्च कोटि (ख) बैराग्य कोटि (ग) निम्न कोटि (घ) साह-चर्यगत कोटि( )

(iii) देश-प्रेम वास्तव में किस भाव का माना जाता है-

(क) अन्तः करण का भाव (ख) बहिः भाव

(ग) अनुचित भाव (घ) बाध्य भाव ( )

Scanned with OKEN Scanner

(iv) सानिध्य से क्या उत्पन्न होता है-

(क) ईर्ष्या (ख) क्रोध (ग) लालच (घ) लोभ व राग ( )

4. अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए। [6]

दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उत्तर रही है
वह संध्या-सुन्दरी परी सी
धीरे-धीरे-धीरे ।
तिमिरांचल में चंचलता, का नहीं कहीं आभास
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर
किन्तु जरा गम्भीर नहीं है उनके हास-विलास।
हँसता है तो केवल तारा एक
गुंथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से
हृदय राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।

(i) प्रस्तुत काव्यांश में किस समय का वर्णन है-

(क) सुबह (ख) दोपहर (ग) संध्या (घ) रात्रि ( )

(ii) संध्या-सुन्दरी किसके समान प्रतीत हो रही थी-

(क) नारी-सी (ख) परी-सी (ग) गुड़िया-सी (घ) कामिनी-सी ( )

(iii) 'हँसता है केवल तारा एक' तारा कहाँ हँसता है-

(क) साड़ी पर (ख) बालों पर (ग) हाथों पर (घ) माथे पर ( )

(iv) दिवसावसान का 'समय' पंक्ति के सन्दर्भ में 'अवसान' का अर्थ है-

(क) प्रारम्भ होना (ख) नष्ट होना (ग) शाम होना (घ) समाप्त होना ( )

(v) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक है-

(क) संध्या-सुन्दरी (ख) अस्तांचल (ग) कामिनी (घ) दिवसावसान ( )

(iv) संध्या-सुन्दरी कहाँ से उत्तर रही है-

(क) अस्तांचल से (ख) मेघमय आसमान से (ग) पर्वत घाटियों से (घ) गगन मण्डल से ( )

खण्ड-ब

निम्नलिखित लघुत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए। [14]

5. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की काशी को क्या देन है?

6. लेखक ने संस्कृति और असंस्कृति किसे कहा है?

7. हिरोशिमा पर कविता लिखते समय लेखक की क्या मन: स्थिति थी?

8. कौनसा सौन्दर्य लेखिका के लिये असह्य था? साना-साना हाथ जोड़ी...... पाठ के आधार पर सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

9. 'देखो, यह गागर रीति' गागर रीति से कवि का क्या अभिप्राय है?

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

10. 'संगतकार' कविता का मूल भाव लिखिए।

11. 'आँख का तारा' मुहावरे का अर्थ एवं वाक्य में प्रयोग लिखिए।

खण्ड-स

12. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पुछे गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए। [4]

बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्ती-जवानी-जिन्दगी सब कुछ होम कर देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिये बिकने के मौके ढूँढती है दुखी हो गए पंद्रह दिन बाद उसी कस्बे से फिर गुजरे। कस्बे में घुसने से पहले ख्याल आया कि कस्बे की दृश्य स्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिस्थापित होगी लेकिन सुभाष की आँखो पर चश्मा नहीं होगा।........... क्योंकि मास्टर बनाना भुल गया। .... और कैप्टन मर गया। सोचा, वहा रूकेंगे भी नहीं, पान भी नहीं खायेंगे, मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं।

(i) लेखक दु:खी क्यों हो गया?

(ii) लेखक आज वहाँ रूकना क्यों नहीं चाहता था?

(iii) हालदार साहब कितने दिनों बाद कस्बे से गुजरे?

(iv) सुभाष की मुर्ति की आँखों पर चश्मा क्यों नहीं था?

अथवा

उस समय तक हमारे परिवार में लड़की के विवाह के लिये अनिवार्य योग्यता थी उम्र में सोलह वर्ष शिक्षा में मैट्रिक। सन् 44 में सुशीला ने वह योग्यता प्राप्त कर ली और शादी करके कोलकाता चली गई। दोनों भाई भी आगे की पढ़ाई के लिये बाहर चले गये। इन लोगों की छत्र-छाया हटते ही पहली बार मुझे नये सिरे से अपने वजूद का अहसास हुआ। पिताजी का ध्यान पहली बार मुझ पर केन्द्रित हुआ। लड़कियों को जिस उम्र में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुघड़ गृहिणी और कुशल पाक-शास्त्री बनाने के नुस्खे सिखाये जाते थे पिताजी चाहते थे कि मैं रसोई घर से दूर ही रहूँ रसोई को वे भटियारखाना कहते थे। और उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था।

(i) लेखिका ने लड़की के विवाह की कौनसी अनिवार्य योग्यता बताई है?

(ii) सुशीला ने कौनसी योग्यता प्राप्त कर ली थी?

(iii) लेखिका को अपने वजूद का अहसास कब हुआ?

(iv) पिताजी रसोई घर को क्या कहते थे?

13. प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए। [4]

फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियो के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण धर्म है
रूपान्तर है सूरज की किरणों का

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

सिमटा हुआ संकोच है,

हवा की थिरकन का।

(i) प्रस्तुत पद्यांश में कवि किसके विषय में कह रहा है?

(ii) फसल किसके हाथों के स्पर्श की महिमा है?

(iii) 'रूपान्तर है सूरज की किरणों का' पंक्ति का आशय लिखिए।

(iv) फसल के किन आवश्यक तत्वों का कवि ने पद्यांश में वर्ण किया है?

अथवा

बादल गरजो।

घेर घेर घोर गगन, धारा घर ओ।

ललित ललित, काले घुघॅराले,

बाल कल्पना के से पाले,

विद्युत-छबि उर में , कवि नवजीन पाले

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो

बादल गरजो।

(i) प्रस्तुत कविता में बादल की तुलना किससे दी गई?

(ii) किसके ह्रदय में विद्युत छवि है?

(iii) कवि को नवजीन देने वाला क्यों बताया है?

(iv) कवि और बादल में क्या समानता बताई गई है?

14. लेखिका पड़ोस कल्चर विहीन समाज को संकुचित, असहाय एवं असुरक्षित क्यों मानती है? [3]

अथवा

बालगोबिन भगत के व्यक्तित्व एवं उनकी वेशभूषा को अपने शब्दों में लिखिए।

15. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, गोपियों के वाक्चातुर्य की विशेषतायें लिखिए। [3]

अथवा

आत्मकथ्य कविता में प्रसाद जी ने जिस मार्मिक अभिव्यक्ति के साथ जीवन के अभावपक्ष एवं यथार्थ का वर्णन किया है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

खण्ड-द

16. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के बहुआयामी कृतित्व एवं व्यक्तित्व के विषय में लिखिए। [3]

अथवा

लेखिका मन्नु भण्डारी के व्यतित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner

17. **'नौबतखाने में इबादत' पाठ में किसके जीवन चरित्र पर प्रकाश डाल गया है। सविस्तार बताइये। [4]**

अथवा

'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है, वह अपने बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है? लिखिए।

18. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए। [6]**

1. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता-

(i) प्रस्तावना **(ii)** नैतिक शिक्षा का स्वरूप

(iii) नैतिक शिक्षा की उपयोगिता **(iv)** नैतिक शिक्षा की आवश्यकता **(v)** उपसंहार

2. राजस्थान में गहराता जल संकट-

(i) प्रस्तावना **(ii)** जल संकट की स्थिति

(iii) जल संकट के कारण **(iv)** जल संकट निवारण हेतु उपाय **(v)** उपसंहार

3. साइबर अपराध के बढ़ते कदम -

(i) प्रस्तावना **(ii)** साइबर अपराध क्या है?

(iii) साइबर अपराध रोकने हेतु सरकार द्वारा किये गये प्रयास **(iv)** साइबर अपराद रोकने हेतु सुझाव

(v) उपसंहार

4. पर्यावरण प्रदूषण : कारण और निवारण

(i) प्रस्तावना **(ii)** पर्यावरण प्रदूषण की समस्या

(iii) प्रर्यावरण प्रदूषण के दुष्प्रभाव (कुप्रभाव) **(iv)** पर्यावरण प्रदुषूण निवारण के उपाय **(v)** उपसंहार

19. **स्वयं को अशोक कुमार मानते हुये अपने प्रियमित्र को जन्म-दिवस के उपलक्ष में बधाई पत्र लिखिए। [4]**

अथवा

स्वयं को रा.उ.मा.वि. सीकर का छात्र मानते हुये अपने प्रधानाचार्य को शैक्षिक भ्रमण का आयोजन करने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

20. **रेडक्रास सोसाइटी की ओर से रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है इस सम्बन्ध में सोसायटी की ओर से एक विज्ञापन तैयार कीजिए। [4]**

अथवा

स्वास्थ्य विभाग की ओर से डेंगु रोग के नियन्त्रण हेतु चेतावनी संबंधी एक विज्ञापन 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन का प्रारूप तैयार कीजिए।

शेखावाटी मिशन - 100

Scanned with OKEN Scanner